

# सूर और रत्नाकर की ब्रजभाषा के क्रिया-पदों का तुलनात्मक अध्ययन

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की पी-एच० डी० की उपाधि के लिए  
प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध



निर्देशक—

डा० गेंदालाल शर्मा

एम० ए० (हिन्दी-संस्कृत)

पी-एच० डी०, डी० लिट०

हिन्दी-विभाग

अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़

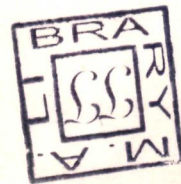
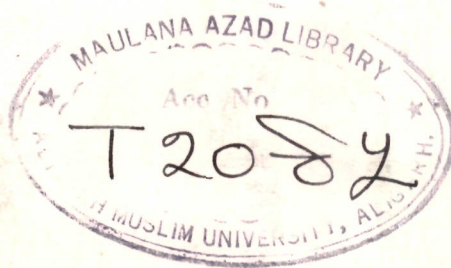
अनुसंधित्सु—

रघुनाथप्रसाद

सन् १९७८



T2095



1  
CHECKED-2002

CHECKED 1996-97

## वाचस्पत्य-निवेदन एवं आभार

सूर की भाषा इतनी परिभाषित एवं परिष्कृत है कि ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रज भाषा की परम्परा अति प्राचीन है।

यह निर्विवाद सत्य है कि सूर की ब्रजभाषा ब्रजी की भाषागत संपूर्ण विशेषताओं का समाहार किए हुए है। जहाँ एक ओर उसमें ब्रजी की मधुर, कोमल, सरस पदावली का विविध राग-रागिनियों में संगीत-सुषमा के साथ सम्मिश्रण है, वहीं दूसरी ओर ब्रजभाषा के ध्वनि-सौष्ठव, सरलीकरण की प्रवृत्ति तथा सन्निकरण आदि सभी भाषिक विशेषताएँ विद्यमान हैं। शौरसेनी अपभ्रंश की परंपरा में विकसित होने वाली ब्रजभाषा निरन्तर विकसित होती जा रही है। भक्ति काल में जहाँ तक मधुसूदन कवि सूर ने इनके भाषिक और काव्य-गुणों की साकारता प्रदान की है, वहाँ ऐतिहासिक के संदर्भ काव्य-क्षेत्र पर इसका ही प्रभाव फैला रहा है। आधुनिक युग के जन्मदाता भारतेन्दु जी ने अपने काव्य नवाटकों में इस भाषा की सरसता व मधुरता को सर्वत्र व्यक्त किया है। इस परम्परा को आगे विकसित करने वालों में कविवर जगन्नाथदास 'रत्नाकर' जी ने अपने 'उल्लास शतक' एवं 'गंगावतरण' जैसी मनोहर, सरस ब्रजभाषा कृतियों द्वारा आज हिन्दी (नागरी) के साम्राज्य युग में भी ब्रज के गौरव और महत्त्व की पताका बनाये रखी है।

विकास की दृष्टि से सूर और रत्नाकर ब्रजभाषा के दो पड़ाव हैं। अतः इनकी ब्रजभाषा का तुलनात्मक अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक विषय है जिससे ब्रजभाषा के स्वयं विकास को स्पष्ट किया जा सकता है। १९०६ के अध्ययन करते समय अपनी मातृभाषा ब्रजी के प्रति मेरा स्वाभाविक

लाव ~~अपनी~~ निगुणित हो गया और अपनी रुचि एवं प्रवृत्ति के अनुरूप मैं दोनों कवियों की ब्रजभाषा का तुलनात्मक अध्ययन करने की अपनी जिज्ञासा अपने गुरुजनों पूज्य डा० जम्बाप्रसाद 'सुमन' एवं डा० गैदालाल शर्मा के समक्ष जब व्यक्त की तो उन्होंने विषय की गुरुता और विस्तार को ध्यान में रखते हुए मेरी शक्ति के परीक्षण हेतु विषय को संक्षिप्त कर शोध के लिए 'सूर और रत्नाकर की ब्रजभाषा के क्रिया-पदों का तुलनात्मक अध्ययन' विषय प्रदान किया। मैं उपर्युक्त साधनों द्वारा अपने निर्वहण कर्तव्यों पर गुरु-प्रद गुरुतर बोध को देने का उन्होंने के आशीर्वाद से तत्क्षर कर दिया। व्याकरण जो विषय पर शोध करने की दुरुहता तो सर्वविदित है, फिर भी मैं श्रम तीन वर्षों से अनवरत परिश्रम करके यह शोध-प्रबंध प्रस्तुत कर सका हूँ। मेरी दृष्टि का जो दृष्ट तीव्रता है, वह सब गुरु-ज्ञान-अपन-शताका का ही प्रभाव है। मुझे अपने कार्य में जिन विद्वानों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संपर्क सहायता मिली है, उनका मैं हृदय से आभारी हूँ। उनमें डा० जम्बाप्रसाद 'सुमन', डा० कैलाश चन्द्र अग्रवाल, डा० मातावदत जायसवाल, डा० टी. कराराम शर्मा, डा० शिवकुमार शाण्डिल्य आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त समस्त सहयोगियों को धन्यवाद देता हूँ जो मुझे समय-समय पर प्रोत्साहन देते रहे हैं। एक बार पुनः मैं अपने निदेशक डा० गैदालाल शर्मा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिन्होंने मुझे इस रंगिस्तानी यात्रा में पूर्ण संवल देकर पार लगाया है। डा० जम्बाप्रसाद 'सुमन' के प्रति पुनः कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिनकी मैं समय-समय पर कष्ट देकर समस्याओं का समाधान करता रहा हूँ।

मैं सेमिनार सहायक श्री रामदत्त गहलोड़ी एवं हिन्दी भाग के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री शिवदत्त शर्मा का आभार प्रकट करना नहीं भूलूँगा क्योंकि उन्होंने समय-समय पर आवश्यक पुस्तकें उपलब्ध कर मेरे कार्य में सहयोग दिया है। मेरी धर्मपत्नी श्रीमती कल्पना गौतम का भी आजीवन अणी रहना जिन्होंने



इस प्रयास को सफल बनाने में मेरी बड़ी ही सहायता की है। अंत में, मैं श्री बन्धुमोहन द्वारा दिनेश हिन्दी टाइपराइटिंग, चौराहा मंदार दरवाजा, अलीगढ़ का भी धन्यवाद व्यक्त हूँ जिन्होंने भाषा विज्ञान जैसे कठिन विषय का टेक्स्ट तैयार करवाया है। यह उनकी परिश्रम की सफलता है कि यह शोध-प्रबन्ध समय पर प्रस्तुत हो सका है।

गंगा कलहरा

संवत् २०३५ वि०

- रघुनाथ प्रसाद

रघुनाथ जीसाह

संकेत

-	प्रत्यय चिह्न
†	घन चिह्न
1/2	धातु बदलने का चिह्न
म०धा०	मूल धातु
प्रे० धा०	प्रेरणार्थक धातु
सा०ल०	साहित्य लहरी
सारा०	सूर सारावली
सू०	सूर सागर
सूर	सूरदास
उद्ध०	उद्धवशतक
कल०	कल काशी
गंगा०	गंगावतरण
गं० ल०	गंगा लहरी
प्र०	प्रकीर्ण पद्यावली
र०	रत्नाष्टक
रत्ना०	जान्नाथदास रत्नाकर
वी०	वीराष्टक
शुं०	शृंगार लहरी
श्री०	श्री विष्णु लहरी
हरि०	हरिश्चन्द्र
हिं०	हिंदोल

विषय-सूची

	पृष्ठांक
आत्म-निवेदन एवं साभार	१
संकेत	४
प्रभिरा	७
अध्याय-१	१४
क्रिया-पदों का सामान्य विवेक	
अध्याय-२	३२
सुर और रत्नाकर के वृद्धत क्रिया-पदों की तुलना	
अध्याय-३	४०
सुर और रत्नाकर के वर्तमानकालिक क्रिया-पदों की तुलना	
अध्याय-४	५०
सुर और रत्नाकर के भूतकालिक क्रिया-पदों की तुलना	
अध्याय-५	१४०
सुर और रत्नाकर के भविष्यकालिक क्रिया-पदों की तुलना	
अध्याय-६	१६७
वाच्य के दृष्टि से सुर और रत्नाकर के क्रिया-पदों की तुलना	
अध्याय-७	१७५
अर्थ के दृष्टि से सुर और रत्नाकर के क्रिया-पदों की तुलना	

अध्याय-८	सूर और रत्नावर के संयुक्त क्रिया-पदों की तुलना	२३३
अध्याय-९	सूर और रत्नावर के सहायक क्रिया-पदों की तुलना	२३८
उपसंहार		२४८
सहायक गंधों की सूची		२४८

### भूमिका

---

जिसी भी कवि अथवा लेखक की भाषा को प्रभावित करने वाले तत्त्वों में क्रिया-पदों का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जो कवि अथवा लेखक जितने अधिक क्रिया-पदों को अपनी भाषा में प्रयोग करता है, उसकी भाषा उतनी ही परिष्कृत तथा परिमार्जित होती है। क्रिया-पदों की अधिकता से ही भाषा ठोस रूप को प्राप्त करती है। सामान्यतया संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा अव्यय का भी भाषा में महत्त्वपूर्ण स्थान है किन्तु क्रिया-पद अलग से अपना स्थान रखते हैं। कोई भी वाक्य या पंक्ति क्रिया-पद को बिना प्रयोग किए छू नहीं सकेगी।

ब्रजभाषा पड़ी जोड़ियों में जाती है। इसकी प्रवृत्ति जोकारांत है। माधुर्य की दृष्टि से ब्रजभाषा की समानता कोई भी छूरी जाती नहीं कर सकी है। ब्रजभाषा के भिन्नसेही भी परिचित है। माधुर्य गुण वाली ब्रजभाषा में क्रिया-पद भी मधुर हो जाते हैं। जाना, पाना, करना ब्रजभाषा में क्रमशः जानो, जानो तथा करो ही जाते हैं जो बोलने में भी दूर सरस लगते हैं। जाना का जावनी भी ब्रजभाषा में पया जाता है। इसी प्रकार पाना का पावनी, जीना का जीवनी तथा पीना का पीवनी ब्रजभाषा में ही रूप हैं।

सूर भक्तिकाल तथा रत्नाकर जाधुनिद काव्य के ब्रजभाषा गणितों में शीर्षस्थ कवि हैं। दोनों कवियों ने क्रिया-पदों के प्रयोगों को स्वातंत्र्य रूप से करके ब्रजभाषा की गरिमा तथा भिन्नसेही को जमाये रखा है। ब्रजभाषा के क्रिया-पदों पर अभी तक कोई कार्य सामने नहीं आया है। अतः इस जमाव की पूर्ति करने के लिए यह अध्ययन मेरा एक प्रयास है।



विषय की सुविधा की दृष्टि से नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है-

प्रथम अध्याय में क्रिया-पदों का सामान्य विवेचन किया गया है जिसमें सूर परिभाषाएं देकर ब्रजभाषा के ही उदाहरण देने का प्रयास किया गया है।

द्वितीय अध्याय में सूर और रत्नाकर के वृद्धन्त क्रिया-पदों की तुलना की गयी है।

तृतीय अध्याय में वर्तमानकालिक क्रिया-पदों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में भूतकालिक क्रिया-पदों की तुलना की गयी है।

पंचम अध्याय में भविष्यत्कालिक क्रियापदों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

षष्ठम अध्याय में वाच्य की दृष्टि से सूर और रत्नाकर के क्रिया-पदों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

सप्तम अध्याय में कर्म की दृष्टि से दोनों कवियों के क्रिया-पदों की तुलना की गयी है।

अष्टम अध्याय में संयुक्त क्रिया-पदों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

नवम अध्याय में सहायक क्रिया-पदों की तुलना की गयी है।

अक्सर में संपूर्ण शोध-प्रबन्ध का सारंश संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इसके अतिरिक्त विशिष्ट क्रिया-पद तथा क्रिया-पदों का महत्त्व संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

### विषय की परंपरा में कृति-लोच-वाच-

सूर और रत्नावर के राज्य पर जग-जग तो बहुत चढ़ जाया था हुआ है। रत्नावर ही भी तुलनात्मक अध्ययन का भाव है। सूर और रत्नावर के विषय की पक्षा का तुलनात्मक अध्ययन अभी तक नहीं किया गया है। दोनों कृतियों पर जब भी जग-जग लोच-वाच से रखा है। दोनों का क्षेत्र बहुत बड़ा होता है कारण कि दोनों की कृति का ध्यान तुलनात्मक अध्ययन की ओर नहीं गया।

सूर ने जिस कवि ने 'सूरसागर' के अनेक भाषाकारों का ध्यान पर प्रसारित कराया है। इनके अतिरिक्त बहुत से कवि कवि ने सूरसागर के 'सूर' के ही विषय में बहुत से भाषाकारों का ध्यान पर उनसे प्राप्त किया है। पक्षों में किती ने जीतनी पर प्रकाश डाला है। ने किती ने वाच्य-वक्ता पर प्रकाश डाला है। भाषा की ओर किती विचार का ध्यान नहीं गया है। किती का गौरव-बहुत ध्यान भाषा की ओर गया है तो उस विचार ने न के बराबर ही भाषा पर प्रकाश डाला है। फलतः भाषा पर भी विचार बहुत कम किया है तो क्रिया-पदों पर जग-जग विचार करने का प्रयत्न ही नहीं उठता। इन कवियों के अतिरिक्त और बहुत-सा कवि सूर साहित्य पर हुआ है तो उस विचार में जाता है।

सूरदास पर किती गये जैद ग्रन्थों में 'सूर' की भाषा के अनेक विचारों में जीतनी, किती ने वाच्य-वक्ता पर विचार किया गया है। भाषा पर बहुत कम। 'सूर' के भाषा की स्वभाव ग्रंथ उ जो प्रत्येक दृष्टि-गोण से सूर का भाषा सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत करने में सक्षम है। इस ग्रंथ में भाषा के प्रत्येक पक्ष पर विस्तृत पर से विचार किया गया है। इस ग्रंथ में भाषा 80 पृष्ठों में देवत क्रिया-पदों का ही अध्ययन दिया गया है। इन पृष्ठों में क्रिया-पदों का भाव ही जोड़ें में बका ही किता अध्ययन न किया गया हो।

इसके अतिरिक्त रत्नाकर के काव्य पर भी स्वतंत्र रूप से कुछ अध्ययन हुआ है। सूर की तुलना में रत्नाकर से संबंधित अध्ययन बहुत ही कम है। फिर भी जो कुछ अध्ययन हुआ है, वह भी अपने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

<u>ग्रंथ</u>	<u>लेखक का नाम</u>	<u>प्रकाशन-वर्ष</u>
१-रत्नाकर का काव्य	श्री लल्लू नाराय	सन् १९४३
२-कविवर रत्नाकर	श्री कृष्णाशंकर शुक्ल	संवत् २००७
३-रत्नाकर और उनका काव्य	उषा जायसवाल	सन् १९५६
४-रत्नाकर : उनकी प्रतिभा और कला	डा० विश्वम्भरनाथ भट्ट	सन् १९५७
५-उद्धव-शतक	श्री रामाशंकर शुक्ल 'रसातल'	सन् १९६०
६-रत्नाकर की साहित्य-साधना	श्री ज्ञानबहादुर वर पाठक	सन् १९६५
७-रत्नाकर और उद्धव-शतक	डा० ललित शुक्ल	सन् १९७१
८-रत्नाकर की कवयः काव्यभाषा का शैली-साहित्यिक अध्ययन	डा० प्रेमचल्लभ शर्मा	शोधप्रबन्ध १९७४ अप्रकाशित

उक्त सभी ग्रंथों में किसी में रत्नाकर के काव्य-ग्रंथों का परिचय, जीवन, काव्य-का किसी में एक ही कृति पर विचार किया गया है। भाषा को सभी ग्रंथों में हर विषय के साथ ही लिया गया है। स्वतंत्र रूप से भाषा पर बहुत ही कम विचार किया गया है। भाषा पक्ष पर कम ध्यान देने के कारण क्रिया-पदों पर किसी-किसी ग्रंथ में दो-चार पंक्ति ही लिखी गयी है। डा० प्रेमचल्लभ शर्मा ने अपने शोध-प्रबन्ध में क्रिया-पदों पर कुछ अच्छी तरह से विचार किया है। उनका उद्देश्य ठीक मात्र क्रियापदों का अध्ययन नहीं है। फिर भी विद्वान लेखक ने अन्य विद्वानों की तुलना में कहीं अधिक कार्य किया है।

### प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का योगदान -

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध सूर और रत्नाकर के तुलनात्मक अध्ययन के लिए प्रारम्भिक प्रयास है। इसके अध्ययन से भविष्य में शोधार्थियों को सूर और रत्नाकर की ब्रजभाषा के अन्य गीतों पर विचार करने तथा उनकी तुलना करने की प्रेरणा मिल सकेगी। ब्रजभाषा के क्रिया-पदों के अध्ययन के लिए शोध-कार्यों को हथर-उधर भटकना नहीं पड़ेगा। उन्हें क्रिया-पदों से संबंधित पर्याप्त सामग्री प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उपलब्ध हो सकेगी।

### शोध-पद्धति -

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में भारतीय शोध-पद्धति को अपनाया गया है। सूर और रत्नाकर के मूल ग्रन्थों में से ही उदाहरण प्रस्तुत किए गये हैं। वे ग्रंथ हैं, जो प्रामाणिक माने गये हैं। इनमें सारावली तथा साहित्य-तहरी से बहुत कम उदाहरण दिये गये हैं क्योंकि नागरी प्रचारिणी सभा काशी से प्रकाशित उक्त दोनों ग्रंथ उपलब्ध नहीं हो सके हैं। मूल ग्रंथ का प्रकार है-

१- सूरसागर (पहला खण्ड), नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संवत् २०२१ वि०  
चतुर्थ संस्करण

२- सूरसागर (द्वितीय खण्ड), नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संवत् २०१८ वि०,  
तृतीय संस्करण

३- सूर सारावली, प्रभुयाल भीतल, जगवाल प्रेस मथुरा, संवत् २०१४ वि०,

प्रथम संस्करण।

४- साहित्य जेहती, प्रो० पद्मल भीतल, साहित्य जे-पद्म मथुरा, संवत् २०१८, ५१५ संस्करण

५- रत्नाकर (पहला भाग), नागरी प्रचारिणी सभा काशी, संवत् २००७ वि०,  
चतुर्थ संस्करण

६- रत्नाकर (दूसरा भाग) नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, संवत् २००३,  
द्वितीय संस्करण।

### संक्षेप-संकेत -

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में जो संक्षेप दिये गये हैं, वे इस प्रकार हैं-

सूरसंगर के संक्षेपों में पहला अंक स्वयं, दूसरा अंक प संख्या तथा तीसरा अंक पंक्ति की संख्या की ओर संकेत करता है। पारावली तथा साहित्य लहरी में पहला अंक, प संख्या तथा दूसरा अंक पंक्ति की संख्या बतलाता है।

रत्नाकर के ग्रंथों के संक्षेपों में "हरिरचन्द्र", "गंगावतरण" में पहला अंक संग, दूसरा अंक छंद संख्या तथा तीसरा अंक पंक्ति की संख्या का बोध है। "रत्नाकर" तथा "वीराष्टक" में १६ तथा १४ अष्टक हैं। उन अष्टकों में १-११ तम छंद है। अतः इनमें पहला अंक अष्टक दूसरा अंक छंद की संख्या तथा तीसरा अंक पंक्ति की संख्या बतलाता है। "प्रकीर्ण पारावली" में पहला अंक पारावली की संख्या, दूसरा अंक छंद की संख्या तथा तीसरा अंक पंक्ति की संख्या की ओर संकेत करता है। इनके अतिरिक्त "छिड़ोला", "बलकाशी", "उद्ध-शतक", "शृंगार लहरी", "गंगालहरी" तथा "विष्णु लहरी" में पहला अंक छंद की संख्या तथा दूसरा अंक पंक्ति की संख्या बतलाता है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में द्रुमात्मक पद्धति का पूर्ण रूप से निर्वाह करने का प्रयत्न किया गया है। एक पंक्ति सूर काव्य की है तो एक पंक्ति रत्नाकर के काव्य की प्रस्तुत की गयी है। उदाहरणों में क्रिया-पदों को रैतांकित कर दिया गया है। फिर पहले सूर के क्रिया-पद का विश्लेषण किया गया है, तत्पश्चात् रत्नाकर के क्रिया-पद का विश्लेषण है। विश्लेषण में धातु तथा प्रत्यय को अलग-अलग स्पष्ट किया गया है। धातु का विकास जहाँ तक संभव हो सके है हिन्दी से ही दिखाया गया है। सड़ी सीढ़ी हिन्दी तथा ब्रजभाषा में धातु एक समान ही मिलते हैं। दोनों में प्रत्ययों का अंतर पाया जाता है।



मेरे कार्य का मुख्यांकन तो विज्ञान ही कर सकेंगे, किन्तु हमारे अध्ययन के प्रणामार्थ वे विज्ञान पाठकों को कुछ भी सहायता मिल सकें तो मैं अपने अध्ययन एवं परिश्रम को सफल समझूंगा। हमें जो कठिनाई हैं, वे मेरी अपनी हैं, फिर भी तब भी आये सुकावों का मैं सदैव स्वागत करूंगा।

- अनुमोदित

अध्याय - प्रथम

क्रिया-पत्तों का सामान्य विवेक

## क्रियापदों का सामान्य विवेचन

### क्रिया-पद -

“ जिस विकारी शब्द के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं, उसे क्रिया कहते हैं<sup>१</sup>। ” जैसे-

जिनकी मुख देखत दुख उपजत ।	सू० १।५३।३
दैत बुधि बंत उत्तारत ।	गीता० १।१८।३
जूठनि की कहु संक न मानी ।	सू० १।१३।४
परम अभिराम बनाई ।	हिं ३१।३
मुक्त भयो सिसुपाल ।	सू० १०।१००८।५
देस में रह्यो न ताके ।	हरि० १।५।१

उपर्युक्त उदाहरणों में उपजत, उत्तारत, मानी, बनाई, भयो, रह्यो आदि शब्द क्रिया-पद हैं। ये शब्द किसी के विषय में कुछ न कुछ विधान करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि जिन पदों में किसी काम का करना या होना पाया जाता है, उन पदों को क्रिया-पद कहते हैं ।

ब्रजभाषा में सभी क्रिया-पद सड़ी बोली तरह ही होते हैं। हिन्दी का विकास संस्कृत से हुआ है तथा हिन्दी की सभी उपभाषाओं का विकास हिन्दी में हुआ है। अतः क्रिया-पद भी सड़ी बोली से ही ब्रजभाषा में विकसित

---

१- हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुप्त, काशी सं० २०२९, पृ० ८४

होकर या बदलकर उसी रूप में या विकृत रूप में मिलते हैं। लड़ी बोली में घातु के साथ 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है। उसी तरह ब्रजभाषा में 'नो' या 'बो' जोड़कर क्रिया का सामान्य रूप बनता है। जैसे- जानो, जानो, करनो, छसनो, सहनो, सोखनो, जाहबो, चलिनो, हंसिनो, बसिनो आदि।

इनके अतिरिक्त 'नो' तथा 'बो' के विकृत रूपों का प्रयोग करके भी क्रिया का सामान्य रूप बनता है। 'नो' तथा 'बो' में लिंग, काल तथा वचन के अनुसार विकार होता है तो भी सामान्य रूप ही बनता है। उनका प्रयोग क्रिया की तरह न होकर संज्ञा की तरह होता है<sup>१</sup>।

### घातु -

“ जिस मूल शब्द के विकार से क्रिया बनती है उसे घातु कहते हैं। ”

“ विभिन्न क्रिया-पदों के मूल को घातु कहते हैं<sup>२</sup>। ”

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जितने भी क्रिया-पद हैं, वे किसी किसी घातु से बनते हैं। जिस प्रकार लोहे की तपाकर या पीटकर अन्य वस्तुएं बनाई जाती हैं, तथा लोहा हर वस्तु में पाया जाता है, उसी प्रकार घातु में विकार होने से कई अनेकानेक क्रिया-पद बनते हैं तथा घातु उनमें सभी क्रिया-पदों में पायी जाती है। क्रिया-पद प्रकृति तथा प्रत्यय के योग से बनता है। वह प्रकृति ही घातु कहलाती है। जैसे-

करनो

घा० कर + -नो

चलनो

घा० चल + -नो

१- अध्याय २ में 'क्रियार्थक संज्ञा' की अपर्याप्त विवेचन है।

२- हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरु, काशी संवत्-२०२९, पृ० ८४

३- हिन्दी शब्दानुशासन, पं० किशोरीदास बाजपेयी, काशी सं० २०१४, पृ० ३८२

करति	धा० कर + -ति
चलति	धा० चल + -ति
कर्यौ	धा० कर ∪ कर् + -यौ
चल्यौ	धा० चल ∪ चल् + -यौ
करेगी	धा० कर ∪ कर् + -एगी
चलेगी	धा० चल ∪ चल् + -एगी
करहिं	धा० कर + -हिं
चलहिं	धा० चल + -हिं

उपरोक्त उदाहरणों में दो धातुओं में विकार दिखाया गया है। एक धातु 'कर' है तथा दूसरी धातु 'चल' है। इन दोनों धातुओं में 'नो', 'ति', 'यौ', 'एगी', 'हिं' आदि प्रत्यय जोड़कर क्रिया-पदों के विभिन्न रूप बनाये हैं। मूल धातु 'कर' तथा 'चल' प्रत्येक क्रिया-पद में विद्यमान है।

### धातुओं के प्रकार -

धातु दो प्रकार के होते हैं।

#### १- मूल धातु -

जो धातु दूसरे धातुओं से नहीं बनते तथा स्वयं ही एक धातु होते हैं।

जैसे-

रचिवाँ	सू० १।५९।१
गहिवाँ	उद्ध० १।२
वचिवाँ	सू० १।५९।२
रहिवाँ	उद्ध० १।४
तचिवाँ	सू० १।५९।४
तहिवाँ	उद्ध० १।८



इस प्रकार ये धातु किसी धातु की सहायता से नहीं बनते । ये प्रायः एकाक्षर होते हैं ।

## २- यौगिक धातु -

“ जो धातु किसी दूसरे शब्द से बनाए जाते हैं, वे यौगिक धातु कहलाते हैं<sup>१</sup> । ”

यौगिक धातु तीन प्रकार के होते हैं- (१) प्रेरणार्थक धातु (२) नाम धातु (३) संयुक्त धातु ।

## १-प्रेरणार्थक धातु -

“ मूलधातु के जिस विकृत रूप से क्रिया के व्यापार में कर्ता पर किसी की प्रेरणा सम्पत्ति जाती है, उसे प्रेरणार्थक धातु कहते हैं<sup>२</sup> । ” जैसे-

कहाऊँ	( सू० १।२७०।२ )
सुलाऊँ	( वी० ४।१।६ )
मू०धा०	कह प्रे० धा० कहा + -ऊँ ( सूर )
मू० धा०	सुल प्रे० धा० सुला + -ऊँ ( रत्नाकर )
फ्राटाए	(सू० २।३६।७)
सुनाए	(गंगा० ६।३०।४)
मू०धा०	फ्राट प्रे० धा० फ्राटा + -ए (सूर)
मू०धा०	सुन , , सुना + -ए (रत्ना०)
छपायी	(सू० १०।२५।१।३)
बजायी	(गंगा० ६।३०।४)
मू०धा०	छप प्रे०धा० छपा + -यी (सूर)
मू०धा०	बज , , बजा + -यी (रत्ना०)

१- हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुप्त, काशी, सं० २०२९, पृ० ८८

२-

-वही-

पृ० ८८

कहावत	(सू० १।२२०।५)
उसावत	(गंगा० ७।२४।४)
मू०धा० कह प्रे०धा० कहाव + -त	(सू०)
मू०धा० उस , , उसाव + -त	(रत्नाकर)
जावति	(सू० १०।७।४)
खचावति	(गंगा० १०।२।४)
मू०धा० जा प्रे० धा० जाव + -ति	(सू०)
मू०धा० खच , , खचाव + -ति	(रत्ना०)

## २- नाम धातु -

“संज्ञा का विशेषण का प्रयोग क्व क्रिया की तरह होता है तो उसे नामधातु कहते हैं।” जैसे-

अनुमानत	(सू० १०।१९७३।६)
आराधत	(गंगा० ११।१४।४)
धा० अनुमान + -त	(सू०)
धा० आराध + -त	(रत्ना०)
अनुगत	(सू० १०।१९०५।६)
फलकति	(गंगा० ४।१७।४)
धा० अनुग + -त	(सू०)
धा० फलक + -त ति	(रत्नाकर)
नृत्यत	(सू० १०।१०५६।१)
खंडति	(गंगा० ७।१६।१)

घा० नृत्य + -त	(सू)
घा० लंड + -ति	(रत्नाकर)
दुड़ावति	(सू० १०।२७४७।१)
मल्लकति	(हरि० ४।२।३)
घा० <del>लुण्</del> दुड़ाव + -ति	(सू)
घा० मल्लक + -ति	(रत्ना०)
नृत्यति	(सू० १०।१०५९।१)
कलोलति	(गंगा० ४।१३।१)
घा० नृत्य + -ति	(सू)
घा० कलोल + -ति	(रत्ना०)

इस प्रकार हम देखते हैं कि संज्ञा या विशेषण में विभिन्न प्रत्यय जोड़कर क्रिया-पद बनाये जाते हैं। अतः वे प्रयोग नाम धातु के प्रयोग होते हैं।

कुछ क्रियाएं या कार्य होने से ध्वनियां निकलती हैं। उन्हीं के आधार पर कुछ धातु मान लिए गये हैं, उन्हें अनुकरण या ध्वन्यात्मक धातु कहते हैं। जैसे-

बदम <u>करारत</u> काग ।	(सू० १०।११२६।४)
चरबी सौं <u>चटचटाति</u> ।	(हरि० ४।२।४)
घा० <u>करार</u> + -त	(सू)
घा० <u>चटचटा</u> + -ति	(रत्नाकर)
दरदरात	(सू० १०।९३१।३)
हरहरात	(हरि० ४।५।१)
घा० दरदरा + -त	(सू)
घा० हरहरा + -त	(रत्नाकर)

चुसुहानी	(सू० १०।२०३९।१)
चिचोरत	(हरि० ४।३।३)
धा० चुसुहा + -नी	(सूर)
धा० चिचोर + -त	(रत्ना०)

### ३- संयुक्त धातु-

दो या दो से अधिक धातुओं के प्रयोग से जो क्रिया-पद बनते हैं, वे संयुक्त क्रिया-पद कहलाते हैं। संयुक्त क्रिया-पदों की धातुएं संयुक्त धातु कहलाती हैं। जैसे-

करि सकनो  
सोह जानो  
देखि लेनो  
बाह गयो  
चल्यो गयो  
करत रह्यो  
मिलि जाह्यो

उक्त उदाहरणों में दो धातुओं का प्रयोग एक साथ किया गया है। इनमें करि, सोह, देखि, बाह, चल्यो, करत, मिलि आदि मुख्य धातुओं से बने रूप हैं तथा सकनो, जानो, लेनो, गयो, रह्यो, जाह्यो आदि सहायक धातुओं से बने रूप हैं।

क्रिया-पद मूलतः छः कारणों से बनते हैं-

### १- वाच्य -

“ वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं जिससे जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता के विषय में विधान किया गया है या कर्म के विषय में

व्यवहार केवल भाव के विषय में<sup>१</sup>। ”

” जब किसी क्रिया का वाचक कोई शब्द बोला जायगा तो अवश्य ही उसका कुछ रूप होगा । उसके इसी रूप को वाच्य कहते हैं। ”

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं-

(अ) कर्तृवाच्य -

इसमें क्रिया का लिंग, वचन, पुरुष कर्ता के अनुसार होता है।

जैसे-

राम गयी ।

सीता गयी ।

छोरा नाचे ।

छोरी नाचीं ।

छोरा जातु है ।

छोरी जाति है ।

छोरा जात हैं ।

छोरी जाति हैं ।

छोरा जाइगी ।

छोरी जाइगी ।

छोरा जाइँगी ।

छोरी जाइँगी ।

१- हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुप्त, काशी संवत् २०२९, पृ० १७४

२- हिन्दी शब्दानुशासन, पं० किशोरीदास बाजपेयी, काशी , सं० २०१४, पृ० ४०९



उक्त उदाहरणों में क्रिया-पदों का परिवर्तन कर्ता के अनुसार हुआ है। अतः कर्तृवाच्य के ये प्रयोग हैं।

#### (ख) कर्मवाच्य -

कर्मवाच्य में क्रिया-पद का लिंग, वचन, पुरुष कर्म के अनुसार होता है। जैसे-

छोरा में जामु खायी ।  
छोरा में जाम खाये ।  
छोरी में जामु खायी ।  
छोरी में जाम खाये ।

उक्त वाक्यों में क्रिया-पद में "जाम" कर्म के अनुसार परिवर्तन हुआ है। कर्ता "छोरा" या "छोरी" के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। अतः ये क्रिया-पद कर्म वाच्य हैं ।

#### (ग) भाववाच्य -

जब क्रिया-पद का लिंग, वचन, पुरुष कर्ता या कर्म के अनुसार न होकर स्वतंत्र रूप से होता है तो ऐसे प्रयोग भाववाच्य कहलाते हैं। जैसे-

छोरा में छोरी कुं मारयी ।  
छोरा में छोरीन कुं मारयी ।  
छोरन में छोरी कुं मारयी ।  
छोरन में छोरीन कुं मारयी ।

इसी प्रकार कर्ता स्त्रीलिंग होने पर भी क्रिया-पद "मारयी" ही रहता है। अतः "मारयी" क्रिया-पद का प्रयोग भाव वाच्य है ।

## २- पुनः -

पुनः तीन प्रकार के होते हैं-

- (१) उत्तम पुनः : मैं, हों, हम
- (२) मध्यम पुनः : तु, तुम
- (३) वन्य पुनः : यह, वह, जि, गि, जिय, बुया,  
बा, ये, वे, जे, वै, ग्वे आदि

लिङ्गः

## ३- लिङ्ग -

“संज्ञा के जिस रूप से वस्तु की जाति का बोध होता है, उसे लिङ्ग कहते हैं।”

“लिङ्ग का मूल अर्थ है- ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे किसी चीज की जाति की पहचान हो सके।”

लिङ्ग दो प्रकार के होते हैं-

१- पुल्लिङ्ग २- स्त्रीलिङ्ग

संस्कृत में तीन लिङ्ग होते हैं। तीसरा नपुंसक लिङ्ग होता है। इस वर्ग में वे पदार्थ मानते हैं जो जीवधारियों से इतर होते हैं। जाज मानव जाति में भी नपुंसकलिङ्ग पाया जाता है। व्याकरण में दो ही लिङ्ग होते हैं। पुल्लिङ्ग में नर जाति तथा स्त्रीलिङ्ग में मादा जाति जाती है।

१- हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुरू, काशी, सं० २०२९, पृ० १२८

२- मानक हिन्दी व्याकरण, रामचंद्र वर्मा, वाराणसी, सं० २०१८, पृ० ९१

#### ४- वचन -

“ संज्ञाओं के जिस रूप में उनकी संख्या का बोध होता है, उसे व्याकरण में वचन कहते हैं। ”

“ संज्ञा (बीर दूसरे विकारी शब्दों) के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते हैं। ”

अतः संज्ञा का वचन रूप जिससे एकत्व या अनेकत्व का ज्ञान होता है, वचन कहलाता है। वचन दो प्रकार के होते हैं- एकत्व प्रकट करने वाला एकवचन तथा अनेकत्व प्रकट करने वाला बहुवचन कहलाता है।

#### ५- काल -

वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत् काल आदि तीन काल होते हैं। ये काल क्रिया-पद की स्थिति का ज्ञान कराते हैं।

#### ६- अर्थ-

क्रिया-पदों के रूप परिवर्तन में अर्थ बहुत ही महत्त्वपूर्ण कारण है। प्रत्येक क्रिया-पद किसी न किसी अर्थ से अवश्य ही संबंधित होगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उक्त छः कारण क्रिया-पदों को प्रभावित करते हैं। कोई भी क्रिया-पद किसी न किसी वाच्य, पुरुष, लिंग, वचन, काल तथा अर्थ से अवश्य संबंधित रहता है।

१- मानक हिन्दी व्याकरण, रामचन्द्र वर्मा, वाराणसी, संवत् २०१८, पृ० १०२

२- हिन्दी व्याकरण, कामताप्रसाद गुड, काशी संवत् २०२९, पृ० १४०

### क्रिया-पदों के प्रकार- (कर्म के आधार पर)

#### १- सकर्मक-

“ जिस धातु से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता से निवृत्तकर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है, उसे सकर्मक धातु कहते हैं। ” जैसे-

चोरनी-	मेरी माँ को दधि चोर ।	(सू० १०।३२१।१)
देखनी-	जलजात एक देख्यो जात ।	(उद्धव० २।१)
करनी-	बलि जारि न कीजै ।	(सू० १०।१८३।१)
नसनी-	निज नाम नसेही।	(गंगा० ५।२२।४)
राखनी-	याकों, राखत ज्यारनि धारि ।	(सू० १०।१२५८।८)
घरनी-	छाप्पा पाय म्हा घरत ।	(उद्धव० ३।५)

सकर्मक क्रिया-पदों के साथ “ क्या ” प्रश्नवाचक शब्द जोड़कर प्रश्न करने पर उत्तर जाता है। वही उत्तर कर्म होता है ।

#### २- अकर्मक -

“ जिस धातु से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता पर ही पड़े, उसे अकर्मक धातु कहते हैं। ” जैसे-

लागनी-	हीं लागी गृह काज ।	(सू० १०।१८२।२)
लागनी-	यों गुनक गुविन्द लागी ।	(उद्धव० ४७।३)
चलनी-	चली लाल कलु करी ।	(सू० १०।२४१।१)
उठनी-	उठी मर्छे बहु देर ।	(हरि० ४।१०।४)

१- हिन्दी व्याकरण, कामता प्रसाद गुप्त, काशी, सं० २०२९, पृ० ८६

२- -वही-

पृ० १४०

सोनो- सोवें तब जब बाहि सुवावें । (सू० ५।३।१३)

सोनो - हमें सोवत लखात हो । (उद्ध० ५।१।२)

अकर्मक क्रिया-पदों में "क्या" लगाने पर उतर नहीं जाता है।

(समापन के आधार )-

### १- समापिका क्रिया -

"क्रिया में वाच्य, काल, अर्थ, पुरुष, लिंग और वचन के कारण विकार होता है। जिस क्रिया में ये विकार पाये जाते हैं, और जिसके द्वारा विधान किया जा सकता है, उसे समापिका क्रिया कहते हैं।" जैसे-

करनो- तुम कहा न किया । (सू० १।२६।१)

करनो- प्रनाम पुनि सादर की-ह्यो । (हरि० ४।९२।१)

गानो- सूर सुजस गायी । (सू० १।२३।१०)

पानो- तुम अति श्रेष्ठ ब्रह्म-पद पायो । (हरि० ४।१०१।१)

ढरनो- जा-पर दीनानाथ ढी । (सू० १।३४।१)

राजनो- प्रभाव संकर कौ राजै । (क्ल० २।३)

उक्त उदाहरणों में "किया", "की-ह्यो", "गायी", "पायो", "ढी", "राजै" आदि क्रिया-पद बात तथा वाक्य दोनों का समापन करते हैं। अतः ये समापिका क्रिया-पद हैं।

### २- असमापिका क्रिया-

वे धातुज शब्द जिनका प्रयोग विशेषणवत् किया जाता है। अतः उनमें विकार वाच्य, काल, अर्थ, लिंग, वचन तथा पुरुष के अनुसार नहीं होता है, जिससे वाक्य या बात समाप्त नहीं होता है, उन्हें असमापिका क्रिया-पद कहते हैं। जैसे-

करनो-	कपट करि मारन बहि ।	(सू० १।३।७)
करनो-	करि तप उग्र सहस्र बष ।	(गंगा० १।११।४)
विचारनो-	मनसि बचसि विचारि देखी ।	(सू० १०।१०२२।२)
पहुंचनो-	पहुंचि कासिका में।	(हरि० ३।१।१)
सराहनो-	बारंवार सराहि सुर प्रभु ।	(सू० १।२४।४)
ललकनो-	जापर ललकि लुभाइ ।	(हि० १।३)

उक्त उदाहरणों में "करि", "करि", "विचारि", "पहुंचि", "सराहि", "ललकि" आदि क्रिया-पदों का प्रयोग होने पर न वाक्य ही समाप्त होता है तथा न बात । इन पर लिंग, वचन, काल आदि का प्रभाव भी नहीं पड़ता । अतः ये अस्वात्मिका क्रिया-पद हैं ।

( रूप के आधार पर- )

#### १-मुख्य क्रिया-

-----

जो क्रिया वाक्य का संबल या आधार होती, वह मुख्य क्रिया कहलाती है। जैसे-

सोहनो-	सोहति हैं नीकी ।	(सू० १०।२१६५।१)
वसनो-	सान सौं बसति है ।	(शृ० १९।२)
जानो-	मरुता ते ये जाई हैं।	(सू० १०।२१६३।१)
जानो-	विना चादर जाई हैं ।	(हरि० ४।८३।२)

#### २-सहायक क्रिया-

-----

संयुक्त क्रिया-पदों में जो क्रिया-पद पूरक होता है या मुख्य क्रिया का सहायक होता है, वही सहायक क्रिया होती है। उपर्युक्त उदाहरणों में "हैं" तथा "हैं" सहायक क्रिया-पद हैं ।

(अक्षर के आधार पर) -

### १- एकाकी क्रिया-

एकाकी क्रिया को एकदारी क्रिया भी कहते हैं जो क्रिया एक ही शब्द से बनी होती है, वह एक ही एकाकी क्रिया कहलाती है। जैसे-

बूझना -	बूझने घरी बाकी ।	(सू० १०।२९३८।१)
व्यायवी-	सिसिर न व्यापे जिन्हें।	(उद्धव० २५।१)
जावनो-	अंत काल में कोउ न जावत नरे ।	(सू० १।८५।४)
पावनो-	पुन्य सौं पावत प्रानी ।	(गंगा० १।२।४)
छानो-	कंस वृषति बहुर बुलाए ।	(सू० १०।२९४०।१)
सुहानो-	हास सुहास सुहाए ।	(दश० ८३।८)
जानो-	तुमहिं विना नहिं जैहीं ।	(सू० १०।३१२०।१)
होनो-	ह्वैहिं अति हित हानि ।	(गंगा० २।९।१)

### २-संयुक्त क्रिया-

संयुक्त धातुओं से ही संयुक्त क्रिया का निर्माण होता है। इसमें दो या दो से अधिक क्रियाओं में एक संयुक्त क्रिया बनती है। इसमें एक मुख्य तथा दूसरी सहायक क्रिया होती है। जैसे-

खाए लेनो । खा लेना ।  
 सोए जानो । सो जाना ।  
 दे देनो । दे देना ।  
 जावत रहनो । जाता रहता ।

उक्त उदाहरण संयुक्त रूप में हैं। इनमें 'जानो', 'सोनो', 'देनो', 'जावत' मुख्य क्रिया-पद है तथा 'लेनो', 'जानो', 'देनो', 'रहनो' सहायक

क्रिया-पद के रूप हैं ।

(लिङ्ग भेद के आधार पर )-

१- कृदन्त -

“ जिस संज्ञा या विशेषण आदि में किसी क्रिया (धातु) का अर्थ फलक मारता हो, उसे कृदन्त शब्द कहते हैं<sup>१</sup> । ”

“ अन्य आधुनिक भाषाओं की भांति ब्रज में भी क्रिया की रूप रचना में कृदन्त का अत्यधिक महत्त्व है। ये कृदन्त दो प्रकार के होते हैं- वर्तमानकालिक कृदन्त तथा भूत कालिक कृदन्त दोनों ही कृदन्तों का प्रयोग विशेषण, प्रधान क्रिया, संयुक्त क्रिया के अंश तथा क्रियार्थक वाक्यांशों की भांति होता है, जैसे- चलत आदमी से भत चलो, बहुत चलो आदमी आपे एक जायगी, तुम क्यों नाचत चलत: दो चार दिन चलो, बी रोज सबेरे चलत है, बी चार दिन चलो है । ”

उपर्युक्त वाक्यों में चलत, चलो, चलत है, चलो है आदि क्रिया-पद कृदन्त हैं। इन पर लिङ्ग का प्रभाव पड़ता है ।

२- तिङन्त -

“ विधि, वादेश, प्रार्थना, प्रश्न आदि की व्यंजना हिन्दी में तिङन्त क्रियाओं से होती है । ”

१- हिन्दी शब्दानुशासन, पं० विश्वरीदास वाजपेयी, काशी, संवत् २०१४, पृ० ६५

२- ब्रजभाषा, डा० धीरेन्द्र वर्मा, इलाहाबाद १९५४, पृ० ९९

३- हिन्दी शब्दानुशासन, पं० विश्वरीदास वाजपेयी, काशी सं० २०१४, पृ० ४१२



जिन क्रिया-पदों पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं पड़ता अर्थात् जिनमें लिंग भेद नहीं होता वे तिङन्त क्रिया-पद कहलाते हैं। जैसे-

छोरा जावे ।	लड़का जाता है ।	पुल्लिंग
छोरी जावे ।	लड़की जाती है ।	स्त्रीलिंग
छोरा जावें ।	लड़के जाते हैं।	पुल्लिंग
छोरी जावें ।	लड़कियाँ जाती हैं।	स्त्रीलिंग
तू जा ।	(तू)तुम जाओ ।	पुल्लिंग
तू जा ।	(तू) तुम जाओ ।	स्त्रीलिंग ।
तुम भाखन देहु ।	तुम मखन दो ।	पुल्लिंग
तुम भाखन देहु ।	तुम मखन दो ।	स्त्रीलिंग

इस प्रकार हम देखते हैं कि क्रिया-पदों के निर्माण में वाच्य, पुरुष, लिंग, वचन, काल तथा अर्थ ह: कारण होते हैं। इन्हीं के अनुसार क्रिया-पदों की रचना पातु में विकार होने के कारण होती है । क्रिया-पदों के उक्त प्रकारों से बाहर कोई भी क्रिया-पद नहीं होता । इन्हीं के अन्तर्गत सभी क्रिया-पद आ जाते हैं ।

अध्याय- द्वितीय

सु बौर रत्नाकर

के

बुद्धन्त प्रियावर्षों की तुलना

### १- क्रियार्थक संज्ञा -

जब क्रिया के सामान्य रूप का प्रयोग क्रिया की तरह न होकर संज्ञा के समान किया जाता है, तब वह क्रिया-पद क्रियार्थक संज्ञा कहलाता है। हिन्दी में धातु के साथ 'ना' प्रत्यय जोड़कर सामान्य रूप बनता है। ब्रज-भाषा में धातु में 'नो', 'बो' प्रत्यय जोड़ने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है। सूर और रत्नाकर दोनों कवियों ने इस सामान्य रूप का प्रयोग अपने-अपने काव्य में पर्याप्त रूप से किया है। उन्होंने 'नो' तथा 'बो' के अतिरिक्त इनके विकृत रूपों का प्रयोग करके भी क्रिया-पद बनाए हैं।

### 'नो' से बने रूप -

-न

खेन चली वाल गोविन्द	। सूर १०।२१८।१
आए बाजी लेन ।	गंगा० ३।१६।३
धा० खेल + -न	(सूर)
धा० ले + -न	(रत्ना०)
आहु चरावन गाइ चली जु ।	सू० १०।४४५।१
सुख मानि चली हैरन ।	गंगा० ३।६।३
धा० छ चराव + -न	(सूर)
धा० हैर + -न	(रत्ना०)
काहे कीं मुँह परसन आए	(सूर० १०।२५०५।२)
सेवन कीं तरसत ।	कल० ५।१
धा० परस + -न	(सूर)
धा० सेव + -न	(रत्ना०)

-नि

सुख की कहनि कन्हैया की ।

सूर० १०।२००३।५

दुग की अलसानि झुझाई ।

हि० ९९।४

धा० कह + - नि

(सूर )

धा० अलसा + -नि

(रत्ना०)

वह चितवनि वह चलनि मनोहर

(सू० १०।३६०२।२)

सासनि समेटि सकुचानि तैं ।

उद्धव० ४।२

धा० चितव + -नि

(सूर )

धा० सकुचा + -नि

(रत्ना०)

कर धरि चक्र, चरन की धावनि

(सूर १।२७९।२)

कहें पुनि कोन सी उठानि हें ।

उद्धव० ४।६

धा० धाव + -नि

(सूर )

धा० उठउठ उठा + -नि

(रत्ना०)

-नी

तिलक की करनी ।

(सूर ९।१०१।३)

निज करनी हरि कृपा

हरि० ४।९६।३

धा० कर + -नी

(सूर )

धा० कर + -नी

(रत्ना०)

-नो

प्रेम माहिं जो कहिं हसनी ।

सूर० १०।२८२६।१४८

काज करनो बनावट ।

उद्धव० १५।४

धा० हस + -नो

(सूर०)

धा० कर + - नो

(रत्ना०)

‘बो’ से बने इप -

-----

-ब

सुरलभ जनम लखव वृन्दावन । सु० १०।१२१६।३

० ० ०

धा० लह + - व (सुर)

० ० ० (रत्ना०)

-छवे

तीनि जीर कहिये को रहीं । (सुर० १२।४।६

इक मरिबे को छाँड़ि हरि० ४।३४।२

धा० कह ल कह + - छवे सुर

धा० मर ल मर + - छवे (रत्ना०)

मिलिये माँक उदास जनत द्वि (सुर २०।२५२४।५

ऊधी कहिये की वस । उद्व० ५५।८

धा० मिल ल मिल + - छवे सुर

धा० कह ल कह + - छवे (रत्ना०)

-वे

मन्त्री काम कुमति दीवे को ( सुर० १।१४४।४ )

दान देवे में चुके । (हरि० २।१३।३)

धा० दे ल दी + -वे (सुर )

धा० दे ल दे + -वे (रत्ना०)

सैवे को कहु माभी दीन्हो । सुर १०।४२२५।७

दच्छिना देवे माही । हरि० ३।३।४

धा० सा ल सै + - वे (सुर )

धा० दे ल दे + -वे (रत्ना०)

- हवे

उड़िबे अफलात (सू० १०।१३६८।४)

व्योत लिखिबे को पेन कोऊ । (उद्ध० १००।२)

धा० उड़ ८ उड़् + -हवे (सू०)

धा० लिख ८ लिख् + -हवे (रत्ना०)

ऊथी बीर कछु कहिबे कीं (सू० १०।३५१८।१)

हियो छुं चलिबे को सग । (उद्ध० २१।३)

धा० कह ८ कह् + -हवे (सू०)

धा० चल ८ चल् + -हवे (रत्ना०)

-हवे

विब पकरिबे धावत । (सू० १०।११०।२)

सुजस कमाहवे उछाह-उद्गार भे । (उद्ध० २३।२)

धा० पकर ८ पकर् + -हवे (सू०)

धा० कमा + -हवे (रत्ना०)

-हवी

कहं मारपन को लहवी । (सू० १०।३७६६।७)

रहत सदा रहिं ठारिहिं ठरिबो । (हरि० १।९।३)

धा० ला ८ ल + -हवी (सू०)

धा० ठर ८ ठर् + -हवी (रत्ना०)

होह कान्ह को लहवी । (सू० १०।३७६६।८)

मोद मढ़ि विस्व विचरिबो । (हरि० १।९।४)

धा० वा ८ व + -हवी (सू०)

धा० विचर विचर् + -हवी ०४७०० (रत्ना०)

ब्रज को वसिबी मन भावे री । (सू० १०।४२५४।६)

जो हम तजिबी प्रान होह । (हरि० ४।६५।१)

धा० वस् ल वस् + - हवी (सुर)

धा० तज ल तज् + - हवी (रत्ना०)

- वी

० ० ० सू०

कलु काहु सौं लेवी । हरि० ४।२१।३

० ० ० (सुर)

धा० ले ल ले + - वी (रत्ना०)

० ० ० (सुर)

अन्य रूप -

सुर और रत्नाकर ने 'नो', 'वो' तथा इनके विकृत रूपों का प्रयोग न कर अन्य प्रत्यय जोड़कर भी कुछ क्रियार्थक संज्ञाओं का निर्माण किया है। कहीं-कहीं धातु को ज्यों का त्यों प्रयोग करके क्रियार्थक संज्ञाएँ बनाई हैं। मूल धातुओं का प्रयोग दोनों कवियों ने बहुत ही कम किया है।

मूल धातु -

वासनि मार मची (सु० १०।२९०५।११)

मीषम के वानन की मार हमि मांची गात । (वी २।४।१)

धा० मार + - शून्य (सुर)

धा० मार + - शून्य (रत्ना०)

-ए

गाए सुर कोन नहिं उबर्यी । (सु० १।१६।६)

राखिये तो ध्यान आन-वान के निमाए की । (प्र० ७।६।२)

घा० छिचछ०१०००० ग० + -ए (सूर)  
 घा० निमा + -ए (रत्ना)  
 हरि सुमिरे हैं सब सुख होइ । (सु० २।५।९)  
 विरद संधारिये कृपाल के कहर की। (प्र० ७।६।४)  
 घा० सुमिर ॥ सुमिर + -ए (सूर)  
 घा० कहा + - ए (रत्ना०)

-ऐं

जो सुख होत गुपालहिं गारें (सूर० २।६।१)  
 सुकत नहीं है तुम्हें अब ती सुकारें रेव (वी० १।४।५)  
 घा० गा + -ऐं (सूर)  
 घा० सुका + - ऐं (रत्ना०)  
 चरन कमल चित लाएँ । (सु० २।६।३)  
 पाहिं पक्षिताएँ कहा लाहु लाहे जाहें । (वी० १।४।६)  
 घा० ला + - ऐं (सूर)  
 घा० पक्षिता + ऐं (रत्ना०)  
 नंद-नंदन उर जाएँ । (सु० २।६।४)  
 दीजे गांव पांच पांच ही कह्यारै कहें पाण्डव कीं (वी० १।४।१)  
 घा० जा + - ऐं (सूर)  
 घा० कह कह + ऐं (रत्ना०)

-ऐ

उठि बलि कहे हमारें । (सूर० १०।२५५७।६)  
 ० ० ० (रत्ना०)  
 घा० कह ॥ कह + -ऐ (सूर)  
 ० ० ० (रत्ना०)

२- कर्तुवाचक संज्ञा -

सूर और रत्नाकर दोनों कवियों ने कर्तुवाचक संज्ञा-रूप सुख तो सुख



धातु में प्रत्यय जोड़ कर बनाए हैं तथा कुछ प्रत्यय क्रियार्थक संज्ञाओं में जोड़कर बनाए हैं। तबल०बल०प्रलबल०प्रिवल०उन प्रत्ययों के योग में जो वृद्धन्त बनते हैं उनके अर्थ करने पर "वाला", "वाली", "वाले" आदि शब्द जाते हैं। इन रूपों को चार भागों में बांटा जा सकता है।

## १- "न" के योग से बने रूप

न

जग-जघ हरत, तारन-तारन	(सूर० १।३०८।७)
सबहिं विधि धीर न सावन	(हरि० ४।१५।१)
घा० तर + -न	(सूर)
घा० नलाव + -न	(रत्ना०)
सबल सुख के करन ।	(सू० १।३०८।२)
पीत मन हरन सुहाय ।	(वल० ११५।१)
घा० कर + -न	(सूर)
घा० हर + -न	(रत्ना०)

— 77 —

अखिल भारत के जला । (सू० १०।५४।३)

0 0 0

धा० दल + -ना (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)

नि

कोटि-मनोज-सोभा हृदि । (सू० १०।१०९।२)

यच्छ-दिनर म्मावनि । (पल० १।१।२)

धा० हर + -नि (सूर)

धा० माव + -नि (रत्ना०)

-नी

मूर्ति सुहृद् दृष्टं भयं हरनी ।

(सू० १।१०१।६)

रूपं दत्तं इह अवतारनी

(गंगा० १३।२।४)

धा० हर + -नी

(सू० )

धा० अवतार + -नी

(रत्ना०)

-नी

कोटि अक्षं लजावनी ।

(सू० १०।२८३२।३०)

० ० ०

धा० लजाव + -नी

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

सूर- ललना ललजावनी ।

(सू० १०।२८३२।४०)

० ० ०

धा० ललजाव + -नी

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

२- "वार" के योग से घने रूप -

- वार -

यह ब्रज को रत्नवार ।

(सू० १०।१३९२।७)

फंसत नैन रिफवार ।

(प्र० १८।२२।२)

धा० रत्न + - वार

(सू०)

धा० रिफ + - वार

(रत्ना०)

-वारे

वहु जोधा रत्नवारे ।

(सू० १।१०५।३)

० ० ०

(रत्ना०)

धा० रस + -वारै (सूर)  
 ० ० ० (रत्ना०)

३- "हार" के योग से बने रूप -  
 -----

सूर और रत्नाकर ने "हार" तथा उसके रूपांतरित रूपों का प्रयोग  
 करके कर्तुवाचक संज्ञा रूप बनाए हैं। "हार" तथा "हारी" पुल्लिङ्ग एकवचन तथा  
 "हारे" पुल्लिङ्ग बहुवचन रूप बनाता है। "हारि" तथा "हारी" प्रत्यय स्त्री लिंग  
 रूप बनाते हैं।

- हार

साँची सौ लिखनहार कहावे ।	(सू० १।१४२।१)
बारक्स बस करि लेनहार ।	(हिं० ० ४६।४)
लिखन + -हार	(सूर)
लेन + -हार	(रत्ना०)
राखनहार जहे फौड औरि ।	(सू० ७।३।६)
जब लौ फूंकनहार कफन ।	(हरि० ४।७३।४)
राखन + -हार	(सूर)
फूंकन + -हार	(रत्ना०)
मथनहार हरि रतन कुमारी ।	(सूर० १०।९२०।६)
हरनहार की थाम ठाम ।	(गीता० २।५।२)
बसु हरन + -हार	(सूर)
मथन + -हार	(रत्ना०)

-हारि -

ब्रज की ठीठी गुवारि, हाट की बैचन हारि । (सू० १०।२९५।५)  
 बैचन + -हारि (सूर)  
 ० ० ० (रत्ना०)

मयन हारि सव ग्वारि कुलार्ह ( (सू० १०।५२०।५ )

० ० ०

मयन + -हारि (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

- हारि

यस सुली सु-दाहन हारि । (सू० १०।१३०९।१)

कल-किरन तरनि-मद-मदनहारि । (हि० ४४।४)

दाहन + -हारी (सूर)

मदन + -हारी (रत्ना०)

स्यामहि तुम भरे किरनहारि । (सू० १०।१५३६।२)

मनो-मोज उपजावन हारि । (हि० ५०।२)

किरन + -हारी (सूर)

उपजावन + -हारी (रत्ना०)

छाँडहि बैचनहारि । (सू० १०।१५१८।६)

पुन्य -तरु सींचनहारि । (गंगा० १३।११।२)

बैचन + -हारी (सूर)

सींचन + -हारी (रत्ना०)

-हारे

अधम - उधारन हारे । (सू० १।२५।८)

बाद करनहारे । (हि० ९२।१)

उधारन + -हारे (सूर)

करन + हारे (रत्ना०)

तुम कम्परी के जोड़न हारे । (सू० १०।१५१७।५)

सदा उर रच्छनहारे । (हरि० ३।३९।१)

बोढ़न + -हारे	(सूर)
रच्छन + -हारे	(रत्ना०)
वति क्लृप्ति मन हांवन हारे ।	(सू० १।१८५।४)
ममे के जानननि हारे ।	(पल० ४०।२)
हाकन + -हारे	(सूर)
जाननि + -हारे	(रत्ना०)
-हारी	
को जो याकीं भेटन हारी ।	(सू० १।३६।३)
तुम्हीं जो दाहनहारी ।	(हरि० १।२७।२)
भेटन + -हारी	(सूर)
दाहन + -हारी	(रत्ना०)
सोइ जानत वासनहारी री	(सू० १०।१३५।१६)
तिन्हें कोउ बांधन हारी ।	(गंगा० ३।३।१)
वासन + -हारी	(सूर)
बांधन + -हारी	(रत्ना०)
रोकनहारी नंद महर-सुत	(सू० १०।१५९३।२)
ठान यह ठाननहारी ।	(गंगा० ५।३५।२)
रोकन + -हारी	(सूर)
ठानन + -हारी	(रत्ना०)

४- अन्य प्रत्ययों के योग से बने हुए -

उपरोक्त तीन प्रकार के प्रयोगों के जतिरिक्त सूर और रत्नावर ने कुछ अन्य प्रत्यय जोड़कर भी कर्तृवाचक संज्ञा-रूपों की रचना की है ।

-इया

ये दोउ नीर गंभीर बेरिया ।	(सू० १०।३५८७।३)
सुख सराटे परे पट पचतोरिया पे ।	(शुं० १०।५)

धा० धे० ७ धे० + -इया

(सू० )

धा० तोर ७ तोर + -इया

(रत्ना०)

-इया

कोउ नहिं घात करीया

(सू० १०।४२८।३)

बिलाप अति बिकल करीया ।

(हरि० ४।६६।३)

धा० कर ७ कर + ऐया

(सू० )

धा० कर ७ कर + ऐया

(रत्ना०)

घाउ रे बनीया

(सू० १०।४१।३)

बोली आरत- उपनीया ।

(हरि० ३।१२।१)

धा० बन ७ बन + -ऐया

(सू० )

धा० उपन ७ उपन + -ऐया

(रत्ना०)

ल्याउ रे करीया ।

(सू० १०।४१।५)

बाल की जाल खिंचिया

(गंगा० १।७।३)

धा० जर ७ जर + ऐया

(सू० )

धा० खिंच ७ खिंच + -ऐया

(रत्ना०)

-क

कंस छरहिं कै सालक ।

(सू० १०।४२६।६)

परम-वृद्ध-व्रत-पालक की ।

(हरि० ४।३५।४)

धा० साल + -क

(सू० )

धा० पाल + -क

(रत्ना०)

-त

ये ही हैं सबहीं के जात ।

(सू० १०।९८६।४)

० ० ०

(रत्ना०)

धा० जा + -त

(सू० )

० ० ०

(रत्ना०)

-ता

तुम दाता ।

(सू० १०।८४५।५)

हैंत हूँ मैं सुम दाता हूँ ।

(प्र० २।१।६)

धा० दे ८ वृषण दा + -ता

(सूर )

धा० दे ८ दा + -ता

(रत्ना०)

जरा तुमहिं भोगता ।

(सू० १०।८४५।५)

जाकों जा-त्राता है ।

(प्र० १७।८७।४)

धा० मोष + -ता

(सूर )

धा० त्रा + -ता

(रत्ना०)

हरता-करता तुम हीं सार

(सू० १०।८४५।६)

कपिल देवहिं ह्य हता ।

(गंगा० ३।३६।१)

धा० हर + -ता

(सूर)

धा० हर ८ हर + -ता

(रत्ना०)

-वा

जानति हैं गोरस के लेवा याही बाखरि माफ ( सू० १०।१६७६)

०

०

०

(रत्ना०)

धा० ले + -ता

(सूर)

०

०

०

(रत्ना०)

-वैया

जहां न कोऊ हो रखवैया ।

(सूर० १०।३३५।५)

जमुना- जवैया पंखि पातक पुकारि कहैं । (रत्ना० ५।२।७)

धा० रख + -वैया

(सूर )

धा० जा ज + -वैया

(रत्ना०)

मनमंजी सौ रथ हंक्वैया ।

(सू० ४।१२।३९)

सेख नाग पे खुवैया की ।

(र० ५।६।२)

धा० हरे + - वैया

(सूर)

धा० शौं सु + वैया

(रत्ना०)

३- वर्तमान-कालिक कृदन्त -

सूर और रत्नाकर ने वर्तमानकालिक कृदन्त धातु के अंत में "त" तथा "ति" प्रत्यय जोड़कर बनाए हैं। "त" प्रत्यय पुल्लिंग तथा "ति" प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग रूप बनाता है। सूर काव्य में कहीं-कहीं "त" स्त्रीलिङ्ग में भी मिलता है।

-त -

जम तहं जात डरे ।

(सू० १।३५।६)

जलजात एक देख्यो जात ।

(उद्भव० २।१)

धा० जा + -त

(सूर)

धा० जा + -त

(रत्ना०)

जनम साहिबी करत गयो ।

(सू० १।६४।१)

बालकहूँ कोँ क्लिखत रांग भेज्यो ।

(हरि० ४।३५।१)

धा० कर + -त

(सूर)

धा० बिलख + -त

(रत्ना०)

पाण्डव जरत उबारै ।

(सू० १।२५।९)

चलै संग सब लंग उमैठत ।

(गंगा० १।२२।३)

धा० जर + -त

(सूर)

धा० उमैठ + -त

(रत्ना०)

राधा गृह तैं निकसत देखे ।

(सू० १०।२०४।२)

वाले प्रजामन संग लागि दूग नारि विषये विमोचत । ( हरि० २।३४।१)

धा० निकस + -त

(सूर)

धा० विमोच + -त

(रत्ना०)

फिरत सदा भाजन अवलोकत ।

(सू० १।२०३।३)

मालहरात दिखावत ।

(हरि० ४।१४।१)



घा० अबलोक + -त (सूर )

घा० हतरा + -त (रत्ना०)

-ति

फिरति बंद बन ऊख सुखारति । (सू० १।५१।४)

वेद कारचोबी जामिं सोहति मोहति चित । (हिं० ४५।२)

घा० उखार + -ति (सूर )

घा० सोह + -ति (रत्ना०)

आहं देति दुहाही (सू० १०।६२६।६)

पूत सौं पच्छिम चली पढ़ति । (गंगा० ८।१३।४)

घा० दे + -ति (सूर )

घा० पढ़ + -ति (रत्ना०)

ठाति फिरति ठगिनी । (सू० १०।१५८।१)

चली बटुक के संग-----

बिलोकति नर-पालक कौं । (हरि० ३।३४।४)

घा० ठग + -ति (सूर )

घा० बिलोक + -ति (रत्ना०)

स्याम स्याम यह कहति फिरति है । (सू० १०।१०९४।२)

छ दम्कति दिव्य दीपमालिका दिखै कौ । (उद्व० ८७।६)

घा० कह + -ति (सूर)

घा० दम्क + -ति (रत्ना०)

ईदृश फिरति ग्वारिनी हरि कौं । (सू० १०।४५९।२)

सहित विलाप बिक्ल रोवति छक नारी (हरि० ४।४३।१)

दुंद + -त (सूर )

रोव + -ति (रत्ना०)

हारेकीं डेरत फिरति गुवारि ।	(सू० १०।४६।१)
कोउ फेरति जल हंसति ।	(गंगा० १०।१९।१)
धा० टेर + - ति	(सू)
धा० हंस + -ति	(रत्ना०)

#### ४- भूतकालिक वृद्धन्त -

सूर और रत्नाकर ने भूतकालिक प्रत्ययों के योग से भूतकालिक वृद्धन्त बनाए हैं। ये वृद्धन्त विशेषणों के समान प्रयुक्त होते हैं। ये भी दोनों लिंगों में होते हैं।

पुल्लिंग-

-बी

कृपिन करम की मारी ।	(सू० १।१५७।२)
०            ०            ०	(रत्ना०)
धा० मार ल मार + -बी	(सू)
०            ०            ०	(रत्ना०)

-नौ

हिंसा-मद समता-रस मूल्यो भाया सौ लपटानी ।	(सू० १।४७।३)
०            ०            ०	(रत्ना०)

धा० लपटा + -नौ	(सू)
----------------	------

धा०            ०            ०	(रत्ना०)
-------------------------------	----------

दूध दही बहु हरि की दीनो सुत सौ धरति छपाई ।	(सू० १०।३२५।२)
--	----------------

०            ०            ०	(सू० १०।३०५।२) रत्ना०)
-----------------------------	------------------------

धा० देदी + -नौ	(रत्ना० सू)
----------------	-------------

०            ०            ०	(रत्ना०)
-----------------------------	----------

-यी

- हैं बनाथ कैथी दून ठरिया । (सू० १।१७।२)
- मिलि सब साज समाज बंधी हमि रामो सुहायी (हिं ३२।१)
- घा० बैठ ५ बैठ् + -यी (सूर)
- घा० बंध ५ बंध् + -यी (रत्ना०)
- हाय० हाय में पर्यो पुकारैं । (सूर० ११।१५१।५८)
- कैथी लाज मदन के मध्य पर्यो मध्याज्य । (हिं० २२।१)
- घा० पर ५ पर् + -यी (सूर)
- घा० पर ५ पर् + -यी (रत्ना०)
- कुटिल - अपराधी क्याने भर्यो बहुमारी । (सूर० १।१७८।२)
- लटपट लपट्यो लीस फवत फँटा जरतारी । (कल० ५८।१)
- घा० पर ५ पर् + -यी (सूर)
- घा० लपट ५ लपट् + -यी (रत्ना०)
- मेरी कह्यो कबहुं जिनि पेली । (सूर० १०।३९९।२)
- जाननु सो दब्यो दुआला । (कल० २९।२)
- घा० कह ५ कह् + -यी (सूर)
- घा० दब ५ दब् + -यी (रत्ना०)
- पकर्यो छुटि न सकी । (सूर० १।१५१।१५)
- जाये चढ़्यो निसान सान सो फबि छबि छाजत । (कल० ४४।४)
- घा० पकर ५ पकर् + -यी (सूर)
- घा० चढ़ ५ चढ़् + -यी (रत्ना०)
- स्त्री लिंग -
- ह - ह
- दीजे विदा जातं घर अपने काल्हि सांफ की जाहें । (सूर० १०।१६।६)
- बंधी बरोहं दीच बत्स जुल सूरमि सुहाहें । (कल० ३७।३)

घा० बाँई + -ई	(सूर)
घा० बंधे ॥ बंध् + -ई	(रत्ना०)
कुम्हिर हमारी मरी जिवाँई ।	(सू० १०।७६।४)
लता वह लहलहाति तिनसी लपटाई ।	(गंगा० ४।११।२)
घा० मर ॥ मर् + -ई	(सूर)
घा० लपटा + -ई	(रत्ना०)
जो देखें दूम के तहँ सुफने सुकुमारी	(सू० १०।११०६।१)
लागी जामें गोट तमासी पटापटी की ।	(हिं० ४४।२)
घा० सुफ ॥ सुफ् + -ई	(सूर)
घा० लाग ॥ लाग् + -ई ।	(रत्ना०)
कमल-नैन बाहिर करि राखे तु बेठी सुक्याम ।	(सू० १०।३६।२)
मटकावति चंद्रिका बाप सों पागी ।	(शृं० ९६।१)
घा० बैठ ॥ बैठ् + -ई	(सूर)
घा० पाग ॥ पाग् + -ई	(रत्ना०)
ब्रज की वीथिनि फिरति बही री ।	(सू० १०।२९।२)
पोथी - बैठन खोलि चारु चौकी पर धारी ।	
धूप दीप फल फूल द्रव्य की सजी पंत्यारी ।	(कल० २९।४)
घा० वह बह् + -ई	(सूर)
घा० सज सज् + -ई	(रत्ना०)
-नी	
चितवति जहा- तहां चितसानी ।	(सू० १०।१४०९।३)
रस-रतनाकर -तरंग उम्हानी सी ।	(शृं० १२।६)
घा० चितता + -नी	(सूर)
घा० उम्हा + - नी	(रत्ना०)

तबहीं तैं हन हाथ विकानी ।

(सू० १०।१४१२।३)

०      ०      ०

(रत्ना०)

घा० विका + -नी

(सू)

०      ०      ०

(रत्ना०)

- =ही

हंहरि की दी=ही रज्यानी ।

(सू० १०।८८६।१)

०      ०      ०

(रत्ना०)

घा० दे ५ दी + =हीं

(सू)

०      ०      ०

(रत्ना०)

५- पूर्वकालिक वृद्धन्त -

सूर और रत्नाकर ने धातुओं में भिन्न-भिन्न प्रत्ययों का योग करके पूर्वकालिक प्रत्यय बनाए हैं। कहीं-कहीं धातु में कोई भी प्रत्यय नहीं जोड़ा है, तब भी वह धातु पूर्वकालिक वृद्धन्त का अर्थ सूचित करता है। जो धातु बिना प्रत्यय के ही प्रयोग किया है, उसमें 'शून्य' प्रत्यय सुविधा की दृष्टि से माना गया है। जो प्रत्यय दोनों कवियों ने प्रयोग किये हैं, वे कहीं-कहीं मूल धातुओं के साथ तथा कहीं-कहीं धातु के विकृत रूपों के साथ लगाये हैं।

- शून्य

सबके मन को देख अंदेसी ।

(सारा० २२५।१)

०      ०      ०

(रत्ना०)

घा० देख + - शून्य

(सू)

०      ०      ०

(रत्ना०)

परसु सम्हार सिष्य संग लैके ।

(सारा० २२७।२)

०      ०      ०

(रत्ना०)

घा० सम्हार + - शून्य

(सू)

०      ०      ०

(रत्ना०)

बचन समुक्त नृप आशा कीनी ।

(सारा० २४२।१)

०            ०            ०	(रत्ना०)
धा० समुक्त + - शून्य	(सूर )
धा०    ०            ०	(रत्ना०)
कर धंढीत वस्तु गिनती कर ।	(सूर सारावली २८१।२)
-----	
०            ०            ०	(४ रत्नाकर)
धा०        कर + - शून्य	(सूर )
०            ०            ०	(रत्ना०)
-इ	
रिक् चले सिर छत्र धराइ ।	(सू० १।१।३)
-----	
क्रीट मन मंडित धराइ करिहैं कहा ।	(उद्धव० १०।२)
धा० धरा + -इ	(सूर )
धा० धरा + -इ	(रत्ना०)
चरन सेवे सूर जूठनि खाइ ।	(सू० १।१२।६।६)
पाइ मए कंज में सुगंध ।	(उद्धव० ३।५)
-----	
धा० ला + -इ	(कृष्ण सूर )
धा० पा + -इ	(रत्ना०)
चले बाहं छटकाइ ।	(सू० १०।१९३३।२)
-----	
यह सुनि नृप सकुचाइ ।	(हरि० ४।१७।३)
-----	
धा० छटका + -इ	(सूर )
धा० सकुचा + -इ	(रत्ना०)
सनमुख आए धाइ ।	(सू० १०।१९३९।२)
-----	
उपाध्याय - गन धाइ ।	(गंगा० १।३१।१)
धा० धा० + -इ	(सूर)
धा० धा + -इ	(रत्ना०)

रामहिं राखी कोऊ जाइ ।	(सू० १।४७।१)
नृपति गुन गाइ बसीस्यो ।	(हरि० २।५।२)
धा० जा + -इ	(सूर)
धा० गा + -इ	(रत्ना०)
तिहिं मीसर जानि तिरखी होइ ।	(सूर० १।१०।२)
जस फरेबी बनि विज्ञ देपज्ञ बुलाए ।	(गंगा० २।१।२)
धा० आ ७ बान् + -र	(सूर)
धा० ठा ७ ठान् + -इ	(रत्ना०)
इय गयंद उतरि कहा ।	(सू० १।१६।४)
करि प्रनाम फा परसि ।	(हरि० २।८।४)
धा० उतर ७ उतर् + -इ	(सूर)
धा० परस ७ परस् + -इ	(रत्ना०)
हंसि सब बाहिर आए ।	(सू० १०।२७०।६)
बलि सूरपूर सी बिस्वामित्र ।	(हरि० २।१।१)
धा० हंस ७ हंस् + -इ	(सूर)
धा० बल ७ बल् + -इ	(रत्ना०)
समुझि धो जिय महिं ।	(सू० १।७७।७)
काहि क्यौटा बांधि फाँट ।	(हिं० ६४।३)
धा० समुझ ७ समुझ् + -इ	(सूर)
धा० बांध ७ बाण् + -इ	(रत्ना०)
बारबार सराहि सूर प्रभु ।	(सू० १।२४।४)
बाहि उत गोपिका क्राहि रहि जाति हैं । (उद्धव० २८।८)	
धा० सराह ७ सराह् + -इ	(सूर)
धा० क्राह ७ क्राह् + -इ	(रत्ना०)

जासुन चढ़े कदम पर धाई ।	(सू० १०।१४१८।१)
०            ०            ०	
धा०    धा०    + -ई	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)
न हू जसुमति सो कैहीं जाई ।	(सू० १०।१४१७।१)
०            ०            ०	
धा०    जा    + -ई	(सू०)
धा०    ०            ०	(रत्ना०)
अबलौ छहिं जास रही, मिलिहैं ये बाई ।	(सू० १०।२३०३।३)
०            ०            ०	
धा०    बा    + -ई	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)
नंद-सुवन कौं जावौं मारी ।	(सू० १०।५७।२)
०            ०            ०	
धा०    मार ५ मार    + -ई	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)
सो सब कहौं बखानी ।	(सू० १०।१३२१।५)
०            ०            ०	
धा०    बखान ५ बखान्    + -ई	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)
कहति हौं टेरी ।	(सू० १।२५२।४)
०            ०            ०	
धा०    टेर ५ टेर    + -ई	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)



०	०	०	(रत्ना०)
-ऐ			
संपत्ति दे पतिनी कौं ।			(सू० १।७।६)
जासन दे सांसनि समेटि सकुवानि तैं ।			(उद्धव० ४।२)
घा० दे ७ द् + -ऐ			(सूर )
घा० दे ७ द् + -ऐ			(रत्ना०)
मन बाहर दे मोहिं			(सू० १०।४०।२)
यह कसीस दे हरि सुभिरत ।			(हरि० १।२६।४)
घा० दे ७ द् + -ऐ			(सूर )
घा० दे ७ द् + -ऐ			(रत्ना०)
ले पर पुनः दिखावे ।			(सू० १।४२।८)
लाख वभिक्षाष ले उमहि ।			(उद्धव० २।१।४)
घा० ले ७ द् + -ऐ			(सूर)
घा० ले ७ ल् + -ऐ			(रत्ना०)
दूध-दधि-रोचन क्यक थार लै ।			(सू० १०।३०।४)
दौर भाषिनि लै संग ।			(गंगा० १।११।३)
घा० लै ७ ल् + -ऐ			(सूर)
घा० लै ७ ल् + -ऐ			(रत्ना०)
मैंहु चिते सुखयाह कै ।			(सू० १।४४।२)
०	०	०	
घा० चित ७ चित् + -ऐ			(सूर )
०	०	०	(रत्ना०)
-य			
जाज्ञा पाय देव रघुपति की ।			(सार० २२४।२)
जयद्रथ सुनिहै जाय ।			(वी० ४।३।७)

धा० पा + -य	(सू)
धा० जा + -य	(रत्ना०)
दस कंधार तहां <u>बाघ</u>	(सार० २६६।१)
बहु विधि कष्ट <u>उठाय</u> ।	(कल० ६४।३)
धा० गा + -य	(सू )
धा० उठा + -य	(रत्ना०)
हरिछी-हीं----- अपने सा <u>बैठाय</u> ।	(सार० २६६।२)
कष्ट <u>उठाय</u> ठाय निज इष्टहिं साथत ।	(कल० ६४।३)
धा० <u>बैठा</u> + -य	(सू )
धा० <u>ठा</u> + -य	(रत्ना०)

-करि -  
-----

दे करि साय पिता पहं आयीं ।	(सू० १।२९०।४७)
०            ०            ०	(रत्ना०)
धा० दे + करि	(सू)
०            ०            ०	(रत्ना०)

-कै

मिटी प्यास जमुना जल पीकै ।	(सू १०।१३९४।४)
०            ०            ०	(रत्ना०)
- कै            पा० पी० + -कै	(सू)
०            ०            ०	(रत्ना०)

लाच्छा -गृह सौं काढ़ि कै ।	(सू० १।४।९)
०            ०            ०	(रत्ना०)

काढ़ि + -कै	(सू)
०            ०            ०	(रत्ना०)

तरुनि गहं चक चौवि कै	(सू० १०।२२१७।५)
----------------------	-----------------

०            ०            ०	(रत्ना०)
०६ घातु चक्कीयि + -कै	(सूर)
०            ०            ०	(रत्ना०)
- कै	
अपने जनकों दुखित जानि कै ।	(सू० १।२०।२)
एक मनमोहन तो बसिके उजारी मोहिं ।	(उद्धव० ४१।७)
जानि + -कै	(सूर)
बसि + - कै	(रत्ना०)
सूरदास ऐसे प्रभु तजि कै ।	(सू० १।३१।२२)
कली जमुना बन्हाइ कै ।	(शृ० ३८।२)
तजि + -कै	(सूर)
बन्हाइ + -कै	(रत्ना०)
सूरदास तुम राम न खण्डिक भजिके	(सू० १।६१।६)
जमुना में घंसी मुरि मुसुकाइ कै ।	(शृंगार ३९।८)
भजि + -कै	(सूर)
मुसुकाइ + -कै	(रत्ना०)
तुम्हरे पुत्र मयी, हों सुनिके ।	(सू० १०।३५।२)
कुल बाहिं सुख पाइके ।	(शृ० २५।२)
सुनि + -कै	(सूर)
पाइ + -कै	(रत्ना०)
निरति हरषि सुख चुमि कै ।	(सू० १०।६६।३)
बैठि कै रसीली रसना पे ।	(गं०ल० ३।७)
घा० चुमि + -कै	(सूर)
घा० बैठि + -कै	(रत्ना०)

सूर और रत्नाकर दोनों कवियों ने "होनों" क्रिया का पूर्वकालिक रूप "ह्वै" बनाया है। सूरदास ने तो कहीं-कहीं अपवाद रूप में "हो" घातु को

मूल रूप में प्रयोग करके ही पूर्वकालिक रूप दे दिया है। इन्होंने 'हो' के अति-रिक्त अन्य क्रियाओं के पूर्वकालिक रूप इसी तरह बनाये हैं।

इ मूल रूप में-

बिल हो अकुलाह ।

(सा० ल० २१।२)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० हो + -शून्य

(कृष्ण सुर)

० ० ०

(रत्ना०)

खेम हैं फाट खे जान छड़ायी ।

(सू० १।५।४)

सुर समाज खे दंग ।

(गंगा० १।३।२)

घा० हो ५ खे

(सूर)

घा० हो ५ खे

(रत्ना०)

करुड़ झाँड़ि आतुर खे धार ।

(सू० १।७।८)

खे प्रसन्न कषिराज ।

(गंगा० १।१२।१)

घा० हो ५ खे

(सूर)

घा० हो ५ खे

(रत्ना०)

कां सुभा सजि खे मधु मूर्ति ।

(सू० १०।४९।४)

तब उदास खे लही बसा ।

(गंगा० २।२७।४)

घा० हो ५ खे

(सूर)

घा० हो ५ खे

(रत्ना०)

आतुर खे धायो ।

(सू० १०।३६।५)

खे कातर बिलताह ।

(गंगा० ५।२०।२)

घा० हो ५ खे

(सूर)

घा० हो ५ खे

(रत्ना०)

गोपीजन धिलित ह्वे ।	(सू० १०।४४।३)
ह्वे आरत बाधीन दीन ।	(गंगा० ८।१४।४)
घा० हो ५ ह्वे	(सूर )
घा० हो ५ ह्वे	(रत्ना०)
और नैकु ह्वे देखे स्यामहि ।	(सूर १०।३७।५)
धीर सब खे चुकी	(र० ७।३।२)
घा० ह्वे ५ ह्वे	(सूर)
घा० हो ५ ह्वे	(रत्ना०)
० ० ०	(सू० )
बिलखि गुहारि सब ह्वे चुकी ।	(र० ७।३।४)
० ० ०	(रत्ना० सू)
घा० रो ५ ह्वे	(रत्ना०)

#### ६- तात्कालिक वृद्धन्त -

तात्कालिक वृद्धन्त सूर और रत्नाकर ने तकारांत वर्तमानकालिक वृद्धन्तों में "हिं", "हिं", "ही", "ही" आदि जोड़कर बनाए हैं। वहीं-कहीं इन प्रत्ययों का प्रयोग न करके भी तात्कालिक वृद्धन्त बनाये हैं।

- हिं

तब बसुदेव उठे यह सुनतहि ।	(सू० १०।८।७)
एतो कहतहि भयो सुत ।	(हरि० ४।९१।१)
सुनत +-हिं	(सूर )
कहत +-हिं	(रत्ना०)
यह सुनतहिं अकुलाए गिरि घर ।	(सू० १०।१०।५)
पत्र उठावतहिं भए असुम सुम ।	(हरि० ४।४२।१)
सुनत + -हिं	(सूर)
उठावत +-हिं	(रत्ना०)

-हि

सुनतहि बल वात्सु ह्वे घायी ।

(सू० १०।३६१।५)

लेतहि तिहारौ नाम घाम रस-पूरकौ ।

(शुं० ७२७।२)

सुनत + -हि

(सूर )

लेत + -हि

(रत्ना०)

-हीं

सुरदास प्रभु वचन सुनतहीं ।

(सू० ९।१४९।४)

गली में पग पारत हीं ।

(उद्धव० २४।५)

सुनत + -हीं

(सूर )

पारत + -हीं

(रत्ना०)

सुरदास सुन निरखतहीं ।

(सू० १०।६१७।६)

देखतहीं आयनै दुगनि हितहानी करी ।

(शुं० ८५।५)

निरखत + -हीं

(सूर)

देखत + -हीं

(रत्ना०)

आवतहीं महे कौन विकारी ।

(सू० १०।६१७।२)

लागतहीं हाथ द्रजनाथ के ।

(शुं० ११७।७)

आवत + -हीं

(सूर)

लागत + -हीं

(रत्ना०)

यह बानी कहतहीं लगानी ।

(सू० १०।७७६।५)

विधि के कमंडल उठावतहीं ।

(गं०ल० ४।१)

कहत + -हीं

(सूर)

उठावत + -हीं

(रत्ना०)

सुमिरतहीं निरहरि - रूप तु कीन्ही ।

(सूर १।१५।८)

आवतहीं सारदा अपेद मुख चंदहिये ।

(र० १।४।१)

सुमिरत + -हीं

(सूर )

आवत + -हीं

(रत्ना०)

-ही

सुमिरतही ततकाल कृपानिधि ।

(सू० १।१०९।१०)

तुम्हें टेरिबौ बिचारतही ।

(श्री ५।१)

सुमिरत + -ही

(सूर )

बिचारत + -ही

(रत्ना०)

देखत ही चित तिनहिं ढर्यो री ।

(सू० १०।१७७३।४)

साँझ होतही तब डूढ़ता ।

(हरि० ३।७।२)

देखत + -ही

(सूर)

होत + -ही

(रत्ना०)

चितवत ही लोचन परि बाए ।

(सू० १०।१८४०।२)

पावत ही घाम मन-मुख इमारैं स्याम ।

(शृ० ९४।७)

चितवत + -ही

(सूर)

पावत + -ही

(रत्ना०)

सूरनि के कहत ही ।

(सू० ८।९।२)

घारत ही पाछ सेससाछ पद पायो ।

(गं० ल० ३५।१)

कहत + -ही

(सूर)

घारत + -ही

(रत्ना०)

जैसी कही समहिं आवत ही ।

(सूर० १०।३५१६।३)

पीयत ही बारि रतनाकर उदार भए ।

(गं० ल० ३५।३)

आवत + -ही (सूर)  
पीयत + -ही (रत्ना०)

-त

ग्राह गुसत बेकुंठ दियी । (सूर १।२६।८)  
पढ़त प्रतिज्ञा साभिमान द्वेषार्थ पुनि बाह्ये । (हरि० २।७।३)  
घा० गुस + -त (सूर)  
घा० गुस पढ़ + -त (रत्ना०)

इतनी सुनत कुंति उठि बाह्ये । (सू० १।२९।७)  
जल छोड़त हमि भाषि भयो कोलाहल भारी । (हरि० ३।४०।१)  
घा० सुन + -त (सूर)  
घा० छोड़ + -त (रत्ना०)

फल मांगत फिरि जात मुकर ह्ये । (सू० १।१७७।४)  
मुनि यह सुनत पुकार्यो । (हरि० ३।५१।१)  
घा० मांग + -त (सूर)  
घा० सुन + -त (रत्ना०)

७- अपूर्ण क्रियायुक्त कृदन्त -

सूर और रत्नाकर ने अपूर्ण क्रियायुक्त कृदन्त बहुत ही कम संज्ञा में प्रयोग किए हैं। सूर ने धातु में "ती" जोड़कर ये रूप बनाए हैं। इनकी संज्ञा अन्य कृदन्त रूपों की अपेक्षा बहुत कम है।

- ती

नेन थके मग जोड़ती । (सूर० १०।४२५७।२)  
० ० ० (रत्ना०)  
जोड़ + -ती (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)



अपूर्णा क्रियाधोतक वृद्धन्त की बहुधा द्विरुक्ति होती है, और  
उससे नित्यता का बोध होता है।

रोषत रोषत ही अब तो गिरि  
वाकी गयी अंलि दानि की पानी । (प्र० १७।४८।७)  
धा० रोष + -त , धा० रोष + -त (रत्ना०)

८- पूर्ण क्रियाधोतक वृद्धन्त -

सूर और रत्नाकर ने पूर्ण क्रिया धोतक वृद्धन्त धातुओं में "ए" तथा "न्हें" जोड़कर बनाए हैं। इनकी संज्ञा दोनों कवियों के काव्य में पर्याप्त है।

-ए

हाथ लकट गोरग लपटाए । (सू० १०।१३८९।२)  
रही सुंघि औ ऊँचि एक है सुसन मिलाए । (हि० ८९।३)  
धा० लपटा + -ए (सूर)  
धा० मिला + -ए (रत्ना०)

मध्य स्याम सलयर छवि छाए । (सू० १०।१३८८।५)  
देते तहां समाज साज सब सुप्ता सुहारा । (हरि० २।१।२)  
धा० छा + -ए (सूर)  
धा० सुहा + -ए (रत्ना०)

वनतें आवत धेनु चराए । (सूर० १०।४१७।१)  
सकल मही के दान लेन की चाव चढ़ाए । (हरि० २।१२।२)  
धा० चरा + -ए (सूर)  
धा० चढ़ा + -ए (रत्ना०)

खेलत फिरत कनकमय आंगन पहिरैताल पनहि यो । (सूर० १।१९।२)

गावत हरि गुन बिसद बीन बाँधै पर धरि । (हरि० १।६।२)

धा० पहिर ८ पहिर + -ए (सूर)

धा० धार ८ धार + -ए (रत्ना०)

कटि-तट पीत निहोरी बाँधै । (सू० १।२०।५)

जहाँ विचरत सुख फूलै । (कल० ५।४)

धा० बाँध ८ बाँध + -ए (सूर)

धा० फूल ८ फूल + -ए (रत्ना०)

दनुज एकतहँ आर पहुँच्यो धरै बत्सको रूप । (सू० १०।४१०।४)

आकृति अति विकराल धरै सखेला से कारे । (हरि० ४।१३।१)

धा० धर ८ धर + -ए (सूर)

धा० धर ८ धर + -ए (रत्ना०)

-ये

सुनि घाहँ सब ब्रजनारि सहज सिंगार किये । (सू० १०।२४।५)

किये इगनि विकराल व्याल लों । (हरि० ३।३।२)

धा० कर ८ कि + -ये (सूर)

धा० कर ८ कि + -ये (रत्ना०)

तन पहिरै नूतनवीर काजर नैन दिये । (सू० १०।२४।६)

बिना दिये कर बफान फुजन क्वहुँ नहि पावे । (हरि० ३।५७।१)

धा० दे ८ दि + -ये (सूर)

धा० दे ८ दि + -ये (रत्ना०)

बर-कंवन, कंवन-थार, झाल-साज लिये । (सू० १०।२४।८)

धा० ल ८ लि + -ये (रत्ना०)

धा० ल ८ लि + -ये (सूर)

धा० ल ८ लि + -ये (रत्ना०)

--हे

माया नटी लवट कर लीन्हे कौटिक नाच नचावे । (सू० १।४२।२)

भगवत लीला-गान तान पूरा कर लीन्हे । (कल० ३३।१)

धा० ले ५ ली + --हे (सूर)

धा० ले ५ ली + --हे (रत्ना०)

सूर स्याम अपनं कर लीन्हे बाँटत जुठन-भोग (सू० १०।८४।६)

तथा लीन्हे लाठी कर । (हरि० ४।१।१)

धा० ले ५ ली + --हे (सूर)

धा० ले ५ ली + --हे (रत्ना०)

नाचत फिरत मुद्रित मन कीन्हे । (सू० १०।४।८१)

कीन्हे कंवत जसन । (हरि० ४।१।१)

धा० कर ५ की + --हे (सूर)

धा० कर ५ की + --हे (रत्ना०)

इस प्रकार हम देखते हैं कि सूर और रत्नाकर की भाषा में कृदन्त-क्रिया-पद पर्याप्त संख्या में है । सूरसागर बहुत बड़ी कृति होने के कारण उसमें कृदन्त भी अधिक संख्या में मिलते हैं । रत्नाकर का काव्य पर्याप्त होते हुए भी सूर काव्य से तो कम है ही । अतः रत्नाकर काव्य में उदाहरणों की संज्ञा अपेक्षाकृत कम ही मिलती है। क्रियाथक संज्ञा रत्नाकर की भाषा में कम है। "वो" से बने "वों" में "व" प्रत्यय लगाकर रत्नाकर ने कौहें भी रूप नहीं बनाया है, जबकि सूर ने इस प्रत्यय के योग से क्रियाथक संज्ञा बनायी है। "हवें" प्रत्यय का प्रयोग रत्नाकर ने अपेक्षाकृत कम किया है। "वों" प्रत्यय सूर ने प्रयोग नहीं किया है जबकि रत्नाकर ने इस प्रत्यय का प्रयोग किया है। सूर ने "वों" के स्थान पर "हवों" से ही काम चला लिया है। "हवों" रत्नाकर के काव्य

में भी पर्याप्त संख्या में मिलता है ।

कृत्रिवाचक संज्ञा में सूर के काव्य में अधिक रूप मिलते हैं । "नो" से बने छप्पों में "ना", "नो" आदि प्रत्ययों का प्रयोग रत्नाकर के काव्य में नहीं मिलता है । सूर काव्य में इन प्रत्ययों का प्रयोग नाममात्र को ही मिलता है । "वार" के योग से बने छप्पों में "वारे" प्रत्यय का योग रत्नाकर के काव्य में नहीं मिलता है । "छार" के योग से बना रूप रत्नाकर के काव्य में स्त्रीलिंग में नहीं मिलता है जबकि सूर ने इस प्रत्यय के योग से स्त्रीलिंग रूप बनाया है । "त" प्रत्यय का योग भी रत्नाकर के काव्य में नहीं है । सूर ने "वा" प्रत्यय का प्रयोग किया है जबकि रत्नाकर ने इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया है ।

वर्तमानकालिक कृदन्तों के प्रयोगों में दोनों कवियों में साम्य है । भूतकालिक कृदन्तों के प्रयोगों में सूर के प्रयोग अधिक मिलते हैं । "जी", "नो", तथा "न्ही" प्रत्ययों का प्रयोग सूर ने तो किया है, लेकिन रत्नाकर ने इनका प्रयोग नहीं किया है । "यो" प्रत्यय दोनों कवियों के काव्य में पर्याप्त रूप से मिलता है । स्त्रीलिंग में "हं" का प्रयोग दोनों ने किया है । "नी" प्रत्यय रत्नाकर काव्य में सूर काव्य की तुलना में कम है । "न्ही" का योग रत्नाकर ने नहीं किया है । सूर ने "न्ही" का प्रयोग अपने काव्य में पर्याप्त रूप से किया है ।

पूर्वकालिक कृदन्तों में "शुन्य", "ह", "रे", "य", "के", आदि प्रत्ययों के प्रयोग से दोनों कवियों ने पर्याप्त रूप बनाये हैं । "ह", "करि", "के", "कै" आदि प्रत्ययों के योग से सूर ने तो पूर्वकालिक कृदन्त रूप बनाये हैं । रत्नाकर ने पूर्वकालिक कृदन्त बनाने में इन प्रत्ययों का प्रयोग नहीं किया है । ओकारांत "हो" धातु का दोनों कवियों ने "ह्वे" रूप पर्याप्त संज्ञा में प्रयोग किया है । सूर ने "ह्वो" क्रिया का पूर्वकालिक रूप "ह्वे" तथा रत्नाकर ने "ह्वो" का "ह्वे", "ह्वो" का "ह्वे" बनाया है ।

तात्कालिक कृदन्तों में 'हि', 'हि', 'ही', 'ही' प्रत्यय जोड़कर दोनों कवियों में रूप बनाये हैं। कहीं-कहीं बिना इन प्रत्ययों के जोड़े हुए वर्तमानकालिक कृदन्तों का प्रयोग ज्यों वा त्यों करके तात्कालिक कृदन्त बनाये हैं। अपूर्ण क्रियाधोतक कृदन्तों का प्रयोग दोनों के काव्य में बहुत ही कम मिलता है। पूर्ण क्रियाधोतक कृदन्तों का प्रयोग दोनों कवियों के काव्य में पर्याप्त संख्या में मिलता है।

अध्याय- तृतीय

सूर और रत्नाकर

के

वर्तमानकालिक क्रिया-पदों की तुलना

### १- सामान्य वर्तमानकाल

सूर और रत्नाकर ने सामान्य वर्तमानकालिक क्रिया-पदों का प्रयोग पर्याप्त संख्या में किया है। ये क्रिया-पद अधिकांश तो समान हैं तथा कुछ का प्रयोग रत्नाकर ने नहीं किया है। कुछ प्रयोग रत्नाकर काव्य में मिलते हैं भी अंतर मिलता है। जिन प्रत्ययों को धातु में जोड़कर सामान्य वर्तमानकालिक क्रिया-पद बनाये हैं, वे भिन्न हैं।

#### उत्तम पुरुष

#### पुल्लिङ्ग एकवचन -

-उ

सनमुख होत लजाउं ।

(सू० १।१२८।३)

०            ०            ०

धा० लजा + -उं

(सूर )

०            ०            ०

(रत्नाकर)

तातैं देउं तुम्हें मैं शाप ।

(सू० ३।५।९)

०            ०            ०

धा० दे + -उं

(सूर )

०            ०            ०

(रत्ना०)

मैं सैंत - मैंत न बिकाउं ।

(सूर० १।२८८।७)

०            ०            ०

धा० बिका + -उं

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

-ऊं

अनतहिं दुःख पाऊं । (सू० १।१६६।१)

० ० ०

घा० पा + -ऊं (सूर )

० ० ० (रत्ना०)

मैं द्वार पर्यो गाऊं । (सू० १।१६६।१०)

० ० ०

घा० गा + -ऊं (सूर )

० ० ० (रत्ना०)

गौरि गनेस्वर वीनऊं । (सू० ३।५।१)

० ० ०

घा० वीन + -ऊं (सूर )

० ० ० (रत्ना०)

- त

हीं छतनी जानत । (सू० १।२१७।१)

० ० ०

घा० जान + -त (सूर )

० ० ० (रत्ना०)

हीं हनुमत----- वात कहत सत भाई । (सू० १।८७।३)

० ० ०

घा० कह + -त (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

मैं बाहर नहिं आवत । (सू० १।१२६।२५)

० ० ० (रत्ना०)

घा० आव + -त

० ० ० (रत्ना०)

- तु

मैं नेकहुं कहिं कहत ताहि ।

(सू० १०।१४८७।६)

जाहिं जानत



० ० ०

धा० पहिंचान + -तु

(सूर)

धा० ० ०

(रत्ना०)

प्राणिनि-अष्टाध्यायी-

-ऐ

बोटि इंद्र हम जिन में मारैं ।

(सूर० १०।८९८।२)

नाचि, कुदि, वालि दे पूजैं ।

(हरि० ३।४६।४)

धा० मार ५ मार + -ऐ

(सूर )

धा० पूज ५ पूज + -ऐ

(रत्ना०)

ताकी सवित पाह हम करैं ।

(सूर० ४।३।८)

विज्ञान सुवित हूं पे न उमहैं ।

(गंगा० ६।१८।२)

धा० कर ५ कर + -ऐ

(सूर)

धा० उमाह ५ उमाह + -ऐ

(रत्ना०)

-त

हम जी कहत सबै तुम जागति ।

(सूर० १०।१०१७।५)

सुनहु पखिलहि हम भाषत ।

(हरि० ३।५३।१)

धा० कह + -त

(सूर )

धा० भाष + -त

(रत्ना०)

बबलों हम तुमहीं कीं जानत ।

(सूर० ६।४।२३)

हम जोग कृष्टि सों सब कछु जानत ।

(हरि० ४।१८।१)

धा० जान + -त

(सूर)

धा० जान + -त

(रत्ना०)

तुमहीं कीं दंड -दाता मानत ।

(सू० ६।४।२३)

न मानत सगाई हम ।

(श्री० ४७।२)

धा० मान + -त

(सूर)

धा० मान + -त

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - एकवचन -

- जीं

पलक ओट ताकीं नहिं जानीं ।

(सू० १०।१८५।२)

हित बाताहैं बखानीं ।

(शुं० १३३।५)

धा० जान ∪ जान् + -जीं

(सूर)

धा० बखान ∪ बखान् + -जीं

(रत्ना०)

निमिष मेटि यह हवि अनुमानों ।

(सू० १०।१८५।३)

धियां परीं नैंक मान करिबो सिसाहें दे ।

(शुं० ५८।८)

धा० अनुमान ∪ अनुमान् + -जीं

(सूर)

धा० पर ∪ पर् + -जीं

(रत्ना०)

अहो कान्ह तुम्हें चहाँ ।

(सू० १०।११४७।१)

कनहुं को मुख हेरीं हाय ।

(र० ७।४।१)

धा० चह ∪ चह् + -जीं

(सूर)

धा० हेर ∪ हेर् + -जीं

(रत्ना०)

-ति

मैं जानति उनके ठग नीकें ।

(सू० १०।१४२९।२)

खोह दीठि चाहति बनीठहिं निवेशें मैं ।

(रत्ना० ७।४।४)

धा०	जान + -ति	(सूर )
धा०	चाह + -ति	(रत्ना०)
कवकी	टेरति कुंर कन्हाई । -----	(सु० १०।६०९।१)
०	० ०	
धा०	टेर + -ति	(सूर )
०	० ०	(रत्ना०)
हा हा	करति पाह तेरे लागति । -----	(सु० १०।६०८।५)
०	० ०	
धा०	कर + -ति	(सूर )
०	० ०	(रत्ना०)
स्त्रीलिंग- बहुवचन - -----		
-हैं		
जायु	खाइ सो हम सब मानें । -----	(सु० १०।३२७।७)
गुविंद	धान धारें हम । ---	(उद्ध० ४५।३)
धा०	मान ५ मान् + -हैं	(सूर )
धा०	धार ५ धार् + -हैं	(रत्ना०)
तुम	बिन जीर नहीं हम जानें । -----	(सु० १०।८९१।२)
अनंत	जिय जानें हम । ---	(उद्ध० ५०।६)
धा०	जान ५ जान् + -हैं	(सूर )
धा०	जान ५ जान् + -हैं	(रत्ना०)
जिनकी	आस सदा हम राखें । -----	(सु० १०।२३०२।४)
काम को	विराम बसर नाम हम मानें ना । -----	(शु० ९८।८)
धा०	राख ५ राख् + -हैं	(सूर)
धा०	मान ५ मान् + -हैं	(रत्ना०)

-ति

जीर न जानति जान ।

(सू० १०।१४३२।४)

संपति की चाहति नठेरी है।

(उद्धव० ४९।६)

धा० जान + -ति

(सू०)

धा० चाह + -ति

(रत्ना०)

हा हा कर्ति पाह छ लागति ।

(सू० १०।१४८२।३)

वाही मुख मंजु की कहति मरीचें सदा ।

(उद्धव० ५३।१)

धा० लाग + -ति

(सू०)

धा० चह + ति

(रत्ना०)

धेनु दुहत दुषकीं हम देखति ।

(सू० १०।१५१९।२)

कहे रत्नाकर कहति सब हा हा साह ।

(उद्धव० ९६।३)

धा० देख + -ति

(सू०)

धा० कह + -ति

(रत्ना०)

मध्यम पूनष

पुल्लिग-एकवचन -

-ई

हनू सोच कत करई ।

(सू० ९।९६।७)

० ० ०

धा० कर + -ई

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

अग सोच क्यों मरई ।

(सू० १०।४।१४)

० ० ०

धा० पर + -हं (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)

~~है~~  
रे मन अजहं क्यौं न सम्हारि । (सू० १।६३।१)  
० ० ०

धा० ठहर सम्हार  $\wedge$  सम्हार + -हं (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)

कत जनम बादिहीं हारे । (सू० १।६३।२)  
० ० ०

धा० हार  $\wedge$  हार + - ठहै है (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)

तू जिहिं हित नहिं बाहर जावे । (सू० १।२२६।२४)  
० ० ०

धा० जाव  $\wedge$  जाव + -हं (सूर)  
० ० ० (रत्ना०)

~~त~~  
मुहं सम्हारित तू बोलत नाही । (सू० १०।५३७।३)  
कहै रत्नाकर गुनत गारुड़ी तू कहा । (प्र० १७।३३।३)

धा० बोल + -त (सूर)

धा० गुन + -त (रत्ना०)

बोरे वेद धींदत कहा । (सू० प्र० १७।३१।१)  
अजहं बंछव संग रहत । (सू० १।७७।१३३)

धा० बी० + -त (रत्ना०)

धा० रह + -त (सूर)

बोवत बरु, दाख फल चाहत । (सू० १।६।५)

हाय हित विन्तक चितावत कहा तु इमि । (प्र० १७।३।५)

धा० बोव + -त (सूर)

धा० चिताव + -त (रत्ना०)

सुल्लिंग - बहुवचन -

- जी

राजनीति जानी नहीं । (सू० १।२३।९)

जो पे कही भावना हमारी हीन अनाथनि की । (श्री० ३६।१)

धा० जान ५ जान् + -जी (सूर)

धा० कह ५ कर् + -जी (रत्ना०)

पीवी ह्वाह अघाह के । (सू० १।२३।१०)

नाथ विस्व के कहावी वयों । (श्री० ३६।८)

धा० पीव ५ पीव् + -जी (सूर)

धा० कहाव ५ कहाव् + -जी (रत्ना०)

-त

तुम नहिं जानत पीर पराई । (सू० १०।१०२२।२)

पे प्रीति रीति जानत ना । (रत्ना०- श्री ३६।८)

धा० जान + -त (सूर)

धा० जान + -त (रत्ना०)

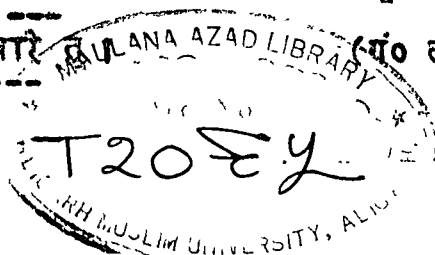
जो रीफत नहिं नाथ गुहाई । (सू० १।१७४।५)

हाल वहा बुक्त, बिहाल परि । (उद्भव० ९५।१)

धा०	रीफ	+	-त	(सूर)		
धा०	बूफ	+	-त	(रत्ना०)		
काहे कों हरि बिरद	<u>कुलावत</u> ।			(सू० १।१३२।२)		
तीही सों ऊधव हाय	<u>कहावत</u> ।			(प्र० १७।४२।६)		
धा०	कुलाव	+	-त	(सूर)		
धा०	कहाव	+	-त	(रत्ना०)		
- हु						
काहे नहि	<u>जापहु</u> ।			(सू० १०।१११७।१)		
०	०	०	०			
धा०	जाव	+	-हु	(सूर)		
धा०	०	०	०	(रत्ना०)		
तुम्हीं मन भावहु ।	<u>भावहु</u> ।			(सू० १०।१११७।२)		
०	०	०	०			
धा०	भाव	+	-हु	(सूर)		
०	०	०	०	(रत्ना०)		
<u>स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -</u>						
-ऐ						
सुनि राधा यह कहा	<u>बिचारे</u> ।			(सू० १०।२०६७।१)		
जनम जनम के संघाती	<u>निरधारे</u> तु ।			(गं० ल० २।२)		
धा०	बिचार	५	बिचार	+	-ऐ	(सूर)
धा०	निरधार	५	निरधार	+	-ऐ	(रत्ना०)

अपनों मुख क्यों न निहारे । (सू० १०।२०६७।२)

नासन के डों न बिचारे तु । (गं० ल० २।४)



धा० निहार ८ निहार + -ऐ (सू०)  
 धा० बिहार ८ बिहार + -ऐ (रत्ना०)

औसर पे फगरै । (सू० १०।१७।४)  
 तू तो कहै अलकाबली भौर सी । (प्र० १७।५२।१)  
 धा० फगर ८ फगर + -ऐ (सू०)  
 धा० कह ८ कह + -ऐ (रत्ना०)

-ति

मेरे कहें नहीं तू मानति । (सू० १०।२५।६)  
 अब अथरम जयौ करति । (हरि० ४।६९।४)  
 धा० मान + -ति (सू०)  
 धा० कर + -ति (रत्ना०)

निभि सौं कहाकहति । (सू० १०।१३५०।२)  
 जानति न जानि कहा मानि बैठी । (शुं० १२२।१)  
 धा० कह + -ति (सू०)  
 धा० जान + -ति (रत्ना०)

कहा बनावति बात । (सू० १०।२९०।६)  
 पावति सबद सुख ऐसी कहु । (शुं० १२२।६)  
 धा० बनाव + -ति (सू०)  
 धा० पाव + -ति (रत्ना०)

-हि

जसोदा एती कहा रिसाहि । (सू० १०।३५०।२)  
 ० ० ०  
 धा० रिसा + -हि (सू०)  
 ० ० ० (रत्ना०)



रु त्रीणि - बहुवचन -

- औ

घुंघट ओट करी किन न्यारी

धा० कर ० निहार ० + - ०

(सू० १०।२१६६।३)

(सूर)  
(रत्ना०)

कुटकि लेति हया हमहिं निहारौ ।

धा० निहार ० निहार ० + - ०

(सू० १०।२१६६।४)

(सूर)  
(रत्ना०)

पे लीं करति, देति नहिं नीकै ।

(सू० १०।१४७३।५)

देति हमें सीख सिखि जाई सो कहाँ सी ।

(शृ० ९१।१)

धा० दे + -तिं

(सूर)

धा० दे + -तिं

(रत्ना०)

ताहिं करति कैसे तुम न्यारी ।

(सू० १०।१२३७।५)

० ० ०

धा० कर + -तिं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

तुम नाहिंन पहिंचानति ।

(सू० १०।७०३।६)

० ० ०

धा० पहिंचान + -तिं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हु

हनकीं ब्रजहीं कयीं न सुनावहु ।

(सू० १०।२१६४।१)

० ० ०

(

धा० सुनाव + -हु

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

काहिं न लाज सुनावहु ।

(सू० १०।२१६४।४)

० ० ०

(रत्ना०)

धा० लुड़ाव + -हु (सूर)  
 ० ० ० (रत्ना०)

अन्य पुरुष

पुल्लिगे - सक्कन -

-हु

आपुन कीं वीन आवर देह । (सू० १।२००।१)

० ० ०

धा० दे + -हु (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

-हु

क्खु क्खु-धमे न जानहे । (सू० १।४४।१९)

० ० ० (रत्ना०)

धा० जान + -हु (सूर)

धा० ० ० (रत्ना०)

पुरुष न तिय बध करहे । (सू० १०।४।११)

० ० ०

धा० कर + -हु (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

तहं चदि तिय जो देखे । (सू० १।३२५।१४)

० ० ०

धा० देख + -हु (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

-हे

जठर अंतरगत सुत अपराध करे । (सू० १।११७।३)

मयंकर दूरिहि भाजे ।

(हरि० २।१३।३)

धा० कर् ७ कर् + -ऐ

(सू०)

धा० भाज ७ भाज् + -ऐ

(रत्ना०)

बहिरौ सुने गूंग पुनि बोले ।

(सू० १।१।३)

घन्य घर्म यह को पहिचाने ।

(हरि० ४।११।३)

धा० सु<sup>पहिचान</sup> सुन् + -ऐ

(सू०)

धा० ७ पहिचान् + -ऐ

(रत्ना०)

सू सगुन पद गावे ।

(सू० १।२।६)

-त

पावक हू न डरत ।

(सू० १।५५।२)

सुपन हिंडोरा लसत एक तेहिं ।

(हिं० २१।१)

धा० डर + -त

(सू०)

धा० लस + -त

(रत्ना०)

कत बड़ जंतु जरत ।

(सू० १।५५।४)

गोल अमोल कपोलनि चूमत ।

(हिं० ४७।४)

धा० जर + -त

(सू०)

धा० चूम + -त

(रत्ना०)

ज्यों सुक संमर-फूल विलोक्त ।

(सू० १।१००।४)

अकबक बोलत बैन ।

(हरि० ३।४४।३)

धा० विलोक्त + -त

(सू०)

धा० बोल + -त

(रत्ना०)

-तु

प्यारी प्रीतय बारसी करतु ।

(सू० १०।२८०४।१)

० ० ०

घा० कर + -तु

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

मेरे पाहंनि परतु ।

(सू० १०।२८०४।२)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० पर + -तु

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

नाहिंन निज भुज भरतु ।

(सू० १०।२८०४।३)

० ० ०

घा० भर + -तु

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

पुलिंश - वसुक्क

-ऐ

दानव दस दिसि भाजें ।

(सू० १।३६।६)

महान मंजुल मठ राजें ।

(कल० ४९।१)

घा० भाज ५ भाज् + -ऐ

(सू०)

घा० राज ५ राज् + -ऐ

(रत्ना०)

या बिधि सजके मनहिं मनावें ।

(सू० १०।१३९९।६)

ज्ञान गुन ते बहु पावें ।

(गंगा० १२।३५।३)

घा० मनाव ५ मनाव् + -ऐ

(सू०)

घा० पाव ५ पाव् + -ऐ

(रत्ना०)

-त

तेझा चाहत कुपा तुम्हारी ।

(सू० १।१६३।१)

चित-हित नांचत मोर ।

(हिं० १०।१)

घा० चाह + -त

(सूर)

घा० नांच + -त

(रत्ना०)

महिमा वेद पुरान वखानत ।

(सू० १।११४।५)

बिबिध अभिराम निहारत ।

(हरि० ३।१।४)

घा० वखान + -त

(सूर)

घा० निहार + -त

(रत्ना०)

सुनि सव उतरत पार ।

(सू० १।२१५।४)

महि नीचै बहु वसत जीव हिसक ।

(गंगा० ३।५।२)

घा० उतर + -त

(सूर)

घा० वस + -त

(रत्ना०)

हिं

कमल कमला रवि विना विकाहाहि ।

(सू० १।३३८।२)

० ० ०

घा० विकाहा + -हिं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

जल विनु निमिष नहिं कुम्हिलाहि ।

(सू० १।३३८।७)

० ० ०

(

घा० कुम्हिला + -हिं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हीं

साग विदु घा खाहीं ।

(सू० १।२४१।४)

० ० ०

घा० ता + -हीं (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

छ० राच्छस दसबंघर डरहीं । (सू० १।११।७)

० ० ० (रत्ना०)

घा० डर + -हीं (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

यह कहि-कहि पछिताहीं । (सू० १०।१०१३।२)

० ० ० (रत्ना०)

घा० पछिता + -हीं (सूर)

० ० ०

स्त्रीलिंग - श्ववचन -

-ऐ

तौ ऊ जतन करि जग पोषे । (सू० १।११७।४)

चपला जय चमके । (गंगा० ७।२६।३)

घा० कर ५ कर + -ऐ (सूर)

घा० चमक ५ चमक + -ऐ (रत्ना०)

मंद-मंद गति आवे । (सू० १०।१४३८।३)

सुधार अपार वैग नोचे कौं घावे । (गंगा० ७।२४।१)

घा० बाण ५ जाव् + ऐ (सूर)

घा० घाण ५ घाव् + -ऐ (रत्ना०)

-ति

मथति दधि जसुमति मथानी ।

(सू० १०।६७।३)

करति कर में कोउ जियकों ।

(हिं० ५२।२)

धा० मथ + -ति

(सूर)

धा० कर + -ति

(रत्ना०)

रहति न परसैं पार ।

(सू० १।८४।३)

कोउ ----- रोंदति हरि हिय कों ।

(हिं० ५२।१)

धा० रह + -ति

(सूर)

धा० रोंद + -ति

(रत्ना०)

रेंचति इंद्रिय -वम-गटी ।

(सू० १।९८।३)

गंधर्वनि के मुखहिं मरोरति ।

(हिं० ५३।२)

धा० रेंच + -ति

(सूर)

धा० मरोर + -ति

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - बहुवचन -

-रें

गोपिका पहिरें अभूषन- चीर

(सू० १०।२६।९)

छटा-होर दिन-दिन क्षिति कहरें ।

(हिं० १३।४)

धा० पहिर ५ पहिर + -रें

(सूर)

धा० कहर ५ कहर + -रें

(रत्ना०)

दूब सबकें सीस धरें ।

(सू० १०।२४।३६)

सुवात चली पूरव की ।

(उद्धव० १३।१)

धा० धर ५ धर + -रें

(सूर)

धा० चल ५ चल + -रें

(रत्ना०)

ब्रज -जुवती हरि चरन मनावैं ।	(सू० १०।६३१।१)
अग्नि कोपिला कहूँ बल गावैं ।	(कल० ८०।३)
घा० मनाव $\wedge$ मनाव् + ऐ	(सू०)
घा० गाव $\wedge$ गाव् + -ऐ	(रत्ना०)

-तिं

चहतिं परष-वरषानि ।	(सू० १०।९६।१)
सान सौं परसतिं काननि ।	(हिं० ३८।३)
घा० चह + -तिं	(सू०)
घा० परस + -तिं	(रत्ना०)

ब्रज नारि कहतिं सष ।	(सू० १०।६०१।२)
सखिहुँ छठि लखतिं अति ।	(हिं० ४८।४)
घा० कह + -तिं	(सू०)
घा० लख + -तिं	(रत्ना०)

बेलि चमेली, मालती बुक्ततिं दूम-ठारी ।	(सू० १०।१०९५।४)
निज-निज रुचि अनुसार लहतिं सब ।	(कल० १२।२)
घा० बुक्त + -तिं	(सू०)
घा० लह + -तिं	(रत्ना०)

-हिं

महतारी वारति करहिं बनाइ ।	(सू० १।२९।५)
०            ०            ०	
घा० कर + -हिं	(सू०)
०            ०            ०	(रत्ना०)

-हीं

नेन अंजन अथर बांजहीं छरष सौं ।	(सू० १०।९९८।३)
--------------------------------	----------------



०	०	०	
धा०	आंज + -हीं		(सूर)
०	०	०	(रत्ना०)
निसि बन कीं सब जाहीं ।			(सू० १०।९९९।६)
०	०	०	(रत्ना०)
धा०	जा + नहीं		(सूर)
०	०	०	(रत्ना०)

सामान्य वर्तमान काल के उत्तम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने "उ", "ऊ", "त", "तु" आदि प्रत्यय जोड़कर क्रिया-पद बनाये हैं। रत्नाकर के काव्य में इस उत्तम पुरुष के पुल्लिङ्ग एकवचन में किसी तरह के भी क्रिया-पद नहीं मिलते हैं। बहुवचन में दोनों कवियों ने "हैं" तथा "त" प्रत्यय जोड़कर समान रूप से क्रिया-पद बनाये हैं। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में "औं" प्रत्यय का प्रयोग दोनों कवियों ने समान रूप से किया है। "ति" प्रत्यय का प्रयोग सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम किया है। बहुवचन में "हैं" तथा "ति" का प्रयोग दोनों कवियों के काव्य में मिलता है।

मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने "ई", "ऐ" का प्रयोग किया है जबकि रत्नाकर ने इन प्रत्ययों के योग से क्रिया-पद नहीं बनाये हैं। "त" प्रत्यय समान रूप से प्रयोग किया है। बहुवचन में "औं" तथा "त" प्रत्यय दोनों ने अपने-अपने क्रिया-पदों में जोड़ा है। "हु" प्रत्यय केवल सूर काव्य में ही मिलता है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में "ए" तथा "ति" प्रत्यय समान एवं "हि" प्रत्यय केवल सूर ने प्रयोग किया है। बहुवचन में "औं" का प्रयोग समान तथा "ति" का प्रयोग सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम किया है। "हु" का प्रयोग केवल सूर ने किया है।

अन्य पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में "इ", "ई", "तु" का प्रयोग केवल सूर ने तथा "त" का प्रयोग दोनों कवियों ने समान रूप से किया है। बहुवचन में "हैं", "त" प्रत्यय दोनों कवियों ने जोड़े हैं। "हिं", "हीं" केवल सूर ने ही

जोड़े हैं। स्त्रीलिंग एवम्न में "हैं", "ति" प्रत्यय समान रूप से प्रयोग किये हैं।  
बहुवचन में "हैं", "ति" समान तथा "हैं", "हीं" प्रत्यय केवल सूर ने अपने क्रिया-  
पदों में जोड़े हैं।

## २- अपूर्ण वर्तमान काल

अपूर्ण वर्तमान काल में क्रिया की स्थिति अपूर्ण होती है। काम अपूर्ण है। अभी पूरा नहीं हुआ है। क्रिया हो रही है। इस काल में मुख्य क्रिया-पद के साथ "रहना" क्रिया के विकृत रूप "रहा", "रही", "रहे" आदि जुड़े होते हैं तथा अंत में "होना" सहायक क्रिया के विकृत रूप वर्तमान काल की स्थिति में आते हैं। वर्तमान काल में ब्रजभाषा में पूर्वकालिक प्रत्यय के साथ "रहा है", "रही है", "रही हैं", "रहे हैं", "रहे हों" आदि का योग होता है। इस प्रकार सूर और रत्नाकर ने अपूर्णवर्तमान काल में जो प्रयोग किये हैं, वे निम्न हैं-

### उत्तम पुरुष

#### पुल्लिंग एवम्न -

०	०	०
०	०	०

#### पुल्लिंग बहुवचन

०	०	०
०	०	०

#### स्त्रीलिंग - एवम्न -

- रही हों -

बानक देखत रीझि रही हों ।

(सूर० १०।२१७९।३)

०            ०            ०

धा० रीफ् ∪ रीफ् + -इ + रही हों (सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

मैं पहिंचानि रही हों नीकें ।

(सु० १०।२७।१।२)

०            ०            ०

धा० पहिंचान् ∪ पहिंचान् + -इ + रही हों । (सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

नीं पहिं में सुभाह रही हों ।

(सु० १०।३२।६।३)

०            ०            ०

(

धा० सुभाह + -इ + रही हों ।

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

रही हैं -

०            ०            ०

(सूर)

बटकि रही हैं एक आस गुनगारी तैं ।

(उद्धव० ६।९।६)

०            ०            ०

(सूर)

धा० बटक् ∪ बटक् + -इ + रही हैं

(रत्ना०)

मध्यम पुनश्च

पुल्लिङ्ग - एकवचन -

पुल्लिङ्ग - बहुवचन -

रहे हो-

नित प्रति गीधि रहे हो कीकें ।

(सूर० १०।२८।२)

०            ०            ०  
घा० गीथ ८ गीथ् + -रू + रहे हो

(सू)

०            ०            ०

(रत्ना०)

-रहे हो-

इसि रहे हो काहे जू ।  
-----

(सू १०।२५०९।३)

०            ०            ०

घा० इस इस + -रू + रहे हो

(सू)

०            ०            ०

(रत्ना०)

औरनि की मन चौरि रहे हो ।  
-----

(सू १०।१९३४।२)

०            ०            ०

घा० चोर चोर + -ह + रहे हो

(सू)

०            ०            ०

(रत्ना०)

बहुत दिननि तैं विरमि रहे हो ।  
-----

(सू १०।३४०९।२)

०            ०            ०

घा० विरम विरम् + -ह + रहे हो

(सू)

०            ०            ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -  
-----

रही है-

जाह न हयां तैं बैठि रही है ।

(सू १०।२७५६।२)

०            ०            ०

घा० बैठ ८ बैठ् + -ह + रही है।

(सू)

०            ०            ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन -  
-----

रही हैं-

जति हीं निदरि रही हो ।

(सू० १०।१९५२।५)

०            ०            ०

धा० निदर ५ निदर + -इ + रही हो

(सुर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

कहा मोन खे खे जु रही हो ।

(सू० १०।१३३८।५)

०            ०            ०

धा० हो ५ खे + रही हो

(सुर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

अन्य पुरुष - पुल्लिङ्ग : एकवचन

०            ०            ०

०            ०            ०

पुल्लिङ्ग - बहुवचन -

रहे हैं-

मोहि रहे हैं बीकी ।

(सू० १०।२३४४।५)

फूमि से रहे हैं तन्वि ।

धा० मोह ५ मोह + -इ + रहे हैं।

(सुर)

धा० फूम ५ फूम + -इ + रहे हैं ।

(रत्ना०)

०            ०            ०

(सुर)

धरम ध्वज रहे हैं बनि ।

(रत्ना० ७।९।१)

०            ०            ०

(सुर)

रहे हैं + धा० बन ५ बन् + -इ

(रत्ना०)

०            ०            ०            (सूर)

स्त्रीलिंग - एववचन

रही है-

प्रिया मान बरि बैठ० बैठि रही है। (सू० १०।२५६४।६)

हिरकि रही है हत मोर सों मयूरी । (रत्ना० ११।३।७)

घा० बैठ ५ बैठ् + -इ + रही है। (सूर)

घा० हिरक ५ हिरक् + -इ + रही है। (रत्नाकर)

०            ०            ०            (सूर)

धिरकि रही है विज्जु । (रत्ना० ११।३।८)

०            ०            ०            (सूर)

घा० धिरक ५ धिरक् + -इ + रही है (रत्ना)

०            ०            ०            (सूर)

पोरि ये रही है रमि । (झुंगार ६७।५)

रही है + घा० रम ५ रम् + -इ (रत्ना०)

०            ०            ०            (सूर)

स्त्रीलिंग - बहुवचन

०            ०            ०

०            ०            ०

अपूर्ण वर्तमान काल के रूप में सूर और रत्नाकर ने अन्य कालों की अपेक्षा बहुत कम बनाये हैं। उच्च पुरुष में पुल्लिंग में दोनों कवियों ने इस काल के क्रिया-पदों को प्रयोग नहीं किया है। स्त्रीलिंग एववचन में सूर ने इस काल के प्रयोग किया है। रत्नाकर ने नहीं। बहुवचन में रत्नाकर के प्रयोग तो नाममात्र को मिल जाते हैं किन्तु सूर ने नहीं मिलते। मध्यम पुरुष में पुल्लिंग एववचन में

किसी का भी प्रयोग नहीं मिलता। बहुवचन में सूर के प्रयोग तो मिलते हैं, किन्तु रत्नाकर के नहीं। स्त्रीलिंग एवमवचन तथा बहुवचन में भी केवल सूर ने ही उक्त काल के क्रिया-पदों की रचना की है, रत्नाकर ने नहीं। अन्य पुरुष पुल्लिंग एवमवचन में भी दोनों में से किसी का भी प्रयोग नहीं मिलता। बहुवचन में दोनों कवियों के प्रयोग मिलते हैं। स्त्रीलिंग एवमवचन में सूर के कम तथा रत्नाकर के प्रयोग अधिक मिलते हैं। स्त्रीलिंग-बहुवचन में किसी भी कवि का रूप नहीं मिलता है।

### ३- पूर्ण वर्तमान काल

---

इस काल में क्रिया की पूर्ण स्थिति का बोध होता है। काम की समाप्ति की बात कहने से कुछ ही पहले छुँ है। ऐसा संकेत इस काल में मिलता है। भूतकालिक कृदन्त के साथ "होनों" सहायक क्रिया-पद का वर्तमानकालिक रूप प्रयुक्त होता है। "होनों" सहायक क्रिया-पद में पुरुष, लिंग तथा वचन के अनुसार प्रत्यय जुड़ा होता है।

उत्तम पुरुष -

---

पुल्लिंग एवमवचन -

---

-ऊँ

सुनो पिता हों यहीं पर्यो हँ।

(सारा० ११७।१)

०                      ०                      ०

घा० पर ५पर + -यी + घा० ही ५ह् + -ऊँ (सूर)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

- बों

वाही करत जधीन मयो हों।

(सू० १।४७।४)

०                      ०                      ०

घा० हो ८ म + -यी + घा० हो ८ ह् + -जों (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)

जब जायौ हों सरन तिहारी । (सू० १।७८।४)  
 ० ० ० (रत्ना०)

घा० जा + -यी + घा० हो ८ ह् + -जों (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)

पुल्लिंग - वखवचन -

-एँ  
 खरे रहे हैं कव के । (सू० १०।३०५२।४)  
 ० ० ०

घा० रह ८ रह् + -ए + घा० हो ८ ह् + -हँ (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)

स्त्रीलिंग - वखवचन -

- जों  
 में तो बकित मड़े हों । (सू० १०।७५३।५)  
 ० ० ०

घा० हो ८ म + -हँ + घा० हो ८ ह् + -जों (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)

में रीझी हों भारी । (सू० १०।१९०२।४)  
 ० ० ०  
 घा० रीझ ८ रीझ् + -हँ + घा० हो ८ ह् + -जों (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)



मैं तो भूली हूँ ।

(सू० १०।२५४०।३)

० ० ०

घा० भूल ॥ भूल + -है + घा० हो ॥ हू + -जीं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

-हैं

बाजु मिलन हम बाएँ हैं ।

(सू० १०।२१६१।४)

बिना चादर जाई हैं ।

(हरि० ४।८३।२)

घा० जा + -है + घा० हो ॥ हू + -हैं

(सूर)

घा० जा + -है + घा० हो ॥ हू + -हैं

(रत्ना०)

प्रभु बिरह जरी हैं।

(सू० १०।३९३८।६)

जरी हैं बिरहानल मैं।

(उद्धव० ४६।३)

घा० जर ॥ जर + -है + घा० हो ॥ हू + -हैं

(सूर)

घा० जर ॥ जर + -है + घा० हो ॥ हू + -हैं

(रत्ना०)

हम सिरजी हैं ।

(सू० १०।३८०८।७)

० ० ०

घा० णिजः सिरज ॥ सिरज + -है + घा० हो ॥ हू + -हैं (सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

मध्यम पुरुष

पुल्लिंग - एकवचन -

-है

तु तो विषया रंग रंग्यो है।

(सू० १।६३।३)

० ० ०

घा० रंगे० रंग् + -यो + घा० हो० ह् + -ऐ

(सू०)

०

०

०

(रत्ना०)

तु अलि कहा पर्यो है।

(सू० १०।३६५।१)

०

०

०

घा० पर० पर् + -यो + घा० हो० ह् + -ऐ

(सू०)

०

०

०

(रत्ना०)

पुल्लिङ्ग- बहुवचन -

-ऐ

हरि आप भए हैं।

(सू० १।२३।१)

०

०

०

(

घा० हो० म् + -ए + घा० हो० ह् + -ऐ

(सू०)

०

०

०

(रत्ना०)

-औ

कहो कहो तैं आए हो ।

(सू० १०।३५००।१)

मारी मरमाए ही ।

(उद्धव० ४२।४)

घा० आ + -ए + घा० हो० ह् + -औ

(सू०)

घा० मरमा + -ए + घा० हो० ह् + -औ

(रत्ना०)

जाहु जहं रेनि बसे हो ।

(सू० १०।२५०२।१)

चाव सैं चले हो ।

(उद्धव० ६७।१)

घा० बस० वस् + -ए + घा० हो० ह् + -औ

(सू०)

घा० चल० क्ल + -ए + घा० हो० ह् + -आ

(रत्ना०)

अब बड़े मए हो ।

(सू० १०।१५५९।६)

आपु ही हिराने हो ।

(श्री २९।२)

घा० हो० म + -ए + घा० हो० ह् + -जी (सू)  
 घा० हिरा + -ने + घा० हो० ह् + -जी (रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन

-ऐ

भई है कहा प्रथम सी बाल । (सा० लहरी ७१।१)

० ० ०

घा० हो० म + -ई + घा० हो० ह् + -ऐ (सू) .  
 ० ० ० (रत्ना०)

तू बाई है बाबू ही ।

० ० ०

घा० जा + -ई + घा० हो० ह् + -ऐ (सू)  
 ० ० ० (रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-जी

चितपन्न भई हो । (सू १०।१८५९।६)

मूठ पे चढ़ी हो जाके । (ग० ल० ३५।७)

घा० हो० म + -ई + घा० हो० ह् + -जी (सू)  
 घा० चढ़० चढ़ + -ई + घा० हो० ह् + -जी (रत्ना०)

० ० ०

छेल में छकी हो । (शु० १६७।१)

० ० ०

घा० छक ५ छक् + -ई + घा० हो० ह् + -जी (रत्ना०)

अन्य पुरुष

पुल्लिंग - एकवचन -

-ऐ

बदभुल भयो है रन सूर ।

(सा०ल० ७५।८)

भयो ऐसी क्यों विधि है ।

(हरि० ३।१८।४)

घा० हो ॥ म + -यी + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(सूर)

घा० हो ॥ म + -यी + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(रत्ना०)

जाजु ब्रज कोऊ बायो है ।

(सू० १०।३४८०।१)

०            ०            ०

घा० जा + -यी + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

पुल्लिंग - बहुवचन -

-एँ

जाये हैं बल स्याम ।

(सारा० ४५६।२)

सुदामा राज द्वार आज जाय हैं।

(रत्ना० ६।१।२)

घा० जा + -ये + घा० हो ॥ ह् + -एँ

(सूर)

घा० जा + -ए + घा० हो ॥ ह् + -एँ

(रत्ना०)

फूले हैं दोउ माहे ।

(सा ५०३।२)

घात में लो है पे ।

(उद्धव० १५।४)

घा० फूल ॥ फूल + -ए + घा० हो ॥ ह् + -एँ

(सूर)

घा० ला ॥ ला + -ए + घा० हो ॥ त् + -एँ

(रत्ना०)

को जाने प्रभु कहाँ चले हैं ।

(सूर० ८।४।५)

गवाल बाल गहकि गुपाल के लूँ हैं हत ।

(र० १०।८।१)

घा० चल ॥ चल् + -ए + घा० हो ॥ ह् + ऐ (सूर)

घा० जु ॥ जु + -ए + घा० हो ॥ ह् + ऐ (रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग एकवचन -

-ऐ

चारि प्रवाह वही है । (सू० १०।२६४७।८)

कु अरुमानी है । (उद्व० २३।८)

घा० वह ॥ वह् + -ए + घा० हो ॥ ह् + -ऐ (सूर)

घा० अरुमा + -नी + घा० ही ॥ ह् + -ऐ (रत्ना०)

दावानल उपजी है । (सू० १०।२९६६।३)

राधिका पे छिछो करि काटी है । (उद्व० ७७।२)

घा० उपज ॥ उपज् + -ई + घा० ही ॥ ह् + ऐ (सूर)

घा० काट ॥ काट् + -ई + घा० ही ॥ ह् + ऐ (रत्ना०)

चातक बूंद भई है । (सू० १०।३१५४।६)

हाल बाल परी है बिहाल । (सू० ११४।१)

घा० हो म + -ई + घा० हो ह् + -ऐ (सूर)

घा० पर पर् + -ई + घा० ही ह् + -ऐ (रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन -

-ऐ

मथुरा तें ये आई हैं । (सू० १०।२१६३।१)

कीऊ धानहि धिरानी हैं । (उद्व० ३४।२)

घा० जा + -ई + घा० ही ॥ ह् + ऐ (सूर)

घा० धिरा + -नी + घा० ही ॥ ह् + -ऐ (रत्ना०)

तातिं इनहिं कुलार्थ हैं । (सू० १०।२१६३।२)

कोऊ----- बिथकानी हैं ।

(उद्धव० ३४।४)

घा० बुला + -हैं + घा० हैं। अह् + ऐं (सूर)

घा० बिथका + -नी + घा० हैं। अह् + -ऐं (रत्ना०)

इस काल में सूर उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग-एकवचन में सूर ने "ऊ" "ओं" प्रत्यय पूर्ण क्रिया को साथ प्रयुक्त 'होनो' क्रिया के विकृत रूपों में जोड़े हैं। पुल्लिङ्ग बहुवचन में "ऐं" प्रत्यय का योग है। स्त्रीलिङ्ग -एकवचन में "ओं" प्रत्यय मिलता है। उत्तम षष्ठ्य पुरुष में रत्नाकर ने इस काल में केवल स्त्रीलिङ्ग -बहुवचन में ही सूर के समान रूपाकित बनाये हैं। दोनों कवियों ने पूर्ण क्रिया के साथ सहायक क्रिया में "ऐं" प्रत्यय जोड़ा है। ऐसे रूप सूर की अपेक्षा रत्नाकर काव्य में मिलते हैं।

मध्यम पुरुष में पुल्लिङ्ग-एकवचन में सूर ने सहायक क्रिया में "ऐं" प्रत्यय जोड़ कर रूप बनाये हैं। रत्नाकर काव्य में इन रूपों का अभाव है। पुल्लिङ्ग-बहुवचन में सूर ने "ऐं" तथा "ओं" प्रत्यय जोड़ा है। रत्नाकर ने केवल "ओं" प्रत्यय जोड़कर पूर्णभूत के रूप बनाये हैं। स्त्रीलिङ्ग-एकवचन में सूर ने सहायक क्रिया में "ऐं" प्रत्यय जोड़ा है जबकि रत्नाकर के काव्य में इस प्रकार के रूप प्राप्त नहीं है। बहुवचन में "ओं" प्रत्यय जोड़कर दोनों कवियों ने रूप बनाये हैं। ये रूप दोनों व्यक्तियों के काव्य में बहुत कम मिलते हैं।

अन्य पुरुष में पुल्लिङ्ग-एकवचन में "ऐं" प्रत्यय दोनों कवियों के क्रिया-पदों में मिलता है। बहुवचन में "ऐं" प्रत्यय का योग है। स्त्रीलिङ्ग एक वचन में "ऐं" तथा बहुवचन में "ऐं" प्रत्यय जोड़कर दोनों कवियों ने पूर्ण भूतकालिक क्रिया-पद बनाये हैं।

"होनो" क्रिया-स्थिति दर्शक -

वर्तमान काल में "होनो" क्रिया के बहुत से विकृत रूप सूर और रत्नाकर ने प्रयुक्त किये हैं। इन रूपों में "आहि", "आहिं", "अहि", "हैं", "हों"

“हो” आदि हैं। सामान्य तथा इनका विश्लेषण इस प्रकार किया जा सकता है-

आहि -

- आ + घा० ही ऽ ह् + -इ

आहिं -

- आ + घा० ही ऽ ह् + -इ

अहि -

- अ + घा० ० ही ऽ ह् + -ऐ

हे -

घा० हो ऽ ह् + -ऐ

हैं -

घा० ही ऽ ह् + -ऐ

हों -

घा० ही ऽ ह् + ओं

हो -

घा० हो ऽ ह् + - ओ

इन सभी घातुओं का विकास संस्कृत की “अस्” घातु से हुआ है। ये प्रयोग ब्रजभाषा के होने के कारण सभी का विकास हिन्दी से दिखाया गया है। “आहि”, “आहिं” हिन्दी की “आसना” क्रिया के वर्तमानकालिक रूप हैं<sup>१</sup>। “अहि” संस्कृत “अस्ति”, हिन्दी “अहना” का वर्तमानकालिक रूप है<sup>२</sup>। सूर और रत्नाकर ने ऐसे प्रयोग बहुत बड़ी संख्या में किये हैं। अतः उदाहरण अधिक देने की आवश्यकता नहीं है। एक-एक उदाहरण पर्याप्त है।

१- ब्रजभाषा सूर कोश, प्रथम खण्ड, टण्डन, लखनऊ, प्रथम संस्करण सन् १९६२, पृ० ११०

### उत्तम पुरुष

#### पुल्लिंग-एकवचन -

-ओं

मान हों भव संकुनिधि में ।

(सू० १।९९।२)

घा० हों ॐ + -ओं

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

० ० ०

(रत्ना०)

#### पुल्लिंग-वस्त्वचन -

-हं

तु ननसाल माहिं हम बाहिं ।

(सू० ६।५।२२)

० ० ०

घा० जास ॐ बाह् + -हं

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

-हैं

हम हैं जीव सदा माया वस ।

(सू० १०।८४५।२)

अब तो हम हैं दास ।

(रत्ना०)

घा० ही ॐ ह् + -हैं

(सू०)

घा० ही ॐ ह् + -हैं

(रत्ना०)

#### स्त्रीलिंग-एकवचन -

- औं

में वाकी हों माई

(सू० १०।१४२४।३)

० ० ०

(

घा० ही ॐ ह् + औं

(कठमठ सू०)

० ० ०

(रत्ना०)



इन्नीलिं- बह्वचन -

-हैं

हम हैं तुम्हारे गांव-ठांव की ।

(सू० १०।१४६६।७)

एक काँह की कमेरी हैं।

(उद्धव ० ४९।८)

घा० ही ७ ह् + -हैं

(सूर)

घा० ही ७ ह् + -हैं

(रत्ना०)

पुल्लिं- एकवचन -

-ह

मौटो तू जाहि ।

(सू० ५।५।९)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० आस ७ जाह् + -हि

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हैं

कौन कौ बालक है तू ।

(सू० १०।५५०।३)

० ० ०

घा० ही ७ ह् + -हैं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

पुल्लिं- बह्वचन -

- औ

तुम हो सदा गरीब निवाज ।

(सू० १।१०७।८)

तुम ही रतनाकर चेटक्यारी ।

घा० ही ७ ह् + -औ

(सूर)

घा० ही ७ ह् + -औ

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-इ

को तू आहि कौन की यनिता ।

(सू० १०।२७२८।२)

०                      ०                      ०

धा० आस आह † -इ

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

-ऐ

तू है कुनि कठोर

(सू० १०।३२०।५)

०                      ०                      ०

धा० हो ह † -ऐ

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-औ

नवल तुमहुं हौ ।

(सू० १०।२१६४।३)

०                      ०                      ०

धा० हौ ह † औ

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

बन्धु पुत्र -

पुल्लिङ्ग - एकवचन -

-सू

वृषति कह्यो मारग सम आह ।

(सू० ५।४।७)

०                      ०                      ०

घा० वास ७ आह् + -शून्य	(सूर)
घा० ० ०	(रत्नावर)
-ह	
नर तरीर सूर ऊपर आहि ।	(सू० ५।४।४७)
० ० ०	(
घा० वास ७ आह् + -ह	(सूर)
० ० ०	(रत्ना०)
-ये	
शक्त हार अहे कौठ वीरे	(सू० ७।३।६)
० ० ०	(रत्ना०)
घा० अह ७ अह् + -ये	(सूर)
० ० ०	(रत्ना०)
-ये	
ऐसी को दाता है समर्थ ।	(सू० १।१६।३)
है तिहि की नरनाह भूप ।	(हरि० १।१३।४)
घा० हो ७ ह् + -ये	(सूर)
घा० हो ७ ह् + -ये	(रत्ना०)
<u>पुत्ति - बह्वचन -</u>	
-हं	
इनमें को पति आहि तिहारि ।	(सू० ९।४५।५)
कृपा भाव यह आहि ।	(हरि० ४।२८।३)
घा० वास ७ आह् + -हं	(सूर)
घा० वास ७ आह् + -हं	(रत्ना०)

-ऐं

हन्ड समान हैं जाके सेवक ।

(सू० १।३९।४)

ये जापुड़ीं प्रसम हैं।

(उद्धव० ४८।२)

घा० हो ७ ह् + -ऐं

(सू०)

घा० हो ७ ह् + -ऐं

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग -एकवचन

-इ

मम पुत्री बय-प्रापत जाहि ।

(सू० ९।४।६)

० ० ०

घा० आस ७ आह् + -इ

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

-ऐ

तुम तो अनेक वह एक है ।

(सू० १०।१३४२।५)

कुटिल कटाती है ।

(सू० उद्धव० ६८।७)

घा० हो ७ ह् + -ऐ

(सू०)

घा० हो ७ ह् + -ऐ

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग बहुवचन -

-इं

० ० ०

(सू०)

ये अलि जाहिं लंजीरें ।

(प्र० १७।५२।२)

० ० ०

(सू०)

घा० आस ७ आह् + -इं

(रत्ना०)

-ऐं

जब दासी है तेरी

(सू० ९।७९।२)

परिवारिका तिहारी हैं।

(उद्धव० १७।८)

धा० हो ७ह् + -ऐं

(सूर)

धा० हो ७ह् + -ऐं

(रत्ना०)

“होनो” क्रिया के स्थिति दर्शक रूप सूर ने तो अगणित प्रयोग किये हैं किन्तु रत्नाकर के काव्य में कहीं-कहीं इन रूपों का अभाव मिलता है। उच्चम पुरुष के पुल्लिङ्ग-एकवचन में सूर ने “होनो” क्रिया का विकृत रूप “हों” प्रयोग किया है, यही रूप सूर ने स्त्रीलिङ्ग में प्रयोग किया है। इन रूपों का रत्नाकर ने प्रयोग नहीं किया है। पुल्लिङ्ग बहुवचन में सूर ने “जाहि” क्रिया-पद बनाया है। रत्नाकर काव्य में इस रूप का अभाव है। “हैं” का प्रयोग सूर और रत्नाकर ने समान दिया है। स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में भी दोनों कवियों ने इसी रूप का प्रयोग किया है।

मध्यम पुरुष के दोनों लिङ्गों के एकवचन में सूर ने “जाहि” तथा “है” क्रिया-पदों का प्रयोग किया है। रत्नाकर ने ये प्रयोग नहीं किये हैं। पुल्लिङ्ग बहुवचन में दोनों कवियों के प्रयोग समान मिलते हैं। स्त्रीलिङ्ग-बहुवचन में सूर ने “हो” क्रिया-पद प्रयोग किया है। रत्नाकर ने इसका प्रयोग नहीं किया है।

अन्य पुरुष के पुल्लिङ्ग-एकवचन में सूर के “जाह”, “जाहि”, “जहे” जादि प्रयोग मिलते हैं जो रत्नाकर ने नहीं किये हैं। “है” क्रिया-रूप समान है। बहुवचन में “जाहि” तथा “हैं” के प्रयोग समान मिलते हैं। स्त्रीलिङ्ग-एकवचन में सूर ने “जाहि” तथा बहुवचन में “जाहि” का प्रयोग किया है। रत्नाकर के क्रिया-पदों में इनका अभाव है। एकवचन में “है” तथा बहुवचन में “हैं” का प्रयोग समान मिलता है।

अध्याय- चतुर्थ

सूर और रत्नाकर

के

भूतकालिक क्रिया-पदों की तुलना

### १- सामान्य भूतकाल

सूर और रत्नाकर ने सामान्य भूतकालिक क्रिया-पद धातुओं में 'हैं', 'हैं', 'ए' और 'बी', 'नी', 'नी', 'ने' 'नी', 'ये', 'यो', 'यों', 'यों' आदि प्रत्यय जोड़कर बनाये हैं। इन प्रत्ययों के अतिरिक्त अन्य बहुत से प्रत्यय जोड़कर भी दोनों कवियों ने सामान्य भूतकालिक क्रिया-पदों की रचना की है किन्तु वे रूप कर्मवाच्य में आते हैं। अतः उन प्रत्ययों को वाच्य के अध्ययन के अध्याय में रखा गया है। ये सभी प्रत्यय पुनश्च, लिंग तथा वचन के अनुसार उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किये गये हैं।

#### उत्तम पुनश्च

#### पुल्लिङ्ग -एकवचन

##### -नी

अब हीं माया हाथ विकानी ।

(सू० १।४७।१)

०            ०            ०

धा० विका + -नी

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

निद्रा वति न अधानी ।

(सू० १।४७।४)

धा० अधा + -नी

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

##### -यो

अब मैं नाच्यो बहुत ठठेठ गुपाल

(सू० १।१५३।१)

०            ०            ०

धा० नाच √ नाच् + -यो

(ठठेठ सू)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

-यीं

पर्यौ मोह की फाँसि

(सू० १।१११।१२)

०            ०            ०

(

घा० पर ∪ पर् + -यीं

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

तातैं बिस मयौं कर्तनामय

(सू० १।४९।२)

०            ०            ०

घा० हो ∪ भ + -यीं

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

अरु वीत्थौ महाभारत ।

(सू० १।२८७।५)

०            ०            ०

घा० वीत् ∪ वीत् + -यीं

(सूर)

०            ०            ०

-यीं

देखन के कारन में जायो ।

(सारा० ६६१।१३)

नाच्यौ हौं जितै नाच ।

(श्री ३४।२)

घा० जा + -यीं

(सूर)

घा० नाच ∪ नाच् + -यीं

(रत्नाकर)

फिरि फिरि जोनि अंतरनि परच्यौ ।

(सू० १।१५६।५)

निकस्यौ कहूं हौं ब्रज गाम ह्वे ।

(शृंगार० १११।१)

घा० भाम ∪ भाम् + -यीं

(सूर)

घा० निक्स ∪ निक्स् + -यीं

(रत्नाकर)

थक्यौ बीच बिहाल, बिह्वल ।

(सू० १।३९।९)

०            ०            ०

घा० थक ∪ थक् + -यीं

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)



पुल्लिंग - बहुवचन -

-ए

हम तुम हैं जाए ।

(सू० १।२३८।१)

हम सादर लाए ।

(हरि० ४।२३।१)

घा० जा + -ए

(सूर)

घा० ला + -ए

(रत्ना०)

प्रान बिनु हम सब मर ।

(सू० १०।५०४।७)

मर जीर के दास ।

(हरि० ४।८।४)

घा० हो ७म + -ए

(सूर)

घा० हो ७म + -ए

(रत्ना०)

ब्रह्म जानिके हम सब घाए ।

(सू० १०।१३८७।७)

० ० ०

घा० घा + -ए

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

- ने

हम तो आजु बहुत सहमाने ।

(सू० १०।१०१४।५)

० ० ०

घा० सरमा + -ने

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-ये

कहो बिप्र हम गये अतंतिका ।

(सार० ८११।२)

० ० ०

घा० जा ७ ग + -ये

(सूर)

घा० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग- एकवचन -

-ई

हैं तो गहं जमुना ।	(सू० १०।१४००।१)
हैं तो गहं ओच्छ ही ।	(शृ० १५।३)
घा० जाँ ग + -ई	(सूर)
घा० जाँ ग + -ई	(रत्ना०)

टेरि -टेरि में मई बावरी ।	(सू० १०।४६२।२)
हैं न चित लाई ।	(शृ० १३५।२)
घा० होँ म + -ई	(सूर)
घा० ला + -ई	(रत्ना०)

हैं बलिहारी नंद-नंदन की ।	(सू० १०।२१६।२)
०            ०            ०	
घा० छि बलिहारँ बलिहारँ + -ई	(सूर)
०            ०            ०	(रत्ना०)

-नी

में तो इतनेहिं माफ़ बिकानी ।	(सू० १०।१७८२।५)
आपु चितेरनि हाथ बिकानी ।	(शृ० ६।४)
घा० बिका + -नी	(सूर)
घा० बिका + -नी	(रत्ना०)

सी गंवाइ पछितानी ।	(सू० १०।१३२६।७)
०            ०            ०	
घा० पछिता + -नी	(सूर)
०            ०            ०	(रत्ना०)

### स्त्रीलिङ्ग - वस्तुवचन -

-हैं

देखि तुमहिं डरिं ।

(सू० १०।३९३२।४)

विशाल परीं बाल सबे ।

(उद्धव० १५।१)

धा० डर ५ डर + -हैं

(सूर)

धा० पर ५ पर + -हैं

(रत्ना०)

हम समझीं यह बात तुम्हारी ।

(सू० १०।७६३।५)

समझीं तिहारी चतुआहें

(उद्धव० ६१।१)

धा० समझ ५ समझ + -

(सूर)

धा० समझ ५ समझ + -हैं

(रत्ना०)

हम क्लीं घर तुमहुं जानहु ।

(सू० १०।१७६९।५)

० ० ०

धा० चल ५ चल + -हैं

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

### मध्यम पुनर्ब

### पुल्लिङ्ग - एववचन -

-यी

या आवर पर अजहुं बैथी ।

(सू० १०।३६१५।६)

बैथी बक ध्यानी ।

(गंगा० २।३७।३)

धा० बैठ ५ बैठ + -यी

(उद्धव० सूर)

धा० बैठ ५ बैठ + -यी

(रत्ना०)

माया-मद मैं भयी मरु कत ।

(सू० १।६३।२)

० ० ०

घा० हो ॐ म + -यो

(सू)

घा० ० ०

(रत्न०)

कौन को सुन, तू कहा आयो ।

(सू० १०।५२१।३)

० ० ०

घा० आ + -यो

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

पुल्लिग - वसुवन -

-ए

आपुन मर उधारन जाहलं ।

(सू० १।२०७।५)

विके न तुम नहिं मर दास ।

(हरि० ४।१०२।३)

घा० हो ॐ म + ए

(सू)

घा० हो ॐ मर + -ए

(रत्ना०)

क्यों करि सिंधु पार तुम उतरै ।

(सू० ९।९०।५)

वाल पनेहिं मैं मरे जयाविधि ।

(हरि० ४।५३।४)

घा० उतर ॐ उतर + -ए

(सू)

घा० मर ॐ मर + -ए

(रत्ना०)

कहाँ रहै जबलीं तुम ल्याम ।

(सू० १०।१३०९।१)

विके न तुम नहिं मर दास ।

(हरि० ४।१०२।३)

घा० रह ॐ रह + -ए

(सू)

घा० विक ॐ विक + -ए

(रत्ना०)

-ये

कौन कारज कीं लाये ।

(सू सारा० ८१३।२)

० ० ०

घा० जाय + -ये

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

कही सु जाज रेन कहाँ सोये ।

(सारा० ९११२)

० ० ०

(

घा० सो + -ये

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

तुम सु हमको जोग ल्याये ।

(सू० १०।३९३२।२)

० ० ०

घा० ला ल्या + -ये

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-ई

बहुतें दिवस जासु तू जाई ।

(सू० १०।७२४।३)

० ० ०

घा० जा + -ई

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

बवहिं हरिक गई तू नीक ।

(सू० १०।६९७।२)

० ० ०

घा० जा लख + -ई

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

मरत तैं तू वची प्यारी ।

(सू० १०।७६०।४)

० ० ०

घा० बच ल बच् + -ई

(सू)

घा० ० ०

(रत्नाकर)

-नी

जसोदा रती कहा रिसानी ।

(सू० १०।३४३।१)

० ० ०

धा० रिखा + -नी

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

कनक -वैलि सी कयीं सुफानी

(सू १०।११०८।३)

० ० ०

(

धा० सुफा + -नी

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्री लिंग- वस्तुवन -

-हैं

कहां तुम रहीं ब्रज ।

(सू० १०।१०१२।३)

कित धीं प्यारीं हत ।

(शु० १५०।६)

धा० रह ५ रह् + -हैं

(सू)

धा० प्यार ५ प्यार + -हैं

(रत्ना०)

ताहि तजि कयीं विपिन जाहें

(सू० १०।१०१६।४)

० ० ०

धा० जा + -हैं

(सू)

धा० ० ० ०

(रत्ना०)

जा कहरन तुम जन्म भई ब्रज ।

(सू० १०।१३५०।३)

० ० ०

(

धा० हो ५ म + -हैं

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

-जी

कोउ खीफनी कोऊ किन बरजी

(सू० १०।१४३२।३)

० ० ०

धा० खीफ ५ खीफ् + -जी

(सू)

० ० ०

वन्य पुनः

पुल्लिङ्ग -एकवचन -

-जी

कोउ लीफो रोज़ किन तरजो ।

(सुर० १०।१४३२।३)

० ० ०

धा० लीफ् ७ लीफ् + -जी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

- नौ

भ्रतनि हाथ विकानो ।

(सू० १।११।९)

० ० ०

(

धा० विका + -नौ

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-यी

तप पग पर्यो बहुत जस्तुति कर ।

(सारा० ६४७।२)

सोधि -सपदि पाताल पधार्यो ।

(गंगा० १।२७।१)

धा० पर ७ पर + -यी

(सूर)

धा० पधार ७ पधार + -यी

(रत्ना०)

निवट दास कै जायो ।

(सू० १।१०।४)

तहाँ जोगी सो जायो ।

(हरि० ४।२१।३)

धा० जा + -यी

(सूर)

धा० जा + -यी

(रत्ना०)

जब-जब दीन दुखी भयो ।

(सू० १।१७।२)

भयो भूप तिहि नगर ।

(गंगा० १।६।१)

घा० हो ५ म + -यी

(सू)

घा० हो ५ म + -यी

(रत्ना०)

नंद-पीरि कै पीतर घायी ।

(सू० १०।७७।२)

भूप रानिहिं समुक्तायी ।

(हरि० ३।२९।३)

घा० छठ० घा + -यी

(सू)

घा० समुक्ता + -यी

(रत्नाकर)

चौंच घालि पक्षितायी ।

(सू० १।५८।४)

झू कौडिन्य रिसायी ।

(छठ हरि० ३।३२।३)

घा० पक्षिता + -यी

(सू)

घा० रिसा + -यी

(रत्ना०)

पुल्लिंग - यल्लवन -

-ए

स्याम बिदूकैं आए ।

(सू० १।१३।५)

मदन-वान लीं औ महि आए ।

(हिं० ८८।४)

घा० आ + -ए

(सू)

घा० आ + -ए

(रत्ना०)

नारद षान मए माया में ।

(सू० १।४३।३)

वे ती मए जोगी ।

(उद्धव० ७।१।७)

घा० हो ५ म + -ए

(सू)

घा० हो ५ म + -ए

(रत्ना०)

महर भवन रिषिराज गए ।

(सू० १०।८५।१)

कान्ह गए जमुना नहान पे ।

(उद्धव० ३।७)

घा० आ ५ ग + -ए

(सू)

घा० आ ५ ग + -ए

(रत्ना०)



बैठे सब उमराव

(सू० १०।१३९६।३)

बैठे गादी पे

(सू० २५।४)

घा० बैठ ॐ बैठ् + -ए

(सूर)

घा० बैठ ॐ बैठ् ङ -ए

(रत्ना०)

सारंग पति फ्राटे सारंग ते ।

(सू० १।३३।२)

लेके उपदेस की संदेस ऊघी को ।

(उद्भव० २३।१)

घा० फ्राट ॐ फ्राट् + -ए

(सूर)

घा० चल ॐ चल् + -ए

(रत्ना०)

-ने

निरखि श्याम हलधर मुकुजाने ।

(सू० १०।३८०।१)

गोपाल मंद मुकुजाने ।

(हिं० ७०।१)

घा० मुकुजा + -ने

(सूर)

घा० मुकुजा + -ने

(रत्ना०)

अति हित जसुमति हाथ विकाने ।

(सू० १०।३८०।६)

कटाच्छनि सौ ललचाने ।

(हिं० ७०।२)

घा० बिका + -ने

(सूर)

घा० ललचा + -ने

(रत्ना०)

-ये

ठीर-ठीर के नुष सब जाये ।

(सारा० ७३४।२)

० ० ०

घा० जा + -ये

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

तब हरि गये सेत कंदर में ।

(सारा० ६४६।२)

० ० ०

घा० जा ५ ष + -ये

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- एकवचन -

-ई

प्रगट पूतना आई ।

(सा० ७२४।१)

बेगि प्रभु आ समाई ।

(गंगा० ४।४४।३)

घा० आ + -ई

(सूर)

घा० समा + -ई

(रत्ना०)

बहुत ढीठ यह मई ग्वालिनी ।

(सारा० ८९३।२)

इहिं विधि ओफल मई ।

(हरि० ३।३५।१)

घा० हो ५ म + -ई

(सूर)

घा० हो ५ म + -ई

(रत्ना०)

सुत मुख देखि जसोदा फूली ।

(सू० १०।८२।१)

सेव्या मई चकित बोली इत उत ज्वे ।

(हरि० ४।७५।१)

घा० फूल ५ फूल + -ई

(सूर)

घा० बोल ५ बोल + -ई

(रत्ना०)

सिलातरी जल माहिं सेत बांध ।

(सूर० १।३४।७)

अलवेली इक तान- जोड़ के परी ।

(हिं० ५७।१)

घा० तर ५ तर + -ई

(सूर)

घा० पर ५ पर + -ई

(रत्ना०)

आप चली गृह काज कीं ।

(सू० १०।६६।२)

बोहरे अटा पे चढ़ी ।

(शुं० ४०।१)

घा० चल ५ चल + -ई

(सूर)

घा० चढ़ ५ चढ़ + -ई

(रत्ना०)

-नी

सहि न राकी जनी अकुलानी ।

(सू० १०।७८।४)

गंग कहु सकुचि सकानी ।

(गंगा० ४।४४।१)

घा० अकुला + -नी

(सूर)

घा० सका + -नी

(रत्ना०)

सुनत बात यह सहि अतुरानी ।

(सू० १०।१४०९।१)

० ० ०

घा० अतुरा + -नी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

बार-बार हरि को पक्षितानी ।

(सू० १०।१४०९।४)

० ० ०

घा० पक्षिता + -नी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्री लिंग वल्लवन -

-हैं

सयै भई छवि हीन ।

(सारा० ७२१।१)

अनुकंपित कहु भई ।

(गंगा० ५।१८।३)

घा० हो ८ म + -हैं

(सूर)

घा० हो ८ म + -हैं

(रत्ना०)

घर हैं फिरि आहें ।

(सू० १०।१४१७।३)

घाहें जित तित तैं ।

(उद्धव० ९१४१)

घा० आ + -हैं

(सूर)

घा० घा + -हैं

(रत्ना०)

मेरे संग की ओर गहं ।	(सू० १०।१४१७।३)
हिय <u>हुलसाइ</u> सुराज के सगर में ।	(र० ६।६।२ )
घा० जा + -इं	(सूर)
घा० हुलसा + -इं०	(रत्ना०)

-नीं

बेसरि नाउं लेत सरमानीं ।	(सू० १०।१९५९।५)
०            ०            ०	
घा० सरमा + -नीं	(सूर)
०            ०            ०	(रत्ना०)
यह सुनि ग्वालि सबै <u>सुखयानीं</u> ।	(सूर० १०।१५२०।७)
०            ०            ०	
घा० सुखया + -नीं	(सूर)
०            ०            ०	(रत्ना०)

सानान्य भूतकाल के उ०म पुरुष पुल्लिङ्गे एवञ्चन में सूर ने "नीं", "पौं", "यों", "थों" आदि प्रत्यय जोड़कर अनेकानेक क्रिया-पद बनाये हैं। रत्नाकर ने केवल "यो" प्रत्यय को जोड़कर कोई-कोई क्रियापद ही बनाया है। वल्लभन में "ए" का प्रयोग तो दोनों कवियों ने किया है। "ने", "पे" का प्रयोग केवल सूर ने ही किया है। स्त्रीलिङ्गे एवञ्चन में "हं", "नी" का प्रयोग दोनों ही कवियों ने किया है। सूर ने इन प्रत्ययों का प्रयोग अधिक संख्या में किया है।

मध्यम पुरुष के पुल्लिङ्गे एवञ्चन में "यो" प्रत्यय जोड़कर सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम-क्रिया-पद बनाये हैं। वल्लभन में "ए" प्रत्यय दोनों कवियों के क्रिया-पदों में मिलता है। "ये" प्रत्यय केवल सूर के क्रिया-पदों में

मिलता है। रत्नाकर ने क्रिया-पदों में "ये" प्रत्यय का अभाव है। स्त्री-लिंग एक्वचन में "हैं" तथा "नी" प्रत्यय सूर ने प्रयोग किये हैं रत्नाकर के क्रिया-पदों में इन प्रत्ययों का भी अभाव है। बहुवचन में "हैं" प्रत्यय सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम प्रयोग किया है।

अन्य पुरुष के पुल्लिंग एक्वचन में "औ", "नो" का प्रयोग केवल सूर के क्रिया-पदों में मिलता है। "पो" का प्रयोग दोनों कवियों ने पर्याप्त संख्या में किया है। बहुवचन में "ए", "ने" का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। "ये" का प्रयोग केवल सूर ने किया है। स्त्री-लिंग एक्वचन में "हैं" का प्रयोग समान "नी" का प्रयोग सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम किया है। बहुवचन में "हैं" का प्रयोग समान तथा "नी" का प्रयोग सूर के क्रियापदों में मिलता है। रत्नाकर के क्रिया-पदों में इस प्रत्यय के प्रयोगों का अभाव है।

## २ - अपूर्ण भूतकाल

अपूर्ण भूतकाल में दो क्रिया-पदों का प्रयोग एक साथ होता है। एक मुख्य क्रिया-पद तथा एक सहायक क्रिया-पद। सहायक क्रिया-पद "होनो" सहायक क्रिया-पद का भूतकालिक रूप ही होगा। मुख्य क्रिया-पद धातु में "त" या "ति" प्रत्यय के साथ प्रयोग होता है। सहायक क्रिया-पद "होनो" के दो प्रकार के रूप मिलते हैं। एक तो "हीं", "ही", "हे", "हो" आदि। दूसरा "छि छी", "छो", "छे" "छी" आदि। पहले प्रकार के रूप "है" तथा "हैं" वर्तमानकालिक सहायक क्रिया-पदों के भूतकालिक रूप हैं। इनका विकास संस्कृत की "अस्" धातु से है। हिन्दी में "आकर" होना तथा ब्रजभाषा में वही रूप "होनो" है। अतः मूलधातु "हो" छे इसमें "नो" प्रत्यय जोड़कर क्रिया-पद का सामान्य रूप बना। "हो" धातु के विकृत रूप "हूँ" में "हूँ", "हैं", "ए" तथा "ओ" प्रत्यय जोड़कर सूर और रत्नाकर ने भूतकालिक रूप बनाये हैं। दूसरे प्रकार के रूपों का विकास संस्कृत की "छ्" धातु से हुआ है। अतः संस्कृत धातु में

‘हं’, ‘हैं’, ‘ए’, ‘औ’ आदि प्रत्यय हिन्दी के जोड़कर मृतकालिक रूप बनाये हैं ।

उत्तम पुरुष

पुल्लिङ्ग-एकवचन

छुती -

हं प्र जित हों कहावत छुती ।

(सू० ८।१०।१७)

०                      ०                      ०

धा० ~~कहाव~~ + कहाव + -त + धा० छुत् + -औ (सूर)

०                      ०                      ० (रत्ना०)

जानत छुती चाह वा जसकी ।

(सू० १०।४०१७।१)

०                      ०                      ०

धा० जान + -त + धा० छुत् + -औ (सूर)

०                      ०                      ० (रत्ना०)

पुल्लिङ्ग-बहुवचन -

छुते -

०                      ०                      ०

(ह०७७००० सू०)

मानत छुते के यह मंजुल महान मंत्र ।

(प्र० १३।२।१३)

०                      ०                      ०

(सूर)

धा० मान + -त + धा० छुत् + -ए

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन

हो-

आवति हो जमना परि पानी ।

(सू० १०।१४१२।१)

०                      ०                      ०

धा० आव + -ति + धा० हो ह् + -है (सूर)

०                      ०                      ० (रत्ना०)

हीं अपघाधिनि दही मयति ही ।

(सू० १०।३३८१।३)

० ० ०

घा० मय + -ति + घा० हो ७ह् + -है

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

हुती -

जाति हुती दहि लेहै ।

(सू० १०।१४६६।६)

हुनति हुती हीं जहां सुमन ।

(रत्ना०- शृ० १३२।२)

घा० जा + -ति + घा० हुत् + -है

(सू०)

घा० हुन + -ति + घा० हुत् + -है

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

हीं-

सलगि तन हम जरत हीं ।

(सू० १०।३७०३।२)

० ० ०

(

घा० जर + -त + घा० हो ७ह् + -है

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

हम मांगति हीं यह बिधिना पे ।

(सू० १०।२९१६।१८)

० ० ०

घा० मांग + -ति + घा० हो ७ह् + -है

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

सब यासों रिस कृपा करति हीं ।

(सू० १०।१३५९।२)

० ० ०

घा० कर + -ति + घा० हो ७ह् + -है

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

हुतीं हीं-

० ० ०

(सू०)

कहे रत्नाकर विचारति हुतीं हीं हम ।

(उद्भव० ८३।३)

०            ०            ०            (सूर)  
 घा० विचार + -ति + घा० छु + -ई + घा० हो + -ह + ई (रत्ना०)

मध्यम पुनः

पुल्लिङ्ग- एकवचन -

०            ०            ०  
 ०            ०            ०

पुल्लिङ्ग- बहुवचन -

छुते -

देखत छुते तात तुम ।

(सू० १०।१०३३।७)

हंकारत छुते ना हनुमान ।

(प्रि० ७।५।१)

घा० देख + -त + घा० छु + -ए

(सूर)

घा० हंकार + -त + घा० छु + -ए

(रत्ना०)

हे -

मागत हे दधि सो हम दीन्हो ।

(सू० १०।१४७४।४)

०            ०            ०

(

घा० माग + -त + घा० हो + -ह + -ए

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग- एकवचन -

ही-

जसुदा तू जो कहति ही मौसी ।

(सू० १०।३१५।१)

देति ही काल्हि ही सीस हमें ।

(कठवक्ता प्र० १७।७।१)



घा० कह + -ति + घा० हो ७ ह् + -ई

(सू०)

घा० दे + -ति + घा० हो ७ ह् + -ई

(रत्ना०)

व्याकुल मई फिरति ही जगहीं ।

(सू० १०।१६९८।३)

० ० ०

घा० फिर + -ति + घा० हो ७ ह् + -ई

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

काल्हि हमैं कैसैं निदरति ही ।

(सू० १०।१७६४।३)

० ० ०

घा० निदर + -ति + घा० हो ७ ह् + -ई

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - बहुवचन -

० ० ०

० ० ०

वन्य पुरुष

पुल्लिंग - एकवचन -

छुती-

राजा रहत छुती तहं एक ।

(सू० ५।२।२८)

होत छुती जहाँ रुदन ।

(हरि० ४।४२।४)

घा० रह + -त + घा० छु + -गी

(सू०)

घा० हो + -त + घा० छु + -गी

(रत्ना०)

हो-

कमल-काज नृप ब्रज मारत हो ।

(सू० १०।६००।४)

० ० ०

धा० मार + -ति + धा० हो ७ह् + -बो

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

पुल्लिग -बहुवन -

-हुते -

गहन गृह पढ़त हुते ।

(सू० १०।३४११।२)

फिरत हुते जू जिन कुंजनि में ।

(उद्धव० ८।७)

धा० पढ़ + -त + धा० हु + -ए

(सूर)

धा० फिर + -ति + धा० हु + -ए

(रत्ना०)

० ० ०

(सू०)

सत्यव्रती हरिचंद हुते टहरत ।

(हरि० ४।१।२)

० ० ०

(सूर)

धा० हु + -ए क धा० टहर + -त

(रत्ना०)

० ० ०

(सू०)

अनंत ज्ञा जानत हुते ।

(र० ७।७।७)

० ० ०

(सूर)

धा० जान + -त + धा० हु + -ए

(रत्ना०)

हे -

निसि बासर छिन नहिं विहुरत हे ।

(सू० १०।३१५६।४)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० विहुर + -त + धा० हो ७ह् + -ए

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

आसु मोहिं बलराम कहत है ।

० ० ०

धा० कह + -त + धा० हो ७ह् + -ए

० ० ०

(सू० १०।३९९।४) -

(

(सूर)

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

ही-

जो मन में अभिलाष करति ही ।

० ० ०

धा० कर + -ति + धा० हो ७ह् + -है

० ० ०

(सू० १०।१२३।२)

(सूर)

(रत्ना०)

बैचति ही दधि ब्रज की लोरी ।

० ० ०

धा० बैच + -ति + धा० हो ७ह् + -है

० ० ०

(सू० १०।१६४३।१)

(सूर)

(रत्नाकर)

छुती -

चितवति छुती फरौं है ठाढ़ी ।

० ० ०

डोलति नवेली छुती सदन बगीची में ।

० ० ०

धा० चितव + -ति + धा० छुत् + -है

धा० डोल + -ति + धा० छुत् + -है

० ० ०

(सू० १०।८०८।५)

(शुं० १४।२)

(सूर)

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

हीं-

उतहिं जातिहीं सखी सहेली ।

० ० ०

(सू० १०।१४८२।५)

धा० जा + -ति + धा० हो ७ ह् + -इ (सूर)

० ० ० (रत्ना०)

सूर और रत्नाकर ने अपूर्ण भूतकाल में वर्तमानकालिक वृद्धन्तों के साथ "होना" सहायक क्रिया-पद के भूतकालिक रूपों का प्रयोग किया है। उ०म पुरुष के पुल्लिङ्ग-एकवचन में सूर ने "हुती", बहुवचन में "हुते" रूपों का प्रयोग दिया है। उ०म पुरुष पुल्लिङ्ग में रत्नाकर ने इन रूपों का प्रयोग नहीं किया है। स्त्रीलिङ्ग में एकवचन में सूर ने "ही" सहायक क्रिया-पद का प्रयोग किया है। रत्नाकर के काव्य में इस प्रकार के रूपों का अभाव है। "हुती" का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। बहुवचन में सूर ने "ही" का प्रयोग किया है तथा रत्नाकर ने "हुती" का प्रयोग एक साथ ही कर दिया है।

मध्यम पुरुष में पुल्लिङ्ग एकवचन में तो दोनों कवियों के काव्य में अपूर्ण भूतकाल का क्रिया-पद नहीं मिलता है। बहुवचन में "हुते" दोनों कवियों ने तथा "है" केवल सूर ने प्रयोग किये हैं। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में सहायक क्रिया-पद "ही" का प्रयोग सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने बहुत कम किया है। बहुवचन में दोनों ने ही इस प्रकार के प्रयोग नहीं किये हैं।

अन्य पुरुष में पुल्लिङ्ग एकवचन में "हुती" सहायक क्रिया-पद दोनों कवियों ने तथा "हो" केवल सूर ने प्रयोग किया है। बहुवचन में "हुते" सूर के कम तथा रत्नाकर ने अधिक प्रयोग किया है। "है" का प्रयोग सूर काव्य में ही मिलता है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में "ही" सूर ने "हुती" दोनों ने तथा बहुवचन में "ही" सूर ने प्रयोग किया है।

### ३-- पूर्ण भूतकाल

इस काल में भूतकालिक सामान्य क्रिया-पद के साथ सहायक क्रिया-पद "होना" के भूतकालिक रूप जो अपूर्ण भूतकाल में प्रयुक्त हुए हैं, होते हैं। इस प्रकार के क्रिया-पदों की संख्या सूर और रत्नाकर के काव्य में बहुत ही कम

मिलती है । रत्नाकर ने तो केवल अपवाद स्वरूप ही पूर्णभूतकालिक क्रिया-पद का प्रयोग किया है ।

उत्तम पुल्लिङ्ग -

पुल्लिङ्ग -एकवचन -

०४ हौ -

जायी हो निरगुन उपदेसन ।

(सू० १०।४०७९।२)

०                      ०                      ०

धा० जा + -यी + धा० हो + -ह् + -गी

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग - बहुवचन -

सुते -

०                      ०                      ०

(सू० )

सबरे पठाए जोग देन कीं सिधारे हुते ।

(उद्धव० १११।१)

०                      ०                      ०

(सूर)

धा० सिधा + -र + धा० सुत् + -ये

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

ही -

हाँ तो गई ही मान ब्रूवावन ।

(सू० १०।२७९०।१)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

धा० जा + ग + -ई + धा० हो + -ह् + -ई

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

स्त्री लिंग- बहुवचन -

०	०	०
०	०	०

मध्यम पुनश्च

पुल्लिंग- एकवचन -

हो-

राख्यो हो जठर माहिं ।

(सू० १।७७।४)

०	०	०
---	---	---

धा० राख् + राख् + -यो + धा० हो + रह् + -ओ (सूर)

०	०	०
---	---	---

(रत्ना०)

पुल्लिंग- बहुवचन -

०	०	०
०	०	०

स्त्री लिंग - एकवचन -

०	०	०
०	०	०

स्त्री लिंग - बहुवचन -

०	०	०
०	०	०

अन्य पुनश्च -

पुल्लिंग- एकवचन -

००छुछे छुतो-

वेठ्यो छुतो सिंहासन डारि ।

(सूर ६।५।५)

० ० ०

धा० वेठ् ॥ वेठ् + -यो + धा० छु + -यो

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मुल्लिं - वल्लुचन -

छुतो -

गर छुते मातन की चोरी ।

(सू० १०।१९८।२)

० ० ०

धा० जा ॥ ग + -ए + धा० छु + -ए

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

वेठे छुते सहित परिवार ।

(सू० १०।४३०९।२)

० ० ०

धा० वेठ् ॥ वेठ् + -ए + धा० छु + -ए

(सूर)

धा० ० ०

(रत्ना०)

स्त्री लिं - एकवचन -

छुती-

वेठी छुती जसोदा मंदिर ।

(सू० १०।५०।४)

वेठी छुती घाल जलवेणी ।

(सू० ५४।२)

धा० वेठ् ॥ वेठ् + -ई + धा० छु + -ई

(सूर)

धा० वेठ् ॥ वेठ् + -ई + धा० छु + -ई

(रत्ना०)

जाई छुती स्नान के वैत ।

(सू० १।२।५१)

० ० ०

(रत्ना०)

धा० जा + -ई + धा० छु + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

### स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

०	०	०
०	०	०

उत्तम पुरुष के पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने 'हो' बहुवचन में रत्नाकर ने 'हुते' स्त्रीलिङ्ग एकवचन में सूर ने 'ही' तथा बहुवचन में दोनों कवियों ने कोई भी पूर्णवर्तमानकालिक क्रिया-पद प्रयुक्त नहीं किया है। मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने 'हो' सहायक क्रिया-पद प्रयुक्त किया है। पुल्लिङ्ग बहुवचन तथा स्त्रीलिङ्ग के दोनों वक्तों में दोनों कवियों ने ही कोई पूर्ण भूतकाल का क्रिया-पद प्रयोग नहीं किया है। अन्य पुरुष में पुल्लिङ्ग एकवचन में 'हुती' बहुवचन में 'हुते' प्रयोग केवल सूर ने किये हैं। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में 'हुती' का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। बहुवचन में दोनों का कोई भी प्रयोग नहीं मिलता है।

### 'होनो' स्थितिदर्शक क्रिया-पद -

भूतकाल में 'होनो' क्रिया-पद स्वतंत्र रूप में प्रयुक्त हुआ है। इसको भूतकालिक रूप 'हो' तथा ढेरु हुते' धातुओं से ही बने हैं। सूर और रत्नाकर ने 'होनो' क्रिया-पद के विकृत रूपों को अपने काव्य में प्रयुक्त किया है।

### उत्तम पुरुष

#### पुल्लिङ्ग- एकवचन -

हो -

जहाँ मृतक हो ही ।

(सू० १। १५१। १६)

०	०	०
---	---	---

धा० हो + -वा

(सूर)

०	०	०
---	---	---

(रत्नाकर)



पहिले हों ही हो तब एक ।

(सू० २।३८।१)

० ० ०

(

घा० हो ४ + -ओ

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

पुल्लिंग- बहुवचन -

० ० ०

० ० ०

स्त्रीलिंग- एकवचन

- छती -

हों तौ छती मान ।

(शृ० ११०।१)

० ० ०

(सू०)

घा० छत् + ई

(रत्नाकर )

० ० ०

(सूर)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

छतीं -

समहुं छतीं अपनै जिय मोरी ।

(सू० १०।१९३१।३)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० छत् + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

मध्यम पुनश्च -

पुल्लिंग- एकवचन -

० ० ०

० ० ०

पुल्लिंग- बहुवचन -

०पुछे हुते-

बाबु निसि कहां हुते ।

(सू० १०।२६३९।१)

कहां हुते अबलौं ।

(हरि० ४।७९।४)

घा० हुत् + -ए

(सू०)

घा० हुत् + -ए

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - एकवचन -

हुती-

बूफति जननि कहां हुती प्यारी ।

(सू० १०।७०८।१)

०                      ०                      ०

घा० हुत् + -ई

(सू०)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

ही-

माता बहति कहां ही प्यारी ।

(सू० १०।६७७।५)

०                      ०                      ०

घा० हो + हु + -ई

(सू०)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

०                      ०                      ०

०                      ०                      ०

अन्य पुरुष

पुल्लिंग - एकवचन -

हुती-

हुती नहीं बस माकी ।

(सू० १।११३।३)

कव फनि-कुटकार सुती ।

(सू० ६०।३)

घा० हुन् + -जो

(सुर)

घा० हुन् + -जो

(रत्ना०)

छुतीं नहीं बस ताकी ।

(सू० १।११३।९)

कहे रतनाकर जो रोखनी छुती ।

(र० ७।३।३)

घा० हुन् + -जो

(सुर)

घा० हुन् + -जो

(रत्ना०)

-हो

कहा सुदामा कै घन हो ।

(सू० १।१९।५)

० ०

घा० हो + -जो

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग - बहुवचन -

हते-

जब हते नंद दुलारे ।

(सू० १।२५।५)

० ० ०

घा० हुन् + -ए

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

अरुन के हरि हुतै सारथी ।

(सू० १।२६।७)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० हुन् + -ए

(सुर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हे

जाके जाँघा हे सौ माहँ ।

(सू० १।२४।५)

० ० ०

घा० हो ७ ह् + -स

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

ही-

कहाँ ही और वो ही ।

(सू० १०।१४००।४)

० ० ०

घा० हो ७ ह् + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

कहाँ ही और वो ही ।

(सू० १०।१४००।४)

० ० ०

घा० हो ७ ह् + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

छुती-

लाज के साज में छुती ज्यों ब्रौपदी ।

(सू० १।५।७)

लहर जो चहुं धाँ छुती ।

(र० १०।५।९)

घा० छुत् + -ई

(सूर)

घा० छुत् + -ई

(रत्ना०)

जमा छुती जो जोरि ।

(सू० १।१४३।२)

यों सती छुती ।

(प्र० १७।११।७)

घा० छुत् + -ई

(सूर)

घा० छुत् + -ई

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

छुतीं -

छुतीं जिति जा में जयमाहे ।

(सूर० १।१३०।३)

०	०	०	
घा०	छु + -ई		(सूर)
०	०	०	(रत्नाकर)
गोपी	छुतीं प्रेम-रस-माती ।		(सू० १०।१२०८।२)
०	०	०	(रत्ना०)
घा०	छु + -ई		(सूर)
घा०	० ०	०	(रत्नाकर)
कमलनि	छुतीं हेब ज्यो ।		(सू० १०।३३७३।४)
०	०	०	
घा०	छु + -ई		(सूर)
०	०	०	(रत्ना०)

भूतकाल में स्थितिदर्शक 'होनों' क्रिया-पद का इप सूर ने उद्यम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में 'हो' प्रयोग किया है। रत्नाकर ने इसका प्रयोग नहीं किया है। बहुवचन में दोनों कवियों ने इस क्रिया-पद का कोई भी इप प्रयोग नहीं किया है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में 'छुती' बहुवचन में 'छुतीं' केवल सूर ने प्रयोग किया है, रत्नाकर ने नहीं। मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में दोनों कवियों द्वारा 'जोनों' क्रिया-पद का कोई इप नहीं मिलता है। बहुवचन में 'छुते' का प्रयोग दोनों के काव्य में मिलता है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में 'छुती' तथा 'ही' का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। बहुवचन में दोनों कवियों के प्रयोगों का अभाव है। अन्य पुरुष, पुल्लिङ्ग एकवचन में 'छुती' का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है तथा 'हो' का प्रयोग केवल सूर के काव्य में ही मिलता है। बहुवचन में 'छुते' तथा 'हो' एप भी केवल सूरकाव्य में मिलते हैं। रत्नाकर के काव्य में ये एप नहीं मिलते हैं। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में 'ही' का प्रयोग केवल सूर ने किया है। 'छुती' का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। बहुवचन में 'छुतीं' का प्रयोग केवल सूर ने ही किया है। रत्नाकर के काव्य में इस प्रकार के प्रयोगों का अभाव है।

अध्याय- पंचम

शूर और रत्नावर

के

मविष्यत्कालिक क्रिया-पदों की तुलना

### सामान्य भविष्यत् काल

सूर और रत्नाकर ने धातु में या उसके विकृत रूपों में भविष्यत्कालिक प्रत्यय लगाकर भविष्यत्कालिक क्रिया-पद बनाये हैं। इस काल के अंतर्गत क्रिया का सामान्य रूप प्रयोग किया गया है।

#### उत्तम पुरुष

##### पुल्लिंग- एकवचन -

- इहाँ

जाऊ हों एक-एक करि टरिहों ।

(सू० १।१३४।१)

करिहों पुरन जस पाइ बाजी नहिं जखलीं ।

(गंगा० २।११।२)

धा० टर ७ टर् + -इहाँ

(सूर)

धा० कर ७ कर् + -इहाँ

(रत्ना०)

अपुन मारीसैं लरिहों ।

(सू० १।१३४।२)

०            ०            ०

धा० लर ७ लर् + -इहाँ

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

पतिते ह्वै निस्तरिहों ।

(सू० १।१३४।३)

०            ०            ०

धा० निस्तर ७ निस्तर् + -इहाँ

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

-उंगी

जीवन-दान लेउंगी तुमसी ।

(सू० १०।१४६९।१)

० ० ०

घा० ले + -उंगी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऊंगी

रेनि तुम्हारि बाऊंगी ।

(सू० १०।२४९३।१)

० ० ०

घा० बा + -ऊंगी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

तऊ बाइ सुख पाऊंगी ।

(सू० १०।२४९२।२)

० ० ०

घा० पा + -ऊंगी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

जीवन सफल कराऊंगी ।

(सू० १०।२४९२।५)

० ० ०

घा० क्रा + -ऊंगी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऐहीं

दसरथ सुत नु कऐहीं ।

(सू० ९।११३।४)

पंच तत्त्व में मिलेहीं में ।

(बी० २।२।६)

घा० कह ८ कह् + -ऐहीं

(सू)

घा० मिल ८ मिल् + -ऐहीं

(रत्नाकर)

लेहीं दान सब ओ ओ की ।

(सू० १०।१४७५।१)

परमार्थ नऐहीं में ।

(बी० २।२।२)



घा० ले ल + -रहैं

(सूर)

घा० नस ल नस् + -रहैं

(रत्ना०)

मैं केहीं जकनी समुकाई ।

(सू० १०।१४२५।६)

जहाँ अब सिधेहीं मैं ।

(वी० ४।३।४)

घा० कह ल क् + -रहैं

(सूर)

घा० सिध ल सिध् + -रहैं

(रत्नाकर)

- बींगी

दुहोंगी नंद दुहाई ।

(सू० १०।६६८।४)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० दुह ल दुह् + -बींगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-बींगी

भैया री मैं चंद लहोंगी ।

(सू० १०।१९४।१)

० ० ०

घा० लह ल लह् + -बींगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

बरज्यो हों न रहोंगी ।

(सू० १०।१९४।४)

० ० ०

घा० रह् रह ल रह् + -बींगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

बोराहं न वरहोंगी ।

(सू० १०।१९४।५)

० ० ०

घा० वह ल वह् + -बींगी

(सूर)

घा० ० ०

(रत्नाकर)

- व

(मैं) भूजव क्योँ यह खेत ।

(सू० ९।३९।४)

० ० ०

घा० मूंज + -ब

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

- छुंती

दान लेछुंती मरि दिव दिन कौ ।

(सू० १०।१५३८।३)

० ० ०

घा० ले + -छुंती

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिं- बहुवन -

-इहैं

जाचु हम आइहैं गैह तुव ।

(सू० १०।२७०५।२)

रखिहैं मिच्छा असन ।

(हरि० ३।५३।३)

घा० जा + -इहैं

(सूर)

घा० रख ५ रख + -इहैं

(रत्नाकर)

भुख लागि भोजन हम करिहैं ।

(सू० १०।३०१४।४)

सहिहैं बैसैं हाय चोट ।

(हरि० ४।५९।२)

घा० कर ५ कर + -इहैं

(सूर)

घा० सह ५ सह + -इहैं

(रत्ना०)

कहिहैं तृप आगैं ।

(सू० १०।३०३९।६)

करिहैं सो सब जो आज्ञा खेहे ।

(हरि० ३।५०।४)

घा० कह ५ कह + -इहैं

(सूर)

घा० कर ५ कर + -इहैं

(रत्ना०)

-हैंगे

सूर स्याम कह्यौ काटिह दुहैंगे ।

(सू० १०।६६८।६)

कहे रतनाकर रहैंगे खे तिसारे भृत्य ।

(श्री ११।८)

घा० दुह् ∪ वृह् + -एँगे ।

(सूर)

घा० रह् ∪ रृह् + -एँगे ।

(रत्नाकर)

जाजु बसँगे रेनि तिहारँ ।

(सू० १०।२४७८।२)

हमहँ कृत्तानि की न हाँडिँ ।

(घी० ११।८)

घा० वस् ∪ वृस् + -एँगे

(सूर)

घा० खाँड् ∪ खाँड् + -एँगे

(रत्नाकर)

हम जावँगे दोऊ भैया ।

(सू० १०।३४३८।२)

हम बार किमि जाड़िँगे ।

(घी० ११।२)

घा० खख् ∪ जाव् + -एँगे ।

(सूर)

घा० खाड़् ∪ खाड़् + -एँगे ।

(रत्ना०)

खेखँ -खेखँ

तप की-हँ सौ देहँ जाग ।

(सू० ९।२।७५)

खण्ण सुद्धा सब देहँ ।

(हरि० २।२३।१)

घा० दे ∪ दृ + -खेहँ

(सूर)

घा० दे ∪ दृ + -खेहँ

(रत्ना०)

तुमहिँ बिना व्याकुल हम ह्वेहँ ।

(सू० १०।३४५१।२)

कसन-हित केवल लेहँ ।

(हरि० ३।५३।३)

घा० हो ∪ ह्व् + -खेहँ

(सूर)

घा० ले ∪ ल् + -खेहँ

(रत्नाकर)

-ह्विँ

देखहिँ तुम्हरी अधिकाहँ ।

(सू० १०।६६८।५)

० ० ०

घा० देख् + -ह्विँ

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

नृपति पास हम जाहिं ।

(सू० १०।३०३८।४)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० जा + -हिं

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

बावहिं दिन चारि-पाँच में ।

(सू० १०।३४७३।२)

० ० ०

घा० बाव + -हिं

(सू)

घा० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - एक्कन

-इहाँ

में जाहें उनको डरिहीं री ।

(सू० १०।२३१९।५)

करिहीं कहाँ थीं ।

(र० ९।३।३)

घा० डर + -इहाँ

(सू)

घा० कर + -इहाँ

(रत्ना०)

पद पूजिहाँ बेगि यह बालक करिदे मोहिं बडोछ । (सू० १०।५६।३)

ठरिहीं०ठरिहीं०ठरिहीं०

धीर धरिहीं कहाँ लीं बीर ।

(र० ९।३।३)

घा० पूज + -इहाँ

(सू)

घा० धर + -इहाँ

(रत्ना०)

बाहं पकरि सन्मुख लरिहीं री ।

(सू० १०।२३१९।२)

० ० ०

घा० लर + -इहाँ

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

-ऊंगी

ल्याऊंगी तुमको धरि ।

(सू० १०।६८१।२)

० ० ०

घा० ला ॥ त्या + -ऊंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

गाऊंगी कल कीरति तेरी ।

(सू० १०।३३४।८)

० ० ०

घा० वा + -ऊंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-जांगी

सूरदास तन योउव करौंगी ।

(सू० १०।३१९६।६)

फिर न करौंगी मान प्रानहुं गए थे ।

(शु० १३५।७)

घा० कर ॥ कर् + -जांगी ।

(सूर)

घा० कर ॥ कर् + -जांगी ।

(शु० १३५।७)

कब वह मुख बछौ देखौंगी ।

(सू० १०।३०११।३)

तिहरि गुन गायन करौंगी नित ।

(शु० ९२।५)

घा० देख ॥ देख् + -जांगी

(सूर)

घा० कर ॥ कर् + -जांगी

(रत्नाकर)

ऐसे बचन कहौंगी इन सों ।

(सू० १०।१७३।४)

० ० ०

घा० कह ॥ कह् + -जांगी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

-इहें

कहिहें न चरनन देन जावक ।

(सू० १०।३२२८।७)

सहिहें तिहारै कहें साँसति सबे ।

(उद्धव० ६२।७)

घा० कह ५ कह् + -इहें

(सूर)

घा० सह ५ सह् + -इहें

(रत्ना०)

करिहें न कब्य हूं मान हम ।

(सू० १०।३२२८।९)

आं रहित जराधि करिहें कहा ।

(उद्धव० ४६।८)

घा० कर ५ कर् + -इहें

(सूर)

घा० कर ५ कर् + -इहें

(रत्ना०)

जातु भेटिहें तुम्हारी लंगरी ।

(सू० १०।१४१६।५)

जोति कौं जगह जरिहें कहा ।

(रत्ना०- उद्धव० ४६।४)

घा० भेट ५ भेट् + -इहें

(सूर)

घा० जर ५ जर् + -इहें

(रत्ना०)

-हेंगी

वैसेहें हम मान करेंगी ।

(सूर० ३७९५।५)

हम न कहेंगी तुम लाल कहिबौ करी ।

(उद्धव० ४५।८)

घा० कर ५ कर् + -हेंगी

सूर

घा० कह ५ कह् + -हेंगी

(रत्ना०)

तब चरित्र हम हीं देखेंगी ।

(सू० १०।२५३५।५)

काहु ती जनम में मिलेंगी स्याम सुंदर कों ।

(उद्धव० ५२।५)

घा० देख ५ देख् + -हेंगी

(सूर)

घा० मिल ५ मिल् + -हेंगी

(रत्ना०)

-ऐहें

हम देहें जब गारि ।

(सू० १०।२८८३।३)

प्रा० काहु बिधि देहें ।

(हरि० ४।६८।२)

घा० दे ५द् + -ऐहें

(सूर)

घा० दे ५द् + -ऐहें

(रत्ना०)

केहें जार जसोदा सों ।

(सू० १०।१४८३।६)

काकें हित हम जसन बनेहें।

(हरि० ४।६७।१)

घा० कह ५क् + -ऐहें

(सूर)

घा० बन ५बन् + -ऐहें

(रत्ना०)

कहा जार लेहें हम व्रज ।

(सू० १०।१०२१।२)

यह अपिमान तो गवेहें ना ।

(उद्धव० ६०।७)

घा० ले ५ल् + -ऐहें

(सूर)

घा० गवा ५गव् + -ऐहें

(रत्ना०)

-ब

तेहें करव उपाह ।

(सू० १०।३७१०।५)

० ० ०

(

घा० कर + -ब

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हिंगि

दाव हम लेहिंगि हो ।

(सू० १०।२८७७।१)

० ० ०

घा० ले + -हिंगि

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

वहे फल देखिगी हो ।

(सू० १०।२८७७।२)

० ० ०

घा० दे + -हिंनि

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

मानहिंनि उपकार रावरी ।

(सू० १०।७९२।३)

घा० मान + -हिंनि

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

० ० ०

(रत्ना०)

### मध्यम सुकष

पुल्लिङ्ग- एकवचन

-इहे

हमरें कहा देखिहे रे तू ।

(सू० १०।३८७३।३)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० देख ५ देख् + -इहे

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

भरें अस्पसं देवतन धरिहे ।

(सू० ८।२।५)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० धर ५ धर् + -इहे

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

तैं हूं जो हरि-चित्त तप करिहे ।

(सू० ४।९।२४)

० ० ०

घा० कर ५ कर् + -इहे

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हेगी

बीतैगी तबसीं जानैगी ।

(सू० १०।३६१३।२)

० ० ०



धा० जान ७ जान् + -ऐगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

जो रे करीगी गांसी ।

(सू० १०।३६३१।५)

० ० ०

धा० कर ७ कर् + -ऐगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पाविगी धुनि कियी आपनी ।

(सूर० १०।३६३१।५)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० पाव ७ पाव् + -ऐगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऐहे

संतनि में कटु पेहे ।

(सू० १।८६।१०)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० पा ७ प् + -ऐहे

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

तु नारायन सुमिरन कैहे ।

(सू० ८।२।८)

० ० ०

धा० कह ७ क् + -ऐहे

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

जब गजेन्द्र को पा तु गैहे ।

(सू० ८।२।४)

० ० ०

धा० गह ७ ग् क -ऐहे

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

पुल्लो- बहुवचन -

- एही

जीवित रहिही को लीं भुपर ।

(सू० १।२८४।२५)

एही कुहराज जो न मानिही हमारी आज

(वी० १।५।७)

घा० रह ७ रह् + -रही

(सूर)

घा० मान् ७ मान् + -रही

(रत्ना०)

तो जानीं जो मोहिं तारिही ।

(सू० १।१३२।८)

० ० ०

घा० तार ७ तार + -रही

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

कौन गति करिही मेरी नाथ ।

(सू० १।१२५।१)

० ० ०

घा० कर ७ कर + -रही

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-उगे

वव तुम काकी नाउं लेउगे।

(सू० १०।२७९।४)

० ० ०

घा० ले + -उगे

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऐंगे

० ० ०

(सू० )

छाडेंगे न कान्ह आप

(श्री ११।७)

० ० ०

(सूर)

घा० छांड ७ छांड + ऐंगे

(रत्नाकर)

-ऐही

को लों घों मू खेही ।

(सू० १।३३१।४)

कौन पे अस्त्र चलही।

(गंगा० १।३६।३)

घा० खा ७ ख + -ऐही

(सूर)

घा० चल ७ चल् + ऐही

(रत्ना०)

कियो आपुनो पेहो ।

(सू० १।३३१।७)

बुथा कलु लाम न पेहो ।

(गंगा० १।३६।४)

घा० पा ५ + -रेहो

(सूर)

घा० पा ५ + -रेहो

(रत्नाकर)

तव कह मूढ छुहो ।

(सू० १।३३१।५)

० ० ०

घा० दु ५ + -रेहो

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ओगे

सेलीगे किहिं टाहर

(सू० १०।२४३।६)

वाढे पे रहीगे साढे वाहस ही जाच ह्वे ।

(उद्धव० ७९।४)

घा० सेल ५सेल् + -ओगे

(सूर)

घा० रह ५रह् + -ओगे

(रत्नाकर)

वजहं छाडीगे लोराहं ।

(सू० १०।३७०।४)

० ० ०

घा० छाड ५ छाड् + -ओगे

(सूर)

घा० ० ०

(रत्नाकर)

-छो

अपनो विरद सम्हार छो ।

(सू० १।१३०।१२)

० ० ०

घा० सम्हार + -छो

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

सूर प्रभु कह जाछो अब ।

(सू० १०।२८७।१६)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० जा + -छो

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

कहा देखो मोहि ।

० ० ०

(सू० १०।२८७।७)

(रत्नाकर)

घा० दे + -हो

० ० ०

(सू)

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- एकवचन

-येगी

विनु दें तू कहा करेगी ।

० ० ०

(सू० १०।७११।३)

घा० कर + -येगी

० ० ०

(सू)

(रत्नाकर)

मोहि कहति नहि, काहि कहेगी ।

० ० ०

(सू० १०।२७२।२)

घा० कह + -येगी

० ० ०

(सू)

(रत्नाकर)

कबलीं बात लुकावेगी ।

० ० ०

(सू० १०।२७२।२)

घा० लुकाव + -येगी

० ० ०

(सू)

(रत्नाकर)

-ऐहै

मांगेतें कह देहै री ।

० ० ०

(सू० १०।७११।४)

घा० दे + -ऐहै

० ० ०

(सू)

(रत्नाकर)

पुनि पाहीं पछितैहै री ।

० ० ०

(सू० १०।७११।५)

धा० पड़िता ८ पड़ित् + -रहे

० ० ०

और वैसे नैरी।

० ० ०

धा० बस ८ बस् + -रहे

० ० ०

स्त्रीलिंग- वल्लवन

-रहे

० ० ०

कौन काज तुम पाहिं निकलिहें ।

० ० ०

धा० निकल ८ निकल् + -रहे

-रही

जब सुनिहो करतूति हमारी ।

० ० ०

धा० सुन ८ सुन् + -रही

० ० ०

तुम तो सब मरिही ।

० ० ०

धा० मर ८ मर् + -रही

० ० ०

विना कष्ट यह फल न पाएही।

० ० ०

धा० पा + -रही

० ० ०

(सुर)

(रत्ना०)

(सू० १०।३२४।४)

(सुर)

(रत्ना०)

(सू०)

(हरि० ३।२४।४)

(सुर)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३३२।१)

(सुर)

(रत्नाकर)

(सू० १०।१३४२।३)

(सुर)

(रत्नाकर)

(सू० १०३८।३)

(

(सुर)

(रत्नाकर)

-ऐही

तब मन-मन तुमहीं पछितेही ।

(सू० १०।१३३२।२)

फेरि पछिते ही परी बानि यह ।

(सू० १३३।४)

घा० पछिता ५ पछित् + -ऐही

(सूर)

घा० पछिता ५ पछित् + -ऐही

(रत्ना०)

नैकु दरस की आस है, तासुतै जेही ।

(सू० १०।१३४३।४)

० ० ०

घा० जा ५ ज् + -ऐही

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

ना ती लघु खेही ।

(सू० १०।१३४३।३)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० हो ५ ह्व् + -ऐही

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ओगी

कत मानहु मम तरीगी ।

(सूर० १०।१०१६।३)

० ० ०

घा० तर ५ तर् + -ओगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

तुम अपने जो नेम रहीगी ।

(सू० १०।१३४४।८)

० ० ०

घा० रह ५ रद् + -ओगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मैं यह कहों, सुनीगी तुमहीं ।

(सू० १०।१३३२।५)

० ० ०

घा० सुन ५ सुन् + -ओगी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-छुगि

ऐसेहिं बैसरि लेछुगि सब महं अयानी ।

(सू० १०।१९५३।६)

०            ०            ०

धा० ले + -छुगि

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

बाद करति अवहीं रोवछुगि ।

(सू० १०।१४८०।४)

०            ०            ०

धा० रो + -छुगि

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

अन्य पुनश्च

पुल्लो - एकवचन -

-इ

सप्तम दिन तोहिं तच्छक खाइ ।

(सू० १।२९०।५९)

०            ०            ०

धा० खा + -इ

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

वन में भजन कीन विधि होइ ।

(सू० १।२८४।३२)

०            ०            ०

धा० हो + -इ

(सूर)

०            ०            ०

(रत्ना०)

-छगी

मन बिछुरैं तन छार होछगी ।

(सू० १।३०२।२)

०            ०            ०

धा० हो + -छगी

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

करैं तप निरफलहिं जाहणी ।

(सू० १०।१३४८।६)

० ० ०

घा० जा + -हणी

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हहि

काकी ध्वजा बैठि कपि बिलकिहि ।

(सू० १।२९।१६)

० ० ०

घा० बिलक ५ बिलक् + हहि

(सूर)

० ० ०

(रत्ना०)

-हहै

मरिहै असुर ताहिं घाउ ।

(सू० ६।५।३७)

कर बिनु करैं गाह दुहिहै ।

(उद्धव० ४७।१)

घा० मर ५ मर + -हहै

(सूर)

घा० दुह ५ दुह + -हहै

(रत्नाकर)

बरन जाहहै तुरंत ।

(सू० ९।७४।५)

कोन घौं हमारे काम जाह है ।

(उद्धव० ४७।८)

घा० जा + -हहै

(सूर)

घा० जा + -हहै

(रत्ना०)

किहिं मय ब्रजन डरिहै ।

(सू० १।२९।१६)

कहा करिहै कमलासन ।

(गंगा० ७।६।४)

घा० डर ५ डर + -हहै

(सूर)

घा० कर ५ कर + -हहै

(रत्ना०)

-हणी

तो सौं उत्तर कोन करेगी ।

(सूर० १०।३६१९।१)

पारथ विचारो पुनसारथ करेगी कहा ।

(वी० २।२।१)



धा०	कर ८ कर् + ऐगी	(सू०)
धा०	कर ८ कर् + -ऐगी	(रत्नाकर)
	को इन बातनि सुर डरेगी ।	(सू० १०।३६१९।६)
	दीठि चंडाने पे पारंगी ।	(प्र० ७।३।४)
धा०	डर ८ डर् + -ऐगी	(सू०)
धा०	पार ८ पार + -ऐगी	(रत्नाकर)
	ऊँची पानी कीन ठहेगी ।	(सू० १०।३६१९।१)
	विपच्छिनि के पच्छनि कों छारंगी ।	(प्र० ७।३।६)
धा०	ठह ८ ठह् + -ऐगी	(सू०)
धा०	छार ८ छार् + -ऐगी	(रत्नाकर)
-ऐहे		
	माह माह कहि मोहिं सुनेहे ।	(सू० ९।८१।३)
	जहि तहाँ को तब ।	(वी० ४।३।४)
धा०	सुन ८ सुन् + -ऐहे	(सू०)
धा०	जा ८ ज् + -ऐहे	(रत्ना०)
	होसहिं लै दस सीस चढ़ेहे ।	(सू० ९।८१।७)
	कहो निज सत्य निखेहे ।	(हरि० १।३३।४)
धा०	चढ़ ८ चढ़े ८ चढ़े ८ चढ़ + -ऐहे	(सू०)
धा०	निबाह निब् + -ऐहे	(रत्नाकर)
	त्रास अकूर जिय कहा केहे ।	(सू० १०।२९२९।३)
	अबकैं हमारें गाव गोधन पुजेहे को ।	(उद्धव० ८७।२)
धा०	कह ८ क् + -ऐहे	(सू०)
धा०	पुज ८ पुज् + -ऐहे	(रत्नाकर)
-हिंमो		
	क्यों विस्वास करहिनी कौरनी	(सू० ११।१।६)

घा०      कर् + - हिगी

(सू)

०                      ०                      ०

(रत्ना०)

पुत्तिंग - वद्धचन -

-हैं

कस वयन येहँ करिहँ ।

(सू० १०।८५।७)

दिव्य लीकनि मै बसिहँ ।

(गंगा० १२।२७।४)

घा०    कर् ५ कर् + -हैं

(सू)

घा०    कस ५ कस् + -हैं

(रत्ना०)

निवसत छस प्रेत कहि तजिहँ ।

(सू० १।३१९।६)

द्वितीं हमारे बनस्याम हठिहँ नहीं ।

(उद्धव० ५९।८)

घा०    तज ५ तज् + -हैं

(सू)

घा०    हट ५ हट् + -हैं

(रत्ना०)

कचहिं कमल - मुख बोलिहँ ।

(सू० १०।७४।४)

प्यारे परदेस तें कब घौ पा पारिहँ ।

(उद्धव० ३६।२)

घा०    बोल ५ बोल् + -हैं

(सू)

घा०    पार ५ पार + -हैं

(रत्ना०)

-हैंगे

ऐसेहिं तुमहिं मिलीं ।

(सू० १०।१३४५।२)

बाज बड़े भागनि मिलींगे ब्रजराज ।

(शुं० ४८।१)

घा०    मिल ५ मिल् + -हैंगे

(सू)

घा०    मिल ५ मिल् + -हैंगे

(रत्ना०)

बाबा नंद लुगै मानै ।

(सू० १०।४४५।७)

सह साखि साखि मानै ।

(र० ३।२।४)

धा० मान ८ मान् + -हेंगे

(सूर)

धा० मान ८ मान् + -हेंगे

(रत्ना०)

जब आविगे दोउ भाई ।

(सूर० १०।३४४०।७)

लोक सबल वखानों ।

(र० ३।२।२)

धा० बाढ ८ बाव् + -हेंगे

(सूर)

धा० बखान ८ बखान् + -हेंगे

(रत्ना०)

-हैं

और ग्वाल सब गाछ चीहें ।

(सू० १०।४२०।५)

मानहुं पयान माहिं बिनब लीहें ना ।

(वी० ४।७।४)

धा० चर ८ चर् + -हैं

(सूर)

धा० लग ८ लग् + -हैं

(रत्ना०)

स्यार-काग-गिघ खैं ।

(सू० १।८६।३)

जीवै सक-पूत प्रन पालत लखैं ना ।

(वी० ४।७।६)

धा० खा ८ ख् + -हैं

(सूर)

धा० लख ८ लख् + -हैं

(रत्ना०)

पुछुप लेन जैं नंद कोटा ।

(सू० १०।५२२।६)

० ० ०

धा० जा ८ ज् + -हैं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हैं

जाति-पाति के लोग खैं ।

(सू० १०।१५५७।४)

० ० ०

(रत्नाकर)

खैं धा० हंस + -हैं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

हमा कहिँ श्री सुंदर बर ।

(सू० १०।१४६।६)

० ० ०

धा० कर + -हिँ

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

जीतहिँ रिपु जाज रंग रन ।

(सू० १०।३०३६।७)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० जीत + -हिँ

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग-एवमचन -

-हगी

दूरि कौन सौ होहगी ।

(सू० १०।१२५२।६)

० ० ०

धा० हो + -हगी

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हहै

छब जननि करिहै सोग ।

(सू० १०।३४४१।४)

० ० ०

धा० कर + -हहै

(सू०)

० ० ०

(रत्ना०)

जब न व्यापिहै माया ।

(सू० १।२२६।२६)

० ० ०

धा० व्याप + -हहै

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऐंगी

बुझतहीं कहु बुद्धि रचैगी ।

(सू० १०।१९५०।४)

रुधिर सौं रुधैगी घरा ।

(वी० १।२२६।२६)

घा० रच ५ रच् + -ऐंगी

(सू)

घा० रुधं ५ रुध् + -ऐंगी

(रत्ना०)

कहुं राधिका मान करैगी ।

(सू० १०।२५२५।४)

० ० ०

घा० कर ५ कर् + -ऐंगी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

भारैगी काहु की गैया ।

(सू० १०।१५५।४)

० ० ०

घा० भार ५ भार् + -ऐंगी

(सू)

० ० ०

(रत्ना०)

-ऐहै

सीता सरबस बारि बधाई-देहै ।

(सू० ९।८१।८)

गंग गरवि तव सुता कहैहै ।

(गंगा० १२।३०।१)

घा० दे ५ द् + -ऐहै

(सू)

घा० कह ५ कह् + -ऐहै

(रत्नाकर)

हरषि जानकी हृदय लोहै ।

(सू० ९।८१।२)

० ० ०

घा० लग ५ लग् + -ऐहै

(सू)

घा० ० ०

(रत्ना०)

बधु -बधु कहि मोहिं लोहै ।

(सू० ९।८१।४)

० ० ०

धा० बुल ८ बुल् + -रहे  
० ० ०

(सूर)  
(रत्नाकर)

-हिंगी

टूटहिंगी मोतिनि तर मैरी ।  
० ० ०

(सू० १०।१६७०)

धा० टूट + -हिंगी  
० ० ०

(सूर)  
(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन -

-हैं

तरिहैं मगिनी माई ।  
धवल धार सागर में धसिहैं ।  
धा० लर ८ लर् + -हैं  
धा० धस ८ धस् + -हैं

(सू० १०।१४१७।२)

(गंगा० १२।२७।३)

(सूर)

(रत्ना०)

बहु मिलिहैं मा माहि ।  
० ० ०

(सू० १०।४४३।५)

धा० मिल ८ मिल् + -हैं  
० ० ०

(सूर)

(रत्नाकर)

-हेंगी

चोर कहेंगी मोकों।  
० ० ०

(सू० १०।२०४६।२)

धा० कह ८ कर् + -हेंगी  
० ० ०

(सूर)

(रत्नाकर)

बै सुनिके रिस पावेंगी ।  
० ० ०

(सू० १०।२५३८।५)

(रत्नाकर)

धा० पाठ ७ पाव् + -एंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

बहुते मन न मिलावेंगी ।

(सू० १०।२४३८।६)

० ० ०

धा० मिलाव् ७ मिलाव् + -एंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हिंंगी

वे मरहिंंगी अकुलाह ।

(सू० ११।२।१०)

० ० ०

धा० मर + -हिंंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

सामान्य भविष्यत् काल के उत्तम पुरुष, पुल्लिङ्ग -एकवचन में सूर ने "इहों", "उंगी", "ऊंगी", "एहों", "आंगी", "आंगी", "ब" तथा "छुंगी" प्रत्ययों के योग से क्रिया-पद बनाये हैं। रत्नाकर ने "ऊंगी", "ऊंगी", "आंगी", "आंगी", "ब" तथा "छुंगी" प्रत्ययों का योग क्रिया-पदों में नहीं किया है। "इहों" का प्रयोग बहुत कम मिलता है। "ऐहों" प्रत्यय का प्रयोग रत्नाकर न पर्याप्त संख्या में किया है। बहुवचन में रत्नाकर ने "हिंंगी" प्रत्यय को जोड़कर क्रिया-पद नहीं बनाए हैं। "इहें", "हें", "ऐहें" आदि प्रत्ययों का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। इन प्रयोगों में दोनों कवियों के क्रिया-पद समान रूप से मिलते हैं। स्त्री लिंग एकवचन में "इहों" तथा "आंगी" प्रत्ययों का प्रयोग एक जैसा मिलता है। इनका प्रयोग सूर ने रत्नाकर की अपेक्षा अधिक संख्या में किया है। "ऊंगी" प्रत्यय का प्रयोग सूर के क्रिया-पदों में मिलता है। बहुवचन में "ऐंगी", "ऐहें" का प्रयोग समान तथा "ब", "हिंंगी"

का प्रयोग केवल सूर के क्रिया-पदों में मिलता है। रत्नाकर के काव्य में इन प्रयोगों का अभाव है।

मध्यम पुरुष के पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग के एकवचन में सूर के प्रयोग तो पर्याप्त संख्या में मिलते हैं लेकिन रत्नाकर के काव्य में इन रूपों का पूर्णतः अभाव है। पुल्लिङ्ग बहुवचन में "इही", "ऐही", "औगे" प्रत्ययों के योग से बने क्रिया-पद दोनों कवियों ने बनाये हैं। इनमें सूर के क्रिया-पदों की संख्या अधिक है। "उंगे", "छी" प्रत्ययों का प्रयोग सूर काव्य में तो मिलता है। परन्तु रत्नाकर के काव्य में नहीं। "हंगे" प्रत्यय के योग से रत्नाकर ने तो क्रिया-पद बना दिया है लेकिन सूर काव्य में इसका प्रयोग नहीं मिलता है। स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में "इही", "औगी", "छी" प्रत्ययों का प्रयोग सूर ने तो किया है, रत्नाकर ने नहीं। "ऐही" प्रत्यय से सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने बहुत कम क्रिया-पद बनाये हैं। "इहें" का प्रयोग सूर काव्य में न मिलकर रत्नाकर काव्य में उदाहरण स्वरूप मिलता है।

अन्य पुरुष के पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने "इ", "छी", "इहि", "छी" का प्रयोग किया है। रत्नाकर ने इन प्रत्ययों का प्रयोग अपने क्रिया-पदों में नहीं किया है। "इहे", "ऐगी", "ऐहे" आदि प्रत्ययों को जोड़कर दोनों कवियों ने समान रूप से क्रिया-पदों की रचना की है। बहुवचन में "इहें", "ऐहें" का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। "छी" प्रत्यय सूर के ही क्रियापदों में मिलता है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में "छी", "इहि", "छी" का प्रयोग सूर ने किया है, रत्नाकर ने नहीं। "ऐगी", "ऐहे" का प्रयोग सूर ने अधिक तथा रत्नाकर ने कम किया है। बहुवचन में "ऐगी", "ऐहि" का प्रयोग केवल सूर के क्रिया-पदों में मिलता है। "इहें" का प्रयोग दोनों कवियों के क्रिया-पदों में संख्या की दृष्टि से असमान मिलता है।



अध्याय- षष्ठम्

वाच्य की दृष्टि से सूर बीर रत्नाकर  
के  
प्रिया-पदों की तुलना

### वाच्य की दृष्टि से सूर और रत्नाकर के क्रिया-पदों की तुलना

कर्तृवाच्य में प्रयुक्त क्रिया-पद का पुरुष, लिंग और वचन कर्ता के अनुसार होता है। वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार के क्रिया-पद कर्तृवाच्य में प्रयुक्त होते हैं। इस वाच्य में भूतकाल में केवल अकर्मक क्रिया-पद प्रयोग होता है।

#### वर्तमान काल -

##### पुल्लिंग-एक वचन -

-उं

सनमुख होत लजाउं ।

(सू० १।१२८।३)

०            ०            ०

धा० लजा + -उं

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

-ऐ

जाकी कृपा फं० गिरि लै० ।

(सू० १।१।२)

भयंकर दूरहि भाजि ।

(कल० २।४)

धा० लै० ५ लै० + -ऐ

(सूर)

धा० भाज ५ भाज् + -ऐ

(रत्ना०)

सो जानि जो पावे ।

(सू० १।२।४)

साँस घूँटि बूढ़े कीन ।

(उद्धव० ४३।५)

धा० जान ५ जान् + -ऐ

(सूर)

धा० बूढ़ ५ बूढ़् + -ऐ

(रत्नाकर)

-औं

ना जानों वह जोग ।

(सू० १०।४०५७।८)

इहां सक्षेप बखानों ।

(हरि० १।५।३)

धा० जान ५ जान् + -औं

(सूर)

धा० बखान ५ बखान् + -औं

(रत्नाकर)

-त

परत दुख के कूप ।

(सू० १।१०२।१२)

कोऊ----- सिद्धांत निवेरत ।

(कल० ५२।२)

धा० पर + -त

(सूर)

धा० निवेर + -त

(रत्नाकर)

किते सहत अपमान

(सू० १।१०३।५)

कोउ ताहि न देखत ।

(गंगा० १।२३।४)

धा० सह + -त

(सूर)

धा० देख + -त

(रत्नाकर)

गनिका सुत सोभा नहिं पावत ।

(सू० १।३४।४)

कोउ पीबत रुधिर ।

(हरि० ४।१३।४)

धा० सु पाव + -त

(सूर)

धा० पी पीव + -त

(रत्नाकर)

पुत्तिका - बहुवचन -

-हैं

हम तिनकों किन में परिहरें ।

(सू० १।२।६४)

न केन चित्त रब लहें ।

(श्री० ३३।५)

धा० परिहर ५ परिहर् + -हैं

(सूर)

धा० लह ५ लह् + -हैं

(रत्नाकर)

अज्ञे रन धे गाजि ।

(सू० १।२।६४)

धमे-रत कमे सुधारि ।

(क्ल० १३।३)

धा० कळळ गाज गाज् + -ऐ

(सूर)

धा० सुधार ँ सुधार् + -ऐ

(रत्ना०)

दानव दस दिसि भाजे ।

(सू० १।३६।६)

जप तप मन मारि ।

(क्ल० १३।४)

धा० भाज ँ भाज् + -ऐ

(सूर)

धा० मार ँ मार् + -ऐ

(रत्नाकर)

-जी

राजनीति जानी नही ।

(सू० १।२३८।९)

नेन मूँदि तरिखी कही ।

(उद्धव० ४०।८)

धा० जान ँ जान् + -गी

(सूर)

धा० कह ँ कह् + -गी

(रत्नाकर)

-त

हरषत सूर ।

(सू० १०।८४।१२)

कवहु काहु थल ठहरत ।

(हरि० ४।९।२)

धा० हरष + -त

(सूर)

धा० ठहर + -त

(रत्नाकर)

मूली स्याम अघर नहिं टारत ।

(सू० १०।१२३०।१)

विरक्त मुक्ति चाहत वे ।

(उद्धव० ४८।५)

धा० टार + -त

(सूर)

धा० चाह + -त

(रत्नाकर)

सखी, हरि आवत ।

(सू० १०।१३७६।१)

सबद न पावत सौ ।

(उद्धव० ९९।५)

धा० षा आव + -त

(सूर)

धा० षा पाव + -त

(रत्नाकर)

-हु

कारिं नहिं आवहु ।

(सू० १०।११३७।१)

० ० ०

धा० षा आव + -हु

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

तुम्हीं मन् आवहु ।

(सू० १०।११३७।२)

० ० ०

धा० षा भाव + -हु

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-ऐ

राधा यह अनुमान करे ।

(सू० १०।१४४०।४)

दीपति ली दमकै ।

(गंगा० ७।२६।४)

धा० कर ५ कर् + -ऐ

(सूर)

धा० दमक ५ दमक् + -ऐ

घार अपार-वेग नीचे कों घावे ।

(गंगा० ७।२४।१)

सखियन बीच नागरी, आवे ।

(सू० १०।१४४०।१)

धा० घाष् ५ घाव् + -ऐ

धा० आव ५ आव + -ऐ

-औं

पलक ओट ताकौं नहिं जानौं ।

(सू० १०।१८५।२)

पाह परौं अंक बल मायहिं ।

(शृ० ९२।६)

घा० जान् + -औं

(सूर)

घा० पर + -औं

(रत्नाकर)

अहो कान्ह तुम्हें चहौं ।

(सू० १०।११९७।१)

हित बातहिं बखानौं ।

घा० चह + -औं

(सूर)

घा० बखान + -औं

(रत्नाकर)

कुंज-कुंज जपत फिरौं ।

(सू० १०।११९७।५)

दीन दृग फेरौं भैं ।

(रत्नाकर ७।४।२)

घा० फिर + -औं

(सूर)

घा० फेर + -औं

(रत्नाकर)

-ति

पल्लव गहति जु भैया ।

(सू० १०।१३१।२)

कौन बहति बयारि ।

(उद्धव० २५।८)

घा० गह + -ति

(सूर)

घा० बह + -ति

(रत्नाकर)

राधा सकुचि स्याम मुख हैरति ।

(सू० १०।२१५।१)

लाजनि बोलति मंद

(हरि० ३।१८।२)

घा० हैर + -ति

(सूर)

घा० बोल + -ति

(रत्नाकर)

सखियनि उर लावति ।

(सूर० १०।१११२।२)

भैर-कर लावति कोकिल-बेनी ।

(हिं० ५५।२)

धा० लख लाव + -ति

(सूर)

धा० लख लाव + -ति

(रत्नाकर)

स्त्री लिंग - बहुवचन -

-हैं

पुनि पुनि पाह पैं ।

(सू० १०।२४।३३)

जगर वाती कहुँ सोहैं ।

(कल० ८०।१)

धा० पर ५ पर् + -हैं

(सूर)

धा० सोह ५ सोह् + -हैं

(रत्नाकर)

हंसि हंसि मोद मों ।

(सू० १०।२४।३४)

लरैं लटकत मन मोहैं ।

(कल० ८०।२)

धा० मर ५ मर् + -हैं

(सूर)

धा० मोह ५ मोह् + -हैं

(रत्नाकर)

देत न संक करें ।

(सू० १०।२४।३५)

सुखात चलैं पूरष की ।

(उद्भव० १३।१)

धा० कर ५ कर् + -हैं

(सूर)

धा० चल ५ चल् + -हैं

(रत्ना०)

-ति

मुख संधारि बोलति नहिं बात ।

(सू० १०।३०८।२)

सानंद कलोलति ।

(गंगा० ४।१३।१)

धा० बोल + -ति

(सूर)

धा० कलोल + -ति

(रत्नाकर)

कणहुँ घरनि फिरि पारति ।

(सू० १०।१६२०।२)

बल नैकु न पारति ।

(प्र० १७।४५।४)

घा० धार + -ति

(सूर)

घा० पार + -ति

(रत्नाकर)

पूछति सखि परस्पर ।

(सू० १०।२६।२)

काज निरंतर नाहति ।

(प्र० १७।४४।४)

घा० पूछ + -ति

(सूर)

घा० नाह + -ति

(रत्नाकर)

भूतकाल -

पुल्लिगे - एकवचन -

-यी

पारथ की सारथी भयी ।

(सू० १।२६।२)

उत असमंजहु भयी ।

(गंगा० १।१६।१)

घा० हो + -यीं

(सूर)

घा० हो + -यी

(रत्ना०)

कोउ लीफयो ।

(सू० १०।१४३२।३)

मन ही मन लीफयो ।

(हरि० १।१५।१)

घा० लीफ + -यीं

(सूर)

घा० लीफ + -यी

(रत्नाकर)

पुल्लिगे - बहुवचन -

-ए

नंद घर आए ।

(सू० १०।२६।१)

भूप भृगु-आस्रम आए ।

(गंगा० १।११।३)

घा० आ + -ए

(सूर)

घा० आ + -ए

(रत्नाकर)



दोरे नंद जसोदा दोरी ।  
करि नित्य-कृत्य पुर-वन्तर फे ।  
 घा० दोर ॥ दोर् + -ए  
 घा० फेठ ॥ फेठ् + -ए

(सू० १०।७७।९)

(हरि० २।२।४)

(सूर)

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग-एकवचन -  
 -----

-हैं

धनि हरि के मुख लागी ।  
लगी गंग तिन संग ।

(सू० १०।१३५।१)

(गंगा० ८।१६।२)

घा० लाग ॥ लाग् + -हैं

(सूर)

घा० ला ॥ ला + -हैं

(रत्नाकर)

बाप जली गृह काज कीं ।  
जली बटुक के संग ।

(सू० १०।६६।२)

(हरि० ३।३४।३)

घा० जल ॥ जल् + -हैं

(सूर)

घा० जल ॥ जल् + -हैं

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग-बहुवचन -  
 -----

-हैं

गोपी सब विहसीं ।  
ठमकीं--- सुदामा के नार धी ।

(सू० १०।१८०।७)

(र० ६।६।८)

घा० विहस ॥ विहस् + -हैं

(सूर)

घा० ठमक ॥ ठमक् + -हैं

(रत्नाकर)

जली धरनि सब गोपी ।

(सू० १०।१४२।३)

०

०

०

धा० कल ५ बल + -हं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

भविष्यत्काल -

पुल्लिंग- एकवचन -

-ऐगी

फिर ह्यां आवेगी ।

(सू० १०।२०९५।४)

सोती ताहि अधिक रिफावेगी ।

(शृ० १।१३१।२)

धा० आठ ५ बाव् + -ऐगी

(सूर)

धा० रिफाठ ५ रिफाव् + -ऐगी

(रत्ना०)

-ऐहे

हंसहिं लै दस सीस चढ़ेहे ।

(सू० ९।८१।७)

जा दरसेहे ना ।

(प्र० ५।५।४)

धा० चढ़ ५ चढ़े + -ऐहे

(सूर)

धा० दरस ५ दरस् + -ऐहे

(रत्नाकर)

पुल्लिंग - बहुवचन -

-हैं

तौ हंसिहैं सब ग्वाल ।

(सू० १०।२२३।८)

दिव्य लोकनि में बसिहैं

(गंगा० १२।२७।४)

धा० हंस ५ हंस + -हैं

(सूर)

धा० बस ५ बस् + -हैं

(रत्ना०)

-ऐगी

उन पापनि तें क्यों उक्सीगी ।

(सू० १।३३४।४)

हम बार किमि आइंगे ।

(श्री ११।२)

धा० उवस् ७ उवस् + -ऐंगे

(सूर)

धा० बाड़ ७ बाड़ + -ऐंगे

(रत्नाकर)

कल्ले मोहिं ये ठंग तेरे ।

(सू० १०।२०।१४।६)

जाकी कबि कीरति बखानी ।

(र० ३।२।२)

धा० कह ७ कह + -ऐंगे

(सूर)

धा० बखान ७ बखान् + -ऐंगे ।

(रत्ना०)

स्त्रीलिङ्ग- एवक्क -

-ऐंगी

कल्लु बढि रचिणी ।

(सू० १०।१९।०।४)

० ० ०

धा० रच ७ रच् + -ऐंगी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मारंगी काहु की गैया ।

(सू० १०।१५।४)

० ० ०

धा० मार ७ मार + -ऐंगी

(रत्नाकर) (सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- वहुक्क -

-वहें

तरहें हम सों भगिनी माहें ।

(सू० १०।१४।७।२)

घार सागर भं घसिहें ।

(गंगा० १२।२७।३)

धा० लर ७ लर + -वहें

(सूर)

धा० घस ७ घस् + -वहें

(रत्नाकर)

-एंगी

चोर कहेंगी मौकों ।

(सू० १०।२०४६।२)

०        ०        ०

धा० कह ५कह् + -एंगी

(सूर)

०        ०        ०

(रत्नाकर)

बहूँ मन न भिंसावेंगी ।

(सू० १०।२५३८। )

०        ०        ०

धा० भिंसाव् + भिंसाव् + -एंगी

(सूर)

०        ०        ०

(रत्नाकर)

कर्तृवाच्य में वही रूप बनते हैं जो सामान्य वर्तमान, सामान्य भूत तथा सामान्य भविष्यत् कालों में बनते हैं। वर्तमान काल में पुल्लिङ्ग एकवचन 'उं' प्रत्यय का प्रयोग सूर ने किया है, रत्नाकर ने नहीं। शेष रूप समान मिलते हैं। बहुवचन में 'हु' का प्रयोग भी सूर ने ही किया है। स्त्रीलिङ्ग के दोनों वचनों में भी समान रूप मिलते हैं। इसी तरह भूतकाल में भी क्रिया-पद समान ही हैं। भविष्यत् काल में स्त्रीलिङ्ग में रत्नाकर के काव्य में क्रिया-पदों का अपेक्षाकृत अभाव है।

२- कर्मवाच्य -

-----

कर्मवाच्य में प्रयुक्त क्रिया-पद का पुरुष, लिङ्ग और वचन कर्म के अनुसार होता है। कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रिया-पदों के प्रयोग से ही बनता है।

वर्तमान काल-

-----

पुल्लिङ्ग -एकवचन -

-----

उत्तमवचन -त

अंजलि के जल ज्यौ तन झीजत ।

(सू० १।७४।३)

विसद धिरासत जस जदंड वंडनि की मंडल ।

(कल० ५०।४)

धा० हीज † -त

(कल०००५ सुर)

धा० धिराज † -त

(रत्नाकर)

गरजत मेघ महा डर लागत ।

(सू० १०।११।३)

सुहा वीप बिना सब लगत बंध्यारी ।

(गंगा० १।१०।२)

धा० लाग † -त

(सू)

धा० ला † -त

(रत्ना०)

जी लों सत सङ्ग नहिं सुकत ।

(सू० २।२५।१)

सौच्यी सत लखात काज इनके न सहारे ।

(हरि० १।२६।१)

धा० सुक † -त

(सू)

धा० लखा † -त

(रत्नाकर)

पुल्लिंग- वस्तुचन -

-त

दंडल लोल कपोलनि फलकत ।

(सू० १०।१३७।७)

सरस बांण वानंद के बरसत ।

(कल० ५।२)

धा० फलक † -त

(सू)

धा० बरस † -त

(रत्नाकर)

बज्जुन मोधि बजहुं न छूटत ।

(सू० १।१४७।२)

लुटत पुंज के पुंज ।

(कल० ४।२)

धा० छूट † -त

(सू)

धा० लुट † -त

(रत्ना०)

बिफसत बदन दसन अति चम्कत ।

(सू० १०।६३९।४)

घंटा, संख, मृदंग वज्रत तहं ।

(कल० ४३।२)

घा० चमक + -त

(सूर)

घा० बज + -त

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन-तितृष्णा तरंग उठति वति भारी ।

(सू० १।२१२।३)

विविध रंग की उठति ज्वाल ।

(हरि० ४।२।३)

घा० उठ + -ति

(सूर)

घा० उठ + -ति

(रत्नाकर)

स्वियं तु कसति जड़ताई ।

(सूर० १।१८७।५)

तीव्र हमें भावति न भावना ॥

(उद्धव० ३८।६)

घा० कस + -ति

(सूर)

घा० भाव + -ति

(रत्नाकर)

होति मूल में शानि ।

(सू० १।१३१०।७)

होति आरती पूज्य देव --- की ।

(कल० ४३।३)

घा० हो + -ति  
घा० हो + -ति(सूर)  
(रत्नाकर)स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन-ति

लटकति छबछब ललित लहरियां । (सू० १०।११६।३)

लसति बहु रंगनि सारी ।

(गंगा० १।३८।३)

घा० लटक + -ति

(सूर)

घा० लस + -ति

(रत्नाकर)

दमकति घोंउ दूध की दतियां ।

(सू० १०।१३६।७)

०

०

०

धा०	दमक + -तिं	(सुर)
०	०	० (रत्नाकर)
लातिं	नहीं पल पंखियां ।	(सू० १०।३२४०।३)
०	०	० (
धा०	ला + -तिं	(सुर)
०	०	० (रत्नाकर)

भूतकाल -

पुल्लो- एकवचन

-न्हीं

जाफें	संग सेत धंय कीन्हीं ।	(सू० १।२८७।५)
चिबुलू	की चुंवन कीन्हीं ।	(हरि० ३।१४।२)
धा०	कर ५ की + - न्हीं	(सुर)
धा०	कर ५ की + - न्हीं	(रत्नाकर)

-न्ही

राज	परीच्छित कीं नृप दीन्हीं ।	(सू० १।२८८।५)
निज	परिचय दीन्हीं ।	(हरि० २।१०।१)
धा०	दे ५ दी + -न्ही	(सुर)
धा०	दे ५ दी + -न्ही	(रत्नाकर)
बज्रनाभ	मथुरा पति कीन्हीं ।	(सू० १।२८८।५)
व	बिदित वेगिहि यह कीन्हीं ।	(हरि० २।१०।३)
धा०	कर ५ की + - न्ही	(सुर)
धा०	कर ५ की + -न्ही	(रत्नाकर)

-यी

लंभ क फारि खिनाकु मारयी ।

(सू० १।१४।५)

तासु नाम कसमं घरायी ।

(गंगा० १।१४।२)

घा० मार ५ मार + -यी

(सूर)

घा० घरा + -यी

(रत्नाकर)

सब पुर देखि घनुष पुन देखी ।

(सारा० २१०।१)

जानन सीं दखी दूहाला ।

(कल० २१०।२)

घा० देख ५ देख + -यी

(सूर)

घा० देव ५ दव + -यी

(रत्नाकर)

तब बानें सब भेद बतायी ।

(सारा० २८०।१)

ताहि जुबराज बनायी ।

(गंगा० १।२०।२)

घा० बता + -यी

(सूर)

घा० पना + -यी

(रत्नाकर)

पुल्लि - वल्लक -

-ए

कदली खिक्का लाए ।

(सू० १।१३।६)

कहे रतनाकर न लाए सुख केन ।

(उद्ध० २१।३)

घा० ला + -ए

(सूर)

घा० जा + -ए

(रत्नाकर)

देखे मल्ल सुगं ।

(सारा० २१०।१)

देखे तहां समाज साज

(हरि० २।१।२)



घा० देख ५ देख + -ए

(सू)

घा० देख ५ देख + -ए

(रत्नाकर)

नाना धिधि फल लाये ।

(सारा० २८३।१)

बष सत सतत बिताए ।

(गंगा० १।११।४)

घा० ला + -ये

(सू)

घा० बिता + -ए

(रत्नाकर)

-न्हे

पांच वान मोहिं संकर दीन्हे ।

(सू० १।२८७।४)

० ० ०

घा० दे ५ दी + -न्हे

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एङ्गक -

-ई

जव-जव भीर परी ।

(सू० १।१४।२)

करी कल धिनय बढ़ाए ।

(हरि० १।७।२)

घा० पर ५ पर + -ई

(सू)

घा० कर ५ कर + -ई

(रत्नाकर)

जाय बशोक बाटिका देखी ।

(सारा० २८०।१)

पुनि पूछी खुलात ।

(हरि० १।७।६)

घा० देख ५ देख + -ई

(सू)

घा० पूछ ५ पूछ + -ई

(रत्नाकर)

एक फेंड में कसुधा नापी ।

(सारा० ३४०।१)

जासु कल कीरति व्यापी ।

(गंगा० १।६।२)

घा० नाप ५ नाप् + -ई

(सू०)

घा० व्याप ५ व्याप् + -ई

(रत्नाकर)

-न्ही

बापि बास निरास कीन्ही ।

(सू० १०।३९३२।६)

० ० ०

घा० कर ५ की + -न्ही

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

-नी

भली सिच्छा तुम दीनी ।

(सू० ३।११।७)

नवल सोपा सरसानी ।

(गंगा० १।१३।४)

घा० दे ५ दी + -नी

(सू०)

घा० सरसा + -नी

(रत्नाकर)

अस्य वृषि हन यह कीनी ।

(सू० ३।११।८)

० ० ०

घा० कर ५ की + -नी

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग - वस्तुका -

-ई

बातें बे भुलाई ।

(सू० १०।१४७७।२)

चापकें चाक चढ़ाई ।

(हिं० ५०।४)

घा० भुला + -ई

(सू०)

घा० चढ़ा + -ई

(रत्नाकर)

लुटीं नारि पराई ।

(सारा० ७४०।२)

नैकु कहीं बैननि ।

(उद्धव० ५।७)

धा० लुट् ∪ लुट् + -ई

(सूर)

धा० कह ∪ कह् + -ई

(रत्नाकर)

-न्हीं

सीता बिनती की-न्हीं ।

(सारा० २६४।१)

बात सम अनुक्ति की-न्हीं ।

(हरि० २।२२।१)

धा० कर ∪ की + -न्हीं

(सूर)

धा० कर ∪ की + -नहीं

(रत्नाकर)

भविष्यत् काल

पुल्लिंग- एकमकन -

-ऐगी

हुँहि विधि कहा घटेगी तेरी ।

(सू० १।२६६।१)

बेगही वैयाँ बातराँ सतराहके

(शु० २९।४)

धा० घट् ∪ घट् + -ऐगी

(सूर)

धा० वह ∪ वह् + -ऐगी

(रत्नाकर)

राज काज तुम तैं न सरेगी ।

(सू० १०।३५५०।८)

पाँख विचारिनि की दुख अब हूँगी ।

(२० ७।६।४)

धा० सर ∪ सर + -ऐगी

(सूर)

धा० हूट् ∪ हूट् + -ऐगी

(रत्नाकर)

पुल्लिंग- बह्वकन -

-हैं

कंस बधन यैहें करिहैं ।

(सू० १०।८५।७)

काम कठिन हमारे सरिहैं कहा ।

(उद्धव० ४६।६)

धा० कर ५ कर + -हैं

(सुर)

धा० सर ५ सर + -हैं

(रत्नाकर)

-रहे

तनहिं बद्ध सु पैं ।

(सू० १०।८६।५)

पाप के पाप नही ।

(गंगा० ३।२५।४)

धा० पा ५ पा + -हैं

(सुर)

धा० नस ५ नस + -हैं

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-रहे

सुवास प्रसु रची सु खेहे ।

(सू० १।२६४।१२)

गंग कना रेसहिं जह खेहे ।

(गंगा० ४।५१।३)

धा० हो ५ हो + -रहे

(सुर)

धा० हो ५ हो + -रहे

(रत्नाकर)

-एगी

बीलेगी तबहीं जानेगी ।

(सू० १०।३६।१३।२)

० ०

धा० बीत ५ बीत + -एगी

(सुर)

० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-हैं

होछैं सका दुपा तुम्हारी ।

(सू० ४।११।१९)

तिहारी क्ला नैकु हरिहैं नही

(उद्भव० ५९।२)

घा० हो + -इहैं

(सूर)

घा० सर + -इहैं

(रत्ना०)

सूर और रत्नाकर दोनों कवियों ने अपनी भाषा में कर्मवाच्य के प्रयोग पर्याप्त संख्या में किये हैं। वर्तमान काल तथा भूतकाल में दोनों कवियों की भाषा में कर्मणि प्रयोग समान रूप से मिलते हैं। भविष्यत् काल में रत्नाकर ने क्रिया-पदों का प्रयोग ही सूर की अपेक्षा कम किया है। अतः प्रयोग भी कम ही मिलते हैं। "ऐगी" प्रत्यय का प्रयोग रत्नाकर ने कर्मवाच्य बनाने के लिए नहीं किया है। शेष रूप समान ही हैं।

कर्मवाच्य के ये प्रयोग एकाकी क्रिया-पदों के हैं। इनके अतिरिक्त सूर और रत्नाकर दोनों ने ही संयुक्त क्रिया-पदों के रूप में कर्मवाच्य के प्रयोग किये हैं। ये मुख्यतः तीन क्रिया-पदों के योग से किए हैं। जानो, जानी तथा परनो। जैसे -

जानो -  
-----

हरि की लीला कहत न आवै ।

(सू० १०।४८२।१)

संपति त्रिलोक की बिलौकन में आवै ना ।

(उद्धव० ११।८)

कहत + घा० आव ८ आव् + -ऐ

(सूर)

बिलौकन + घा० आव ८ आव् + -ऐ

(रत्नाकर)

उपमा कहत न आवै ।

(सू० १०।१३९।१४)

सार समुक्ति न आवै है ।

(गंगा लहरी २१।२)

कहत + घा० आव ८ आव् + -ऐ

(सूर)

समुक्ति + घा० आव ८ आव् + -ऐ + घा० हो ह् + -ऐ (रत्ना०)

सूरदास क्यों कहि आवै ।

(सूर० १।६९।१४)

यह बात कहि आवै है ।

(श्री ८।६)

कहि + घा० जाव ल जाव् + -हे (सूर)

कहि + घा० जाव ल जाव् + -हे + घा० हो ल ह् + -हे (रत्नाकर)

जानो -

जानो क्रिया के विकृत रूपों में निम्न रूप बनते हैं-

जाह-

बरनि न जाह भगत की महिमा । (सू० १।११।७)

० ० ०

बरनि + घा० जा + -ह (सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

तेरी भजन कियो न जाह । (सू० १।४५।१)

० ० ०

कियो + घा० जा + -ह (सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

जाह गहि नहि जाह । (सू० १।५६।२)

० ०

गहि + घा० जा + -ह (सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

-जाहै -

आ भुषनति कवि कही न जाहै । (सू० ८।१०।९)

० ० ०

कही + घा० जा + -है (सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

मो पै भेटि न जाहै । (सू० १।५३।५)

० ० ० (रत्नाकर)

देष्टि + घा० जा + -र्

(सु०)

० ० ०

(रत्नाकर)

-जात

यस उक्ताय न जात म्हायी ।

(सु० ४।१।५७)

एवं यस जात न पान्थी ।

(हरि० ४।५७।१)

घा० छञ्ज जा + -त + म्हायी

(सु०)

घा० जा + -त + पान्थी

(रत्नाकर)

जाता =

साय वापि मारत की न जाता कयरे से जय ।

(प्र० ११।४।७)

० ० ०

मारत + घा० जा + -ता

(रत्नाकर)

० ० ०

(सु०)

जाति =

कैत श्रीति जाति नहिं तौरी ।

(सु० १०।३०५।६)

रक्षा वरम पिच्छा द्या भी जाति न लेती ।

(हरि० २।३।२)

घा० जा + -ति + छौरी

(सु०)

घा० जा + -ति + लेती

(रत्नाकर)

हपि नहि जाति घतानी ।

(सु० १०।१५१।२)

जाति कही सु की सुझा नही ।

(सु० १५।३)

घा० जा + -ति + घतानी

(सु०)

घा० जा + -ति + कही

(रत्नाकर)

पाय-

० ० ०

(सु०)

उपाय न पाय ज्यों से ।

(प्र० १०।५०।६)

०            ०            ०  
घा० जा + -य + करायी है

(सुर)

(रत्नाकर)

परनो-

पर-

तेरी गति लखि न परी ।

(सू० १।१०४।१)

पर कहि न क्यो निसी

(उद्धव० २।१२)

लखि + घा० पर ँ पर + -ऐ

(सुर)

घा० पर ँ पर + -ऐ + कहि

(रत्नाकर)

जबिगत गति जानी न परी ।

(सू० १।१०५।१)

जास ह्वे क्योई जरी नैन खि कीनि सी ।

(उद्धव० २।१८)

जानी + घा० पर ँ पर + -ऐ

(सुर)

क्योई + घा० पर ँ पर + -ऐ

(रत्नाकर)

परत-

०            ०            ०

(षष्ठ सू०)

वाह्लाद परत छलखी जो कि तैं ।

(हरि० १।१०।५)

०            ०            ०

(सुर)

घा० पर + -त + छलखी

(रत्नाकर)

०            ०            ०

दरसन हूं दुलैम अबतो लखि परत तिहारे ।

(हरि० ३।२८।३)

०            ०            ०

(सुर)

लखि + घा० पर + -त

(रत्नाकर)

परति -

जबिगत की गति कछि परति है ।

(सू० १।१२।२)

०            ०            ०



कहि + घा० पर + -ति + घा० हो जाहूँ + -रे (सूर)  
 ० ० ० (रत्नाकर)

नाहिंन परति द्युहै । (सू० १०।५०।१२)

० ० ०  
 घा० पर + -ति + द्युहै (सूर)  
 ० ० ० (रत्नाकर)

इस प्रकार हम देखते हैं कि "जानो" क्रिया-पद के योग से सूर तथा रत्नाकर दोनों कवियों ने समान ही रूप बनाये हैं। इनकी संख्या बहुत कम है। "जानो" के विभिन्न रूपों का प्रयोग सूर ने अधिक किया है। सूर "जाहूँ", "जाहै" का प्रयोग अपने क्रिया-पदों के साथ करके कर्मवाच्य रूप बनाये हैं। ये प्रयोग रत्नाकर ने नहीं किये हैं। "जात" तथा "जाति" प्रयोग दोनों कवियों के क्रिया-पदों में समान रूप से मिलता है। रत्नाकर ने एक स्थान पर "जाता" रूप प्रयुक्त किया है। सूर ने ऐसा कोई प्रयोग नहीं किया है। यह प्रयोग खड़ी बोली (परिनिष्ठित) का है। इसका कारण रत्नाकर जी का शिक्षित होना है।

इसी तरह "परनो" क्रिया-पद के भी विवृत्त रूपों का योग करके दोनों कवियों ने कर्मवाच्य क्रिया-पद बनाये हैं। "पर" रूप का योग दोनों कवियों ने किया है। "परत" का रत्नाकर ने तथा "परति" का प्रयोग सूर ने किया है।

### ३- भाव वाच्य -

जब क्रिया-पद का लिंग, वचन तथा पुरुष कर्ता या कर्म के अनुसार नहीं होता है तो वह क्रिया-पद भाववाच्य का होता है।

भाववाच्य के प्रयोग भी सूर और रत्नाकर के काव्य में दो प्रकार के मिलते हैं। एक तो एकाकी क्रिया-पदों के प्रयोग दूसरे संयुक्त क्रिया-पदों का प्रयोग।

भाववाच्य के प्रयोग दोनों कवियों ने बहुत कम संख्या में किये हैं। जैसे-

एकैकी रूप में-

तब जान्यो वह गिर्यो कन्हाई ।

(सू० १०।५४८।२)

महिषि निज नाथहिं जान्यो ।

(हरि० ४।७८।३)

धा० जान ५ जान् + -यो

(सू०)

धा० जान ५ जान् + -यो

(रत्नाकर)

हरि आवत गोपी जब जान्यो ।

(सू० १०।२६५।३)

जान्यो तुम्हें नाहिं ।

(श्री० ३२।७)

धा० जान ५ जान् + -यो

(सू०)

धा० जान ५ जान् + -यो

(रत्नाकर)

हरजू ताकी तबहीं जान्यो ।

(सू० १०।५७।७)

जान्यो हमें, तथा जावन को कारन जान्यो ।

(हरि० २।१२।३)

धा० जान ५ जान् + -यो

(सू०)

धा० जान ५ जान् + -यो

(रत्नाकर)

हाय हाय कर सखिनि फुकार्यो ।

(सू० १०।५४०।१)

समकों बिधि कासु जोग न राख्यो ।

(हरि० ४।१७।४)

धा० फुकार ५ फुकार् + -यो

(सू०)

धा० राख ५ राख् + -यो

(रत्नाकर)

सुन्यो कंस पूतना संहारी ।

(सू० १०।५८।१)

ताहि निज नगर न राख्यो ।

(गंगा० १।२६।१)

धा० सुन ५ सुन् + -यो

(सू०)

धा० राख ५ राख् + -यो

(रत्नाकर)

संयुक्त रूप में -

जानो-

जाऊ-

मयूकन बस्यो न जाऊ ।

(सू० १।१५५।२)

०            ०            ०

बस्यो + घा० जा + -ऊ

(सू०)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

तव तें रह्यो न जाऊ ।

(सू० १०।३३२७।२)

०            ०            ०

रह्यो + घा० जा + -ह

(सू०)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

जाहें-

पल भरि रह्यो न जाहें ।

(सू० १०।३२००।२)

०            ०            ०

रह्यो + घा० जा + -हें

(सू०)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

पल रह्यो न जाहें ।

(सू० १०।१९६६।१०)

०            ०            ०

रह्यो + घा० जा + -हें

(सू०)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

परनो-

हरि बिनु नाहिं परत रह्यो ।

(सू० १०।३७८४।१)

०            ०            ०

धा० पर + -त + रह्यी

(सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

लेनी -

गोद उठाइ कृष्ण कीं लीन्ही ।

(सू० १०।५७।१५)

सांप हमकीं डसि लीन्ही ।

(हरि० ४।४५।४)

धा० उठा + -इ + धा० ले ली + -न्ही (सूर)

धा० छ + -इ + धा० ले ली + -न्ही (रत्नाकर)

इस प्रकार हम देखते हैं कि सकाकी क्रिया-पदों को तो सूर के समान रत्नाकर ने भी प्रयुक्त किया है। संयुक्त रूप में सूर ने तो भाववाच्य के प्रयोग किये हैं। किन्तु रत्नाकर ने ये प्रयोग "न" के बराबर ही किये हैं। "जानो" तथा "परनो" क्रिया-पदों की सहायता से सूर काव्य में तो भाववाच्य के प्रयोग पर्याप्त संख्या में मिलते हैं। रत्नाकर के काव्य में तो नाममात्र को ही अन्य प्रयोग मिलता है। "जानो" तथा "परनो" का प्रयोग किये ही नहीं हैं। इस प्रकार रत्नाकर की अपेक्षा सूर ने भाववाच्य के प्रयोग अधिक तथा अन्य क्रिया-पदों की तुलना में सूर काव्य में इनकी संख्या बहुत ही कम है।

अध्याय- सप्तम

जय की दृष्टि से सूर वीर रत्नाकर  
 के  
 प्रिया-पदों की तुलना

### निश्चयार्थ

इस वर्ग में ६ काल आते हैं-

- १- सामान्य वर्तमान ।
- २- पूर्ण वर्तमान ।
- ३- सामान्य भूत ।
- ४- अपूर्ण भूत ।
- ५- पूर्ण भूत ।
- ६- सामान्य भविष्यत् ।

इस वर्ग के कालों में सूर और रत्नाकर के क्रिया-पदों की तुलना वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यत् काल में पहले की जा चुकी है । अतः यहाँ पुनः इनकी तुलना की आवश्यकता नहीं जान पड़ती है ।

### संभावनार्थ

#### १- संभाव्य वर्तमान काल -

इस काल में वर्तमानकालिक घटना की संभावना सूचित होती है । सूर और रत्नाकर ने सामान्यतः संभाव्य वर्तमान के क्रिया-पद प्रयोग नहीं किये हैं। वर्तमानकालिक उत्प्रेक्षा का प्रयोग कर दोनों कवियों ने इस काल के रूप बनाये हैं ।

पुल्लिंग-एकवचन -

-ठ

मनु बरसत भादों मास

(सू० १०।२४।३०)

मनु---- चंद गहि धारन चाहत ।

(कल० १३६।२)

धा० बरस + -त

(सूर)

धा० चाह + -त

(रत्ना०)

मानो नपधन ऊपर राजत मधवा ।

(सू० १०।१०८।४)

वीच्छा गुन राजत मानो ।

(हिं० २१।३)

धा० राज + -त

(सूर)

धा० राज + -त

(रत्नाकर)

मनी मुजं + --- चाटत ।

(सू० १०।१०७।६)

मानहु सुखं ----- रचत कठारि ।

(गंगा० ८।३३।२)

धा० चाट + -त

(सूर)

धा० रच + -त

(रत्नाकर)

पुल्लिंग-बहुवचन -

-त

अनु----- धुक्त नलिम की नाल ।

(सू० १०।११४।४)

मनु----- निरखत कवि ।

(हिं० २४।३)

धा० धुक + -त

(सूर)

धा० निरख + -त

(रत्नाकर)

मानो विहरत बाल मराल ।

(सू० १०।११४।६)

मानो संतनि मन विहरत ।

(हिं० २९।४)

धा० विहर + -त

(सुर)

धा० विहर + -त

(रत्नाकर)

मानो घटविधु----- छरषत ।

(सू० १०।१८०७।६)

मनु----- वन विच दरसत ।

(गंगा० १०।८।२)

धा० छरष + -त

(सुर)

धा० दरस + -त

(रत्नाकर)

मनो विच-विच म्हर डोलत ।

(सू० १०।१८२०।८)

मनु----- अंतर में सोहत ।

(गंगा० ७।२०।४)

धा० डोल + -त

(सुर)

धा० सोह + -त

(रत्ना०)

मानहु अति----- मकरंद फित ।

(सू० १०।१७७७।४)

मनु----- दुहुं दिसि ते आवत ।

(गंगा० १०।३४।१)

धा० पीव-पि + -त

(सुर)

धा० आ आव + -त

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- एवमन्

-ति

फ्राटति मनु घरनि में विष्णु कटाई ।

(सूर० १०।१०८।१०)

मनु----- वनदेवी----- वरतति

(हिं० ११।४)

धा० फ्राट + -ति

(सुर)

धा० वरत + -ति

(रत्ना०)

मनुहुं अं विभूति राजति ।

(सू० १०।१६९।१२)

मनु कलिंद हैं निरति कलंदी ।

(कल० १२६।४)

धा० राज + -ति

(सुर)

धा० गिर + -ति

(रत्ना०)



मनहुँ कोटि काम द्युति लाजति ।

(सू० १०।६३४।४)

मनहुँ---- तेरति फुल्लारी ।

(गंगा० ११।२४।२)

धा० लाज + -ति

(सूर)

धा० तेर फ -ति

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

-हैं

० ० ०

(सू०)

मनु----- लहरें जमुना जल की लहरें ।

(शृ० २१।४)

० ० ०

(सूर)

धा० लहर लहर + -हैं

(रत्ना०)

० ० ०

(सू०)

मानहुँ---- सगुन दिखावैं ।

(गंगा० ६।२।२)

० ० ०

(सूर)

धा० दिखाव दिखान् + -हैं

(रत्ना०)

इस काल में प्रयुक्त क्रिया-पद सूर और रत्नाकर ने एक समान बनाये हैं । लेकिन स्त्रीलिंग बहुवचन का प्रयोग सूर काव्य में नहीं मिलता है । इस काल में प्रयुक्त क्रिया-पदों में "हैं", "त", "ति", "ति" आदि प्रत्यय धातु में जोड़े हैं। ऐसे रूप दोनों कवियों के काल में पर्याप्त हैं ।

२- संभाव्य भूतकाल -

इस काल में भूतकालिक क्रिया में संभावना व्यक्त की जाती है ।

इस प्रकार के प्रयोग सूर और रत्नाकर ने बहुत ही कम दिये हैं। संभाव्य भूतकाल में भूतकालिक उत्प्रेक्षा भी विचारणीय है । जनु मनु मनहुँ मानहुँ मानहुँ

जादि प्रयोगों के साथ जब भूतकाल सामान्य क्रिया-पद का प्रयोग हो तो वहां भी संभाव्य भूतकाल होता है। भूतकालिक उत्प्रेक्षा बनाकर सूर और रत्नाकर दोनों कवियों ने संभाव्य भूतकाल के प्रयोग किये हैं ।

प्रेमकथा सोई पे जाने जाये बीती होई । (सू० १०।३५४२।५)  
जाहि सुख----- जास टरि गई होइ । (र० १६।८।६)  
धा० बीत ॥ बीत + -ई + धा० हो + -ई (सूर)  
धा० टर ॥ टर + -इ + धा० जा ॥ ग + -ई + धा० हो + -इ (रत्ना०)

इस प्रकार के प्रयोग नाम-मात्र के लिए ही हैं ।

पुल्लिंग-एकवचन -

-यी  
मनी मृतक बहुरि जिय लहयो । (सू० ९।२।५८)  
दृढ़ विश्वास धर्यो मनु । (हिं० ३१।१)  
धा० लह ॥ लह + -यी (सूर)  
धा० धर ॥ धर + -यी (रत्ना०)  
मानो पुन्यो चंद्र----- घायल आयो । (सू० १०।२६११।४)  
मनु----- गज कदली बन आयो । (गंगा० ६।१।२)  
धा० जा + -यो (सूर)  
धा० बा + -यो (रत्ना०)  
मनुषी पज घर कियो बारिज पर । (सू० १०।९३।३)  
दियो अनोह छन्द धनुष जनु । (हिं० ७४।२)  
धा० कर ॥ कि + -यी (सूर)  
धा० छिंदै ॥ दि + -यी (रत्ना०)

पुल्लो - बहुचन -

-ए

मानी----- नवल ससि जाइ ।

(सू० १०।२११८।६)

मानहु ----- हास के तार सुहाए ।

(हिं० १४।१)

घा० जा + -ए

(सूर)

घा० सुहा + -ए

(रत्नाकर)

मनहु----- तप बैठे त्रिपुटारि ।

(सू० १०।२११८।१८)

मानहु निक्सै ----- स्याम घटासौं ।

(कल० १२७।४)

घा० बैठ ५ बैठ् + -ए

(सूर)

घा० निक्स ५ निक्स् + -ए

(रत्नाकर)

फुंदा सुभा फूल फुले मनु ।

(सू० १०।२६१०।१६)

मानी बहुचित्र बिचित्र रचे ।

(हिं० १७।४)

घा० फूल ५ फूल् + -ए

(सूर)

घा० रच ५ रच् + -ए

(रत्ना०)

मनहु मधुप मधु-माति गिरे री ।

(सू० १०।२२९३।२)

चले जग्गिन मै मनहु प्रेरि ।

(गंगा० २।३१।४)

घा० गिर ५ गिर + -ए

(सूर)

घा० चल ५ चल + -ए

(रत्नाकर)

मनु लो कवच फट फुटि ।

(सू० १०।२४६१।६)

मनो सुहागिनि सजे लो बहु ।

(गंगा० १०।११।३)

घा० लो ५ लो + -ए

(सूर)

घा० सज ५ सज् + -ए

(रत्नाकर)

### स्त्रीलिङ्ग -एकवचन

-ई

मनो----- तिरछी घार वहाई ।

(सू० १०।१८१४।४)

मनहु जल भूप बनाई ।

(कल० ६४।४)

घा० वहा + -ई

(सूर)

घा० बना + -ई

(रत्ना०)

मनो कमल पर विज्जु जमाई ।

(सू० १०।८२।६)

मनहु दूव चारु चहु पास लाई ।

(हिं० ३१।२)

घा० जमा + -ई

(सूर)

घा० ला + -ई

(रत्नाकर)

मनो मुखम साई ।

(सू० १०।५२।७)

मनहु---- वृन्दावन बाई ।

(हिं० ११।३)

घा० सा + -ई

(सूर)

घा० बा + -ई

(रत्ना०)

मानहु मेघ घटा अति बाढ़ी ।

(सू० १०।४१६२।१)

सूरुगे माहिं लागी अनु बाती ।

(हरि० ४।५५।४)

घा० बाढ़ ∪ बाढ़् + -ई

(सूर)

घा० लाग ∪ लाग् + -ई

(रत्ना०)

### स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन -

-ई

मनहु----- फसरीं किरनि प्रचंड ।

(सू० १०।१८२१।१)

मनहु-----राग की उपजीं वृटी ।

(हिं० ३।४)

घा० फसर ७ फसर + -ई	(सूर)
घा० उपजू ७ उपजू + -ई	(रत्नाकर)
मानो हृन्द क्यू सुग्रीं ।	(सू० १०।३०।४)
निषकं रहीं भरि मानहुं ।	(हिं० ५।४)
घा० रह ७ रह + -ई	(रत्नाकर)
घा० सु ७ सु + -ई	(सूर)

सूर और रत्नाकर ने संभाव्य भूतकालिक क्रिया-पद उत्प्रेक्षा की सहायता से बनाये हैं। इस प्रकार के प्रयोग दोनों कवियों के काव्य में पर्याप्त संख्या में मिलते हैं।

### ३- संभाव्य भविष्यत् काल

इस काल में क्रिया-पदों के वे प्रयोग आते हैं जिनमें भविष्य में होने वाले काम की संभावना व्यक्त होती है। इस प्रकार के प्रयोग सूर और रत्नाकर दोनों कवियों में अपने-अपने क्रिया-पदों में किये हैं। काम की आशा, निश्चय, इच्छा भी इसी काल के अंतर्गत आती है। भविष्यत्कालिक उत्प्रेक्षा में भी संभाव्य भविष्यत् काल होता है।

उत्तम पुरुष-

सुखिनि - एवमचन -

-ऊं

जो मागें सो पाऊं । (सू० १०।३७।६)

नाम निज सारथ बनाऊं मैं । (वी० ८।१।६)

घा० पा + -ऊं (सूर)

घा० बना + -ऊं (रत्नाकर)

बाहु जो हरिहिं न सस्त्र गहाऊं (सू० १।२७०।१)

ज्यद्वय की मुंड ना गिराऊं मैं । (वी० ४।२।६)

घा० गहा + -ऊं (सूर)

घा० गिरा + -ऊं (रत्ना०)

सांतनु सुत न कहाऊं ।

(सू० १।२७०।२)

ज्वाल जरति कुडाऊं में ।

(वी० ४।१।८)

धा० कहा + -ऊं

(सूर)

धा० कुडा + -ऊं

(रत्नाकर)

-औं

जो कहूँ कर न फसारैं ।

(सू० १०।३७।७)

० ० ०

धा० फसार  $\wedge$  फसार + -औं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

द्वारें रहौं देहु एक मंदिर ।

(सू० १०।३७।८)

० ० ०

धा० रह  $\wedge$  रह + -औं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्याम सङ्ग निहारैं ।

(सू० १०।३७।८)

० ० ०

धा० निहार  $\wedge$  निहार + -औं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हुं

जो मांगी सो देहुं तुरतही ।

(सू० ८।१४।८)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० दे + -हुं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिंग - वस्तुवचन -

-एँ

कै सी करें उपाय ।

(सू० १०।५८९।२१)

यहँ कहा संवाद जाह हम ।

(गंगा० ३।१८।२)

घा० कर ञकृ + -एँ

(सूर)

घा० कह ञकृ + -एँ

(रत्नाकर)

छिन हीं मैं गृज घोह बहावें ।

(सू० १०।९२९।३)

पानी सी बहावें हम ।

(वी० ७।२।४)

घा० बहाल ञबहाव् + -एँ

(सूर)

घा० बहाल ञबहाव् + -एँ

(रत्नाकर)

कुमा करी हम जायसु पावें ।

(सू० १०।९२७।२)

उन जांतिनि पूरावें हम ।

(वी० ७।२।६)

घा० पाल ञपाव् + -एँ

(सूर)

घा० पूराव ञपूराव् + -एँ

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग - सबवचन -

ठे -उं

केहि मारग में जाउं सखी री ।

(सू० १०।११११।१)

० ० ०

घा० जा + -उं

सूर

घा० ० ०

रत्नाकर

नेननि बैठक बैठें ।

(सू० १०।११११।९)

० ० ०

घा० दे + -उं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऊं

पद्धति नई चलाऊं ।

(सू० १०।१८४७।४)

महा महिमा दिखाऊं मैं ।

(वी० १२।१।४)

धा० चला + -ऊं

(सूर)

धा० दिखा + -ऊं

(रत्नाकर)

तुमहिं मिलाऊं नंद दुलारी

(सू० १०।२१६६।५)

पानि आपनी गहाऊं मैं ।

(वी० १४।१।२)

धा० मिला + -ऊं

(सूर)

धा० गहा + -ऊं

(रत्नाकर)

यह दुःख काहि सुनाऊं ।

(सू० १०।१८४७।६)

जाप चढ़ि घाऊं कै ।

(वी० १४।१।४)

धा० सुना + -ऊं

(सूर)

धा० घा + -ऊं

(रत्नाकर)

-औं

भूलि नहीं अब मान करौं री ।

(सू० १०।२१०२।१)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० कर ५ कर + -औं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

काहें बृथा मरौं री ।

(सू० १०।२१०२।२)

० ० ०

(रत्नाकर)

००० धा० मर ५ मर + -औं

(सूर)

००० ० ० ०

(रत्नाकर)



ऐसे तन में गर्व न राखीं ।

० ० ०

धा० राख ५ राख् + -औं

० ० ०

-हुं

लिखि लेहु दूनों देहु ।

० ० ०

पा० दे + -हुं

० ० ०

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन -

-हैं

कहा कहें धा नंद-नंदन सीं ।

कौन के आगेँ पुकार करें ।

धा० कह ५ कह् + -हैं

धा० कर ५ कर् + -हैं

हम तजें तुम्हारी गाउँ ।

मंजु खवि छाजें हम ।

धा० तज ५ तज् + -हैं

धा० छाज ५ छाज् + -हैं

कहि अलि कहा विचारें ।

तासीं कहा रैखें हम ।

धा० विचार ५ विचार् + -हैं

धा० रैख ५ रैख् + -हैं

-हिं

अब न देहि उराहनी ।

० ०

(सू० १०।२१०२।३)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।२१६७।४)

(रत्नाकर)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३५४१।२)

(शृ० ७८।३)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।१४६१।३८)

(र० १।२।२)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३५४८।१)

(शृ० ९१।४)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३२२८।४)

धा० दे + -हिं

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

राधा कहू मनिहिं जाहिं ।

(सू० १०।१७६९।१)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० जा + -हिं

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मध्यम छन्द

पुल्लिंग- एकवचन -

-ऐ

जो कहू कहै करै हम सोहै ।

(सू० १०।१४६३।२)

० ० ०

धा० कह ५ कह् + -ऐ

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिंग- बहुवचन -

-ऐ

तारि सकैं तो तारैं ।

(सू० १।१८३।६)

जाय कहैं उनके गूँत हैं ।

(उद्धव० ७१।८)

धा० तार ५ तार + -ऐ

(सुर)

धा० कह ५ कह् + -ऐ

(रत्नाकर)

-जो

कोटिक जतन कहौ जो ऊघी ।

(सू० १०।३६१२।२)

बय जो कहौ तो कहैं ।

(उद्धव० ६३।६)

धा० कह ५ कह् + -जो

(सुर)

धा० कह ५ कह् + -जो

(रत्नाकर)

रहै रहौ तो क्यो कह्यो ।

० ० ०

घा० रह ८ रह् + -जी

० ० ०

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-----

-से

कहे तो बनफ गेह दे पछवीं ।

० ० ०

घा० कह ८ कह् + -से

० ० ०

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-----

-जी

नहिं जीतो हरि हो ।

० ० ०

घा० जीत ८ जीत् + -जी

० ० ०

जब हौ पावो घात ।

० ० ०

घा० पाव ८ पाव् + -जी

० ० ०

षट रितु हक फा क्यो रहौ ।

० ० ०

घा० रह ८ रह् + -जी

० ० ०

(सू० १०।१४११।१)

(सू०)

(रत्ना०)

(सू० १।७१।३)

(रत्ना०)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।१३४२।६)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३३०।२)

(

(सू०)

(रत्ना०)

(सू० १०।१३४२।२)

(सू०)

(रत्नाकर)

अन्य पुनः -

पुल्लिङ्ग - एकवचन

-इ

जातें होइ अकाज जापनौ ।

(सू० १०।२१०२।२)

होइ मिलन पुनि जाइ ।

(गंगा० ५।५०।४)

घा० हो + -इ

(सूर)

घा० हो + -इ

(रत्नाकर)

-ई

सुधी कहा सब करइ ।

(सू० १।४८।६)

० ० ०

(

घा० कर + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

कोन ऐसी जो मोहित न होइ ।

(सू० ८।१०।१०)

० ० ०

घा० हो + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ऐ

भरे ती मंडल भेदि भानु की ।

(सू० ९।१५२।६)

सुरसरि जानन हैत करे कानन तप भारी ।

(गंगा० ५।४२।२)

घा० मर ५ मर + -ऐ

(सूर)

घा० कर ५ कर + -ऐ

(रत्नाकर)

कोन सुने यह बात हमारी

(सू० १।१६०।१)

जब जब विपत्ति-समुद्र याहि बौरन कीं कोपे ।

(गंगा० १२।३९।३)

घा० सुन ५ सुन + -ऐ

(सूर)

घा० कोप ५ कोप + -ऐ

(रत्नाकर)

तुम पे कौन दुहावे गया ।

(सू० १०।७३४।१)

है जो वास पूरावे ।

(गंगा० ५।५०।४)

घा० दुहाव  $\cup$  दुहाव् + -ऐ

(सूर)

घा० पूराव  $\cup$  पूराव् + -ऐ

(सूर रत्नाकर)

पुल्लो- बह्वचन -

-हैं

कुल रहैं दोउ भाइ ।

(सू० १०।५८९।९०)

तैं सगर के सुवन ।

(गंगा० ६।८।३)

घा० रह  $\cup$  रह् + -हैं

(सूर)

घा० तर  $\cup$  तर + -हैं

(रत्ना०)

मितैं स्याम बक्सान् री ।

(सू० १०।२१०३।१)

कैं प्रेम की नेम सकल ।

(गंगा० १२।३८।४)

घा० मिल  $\cup$  मिल् + -हैं

(सूर)

घा० कर  $\cup$  कर + -हैं

(रत्नाकर)

स्याम बलराम वचैं घर ।

(सू० १०।५८९।२८)

गोलोक नाथ सादर आराधैं ।

(गंगा० १२।३८।४)

घा० बच  $\cup$  बच् + -हैं

(सूर)

घा० आराध  $\cup$  आराध् + -हैं

(रत्नाकर)

-हिं

ये नहिं होहिं हमारे ।

(सू० १०।२२६८।३)

होहिं भारत के भारत ।

(गंगा० १३।१५।४)

घा० हो + -हिं

(सूर)

घा० हो + -हिं

(रत्नाकर)

० ० ०

(सू०)

करि कृपा तु बर देहिं ।

(गंगा० ६।२४।२)

० ० ०

(सूर)

धा० दे + -हिं

(रत्नाकर)

० ० ०

(सू०)

लेहिं यह काज सीस पर

(गंगा० ६।४२।२)

० ० ०

(सूर)

धा० लेहि ले + हि

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग-एवञ्ज -

-उ

कस मेरी परतिज्ञा जाउ ।

(सू० १।२७४।१)

० ० ०

धा० जा + -उ

(सूर)

धा० ० ०

(रत्नाकर)

-ए

जाकी जा मैं चले कहानी ।

(सू० १।२२६।३)

फैले बरसाने मैं रावरी कहानी यह ।

(उद्ध० ८५।७)

धा० चल ५ चल + -ए

(सूर)

धा० फैल ५ फैल + -ए

(रत्नाकर)

-ऐ

रहै हमारी साथ ।

(सू० १०।२२६।६)

लाज समाज पे राज गिरी ।

(सू० २६।४)

धा० रह-रह + -ऐ

(सूर)

धा० गिर-गिर + -ऐ

(रत्ना०)

० ० ०

(सूर)

जाति सुसरि आहं भौ ।

(गंगा० ८।५।४)

०	०	०	(सूर)
घा०	पर ७ पर् + -ऐ		(रत्ना०)
०	०	०	(सू०)
तीं जावे मदि गंग ।			(गंगा० ५।३९।४)
०	०	०	(सूर)
घा०	जा० ७ जाव् + -ऐ		(रत्ना०)
<u>स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -</u>			
<u>-----</u>			
-ऐ			
हम देखै वे रोवे ।			(सूर० १०।२२२८।४)
गंग जावे जवनी पर ।			(गंगा० ६।८।२)
घा०	रोव ७ रोव् + -ऐ		(सूर)
घा०	जा० ७ जाव् + -ऐ		(रत्नाकर)
सूर सखी बूफैं यह केहौ ।			(सूर० १०।१७७२।६)
०	०	०	(
घा०	बूफ ७ बूफ् + -ऐ		(सूर)
०	०	०	(रत्नाकर)
जल बूहुत नौका मिलैं ।			(सू० १०।५८९।२३३)
०	०	०	
घा०	मिल ७ मिल् + -ऐ		(सूर)
०	०	०	(रत्नाकर)

संभाव्य मविष्यत् काल में सूर और रत्नाकर के क्रिया-  
पदों में बहुत कुछ साम्य मिलता है । कहीं-कहीं सूर काव्य में प्रयोग अधिक मिलते

हैं। रत्नाकर के काव्य में कुछ रूप तो पर्याप्त संख्या में तथा कुछ कम संख्या में मिलते हैं। जहाँ पर तो रत्नाकर के वे प्रयोग मिलते ही नहीं हैं। उच्चम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन में "ऊँ" प्रत्यय दोनों कवियों ने समान रूप से अपनाया है। "उँ", "औँ", "हुँ" प्रत्ययों का प्रयोग सूर ने किया है। रत्नाकर ने नहीं। बहुवचन में "हैं" का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में भी "ऊँ" का प्रयोग समान तथा "औँ", "हुँ" का प्रयोग केवल सूर ने किया है। स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में "हैं" का प्रयोग समान तथा "हिं" का प्रयोग रत्नाकर ने नहीं किया है। सूर काव्य में "हिं" का प्रयोग मिलता है।

छठ मध्यम पुरुष में पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर ने "है" का प्रयोग किया है। रत्नाकर ने इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया है। बहुवचन में "हैं", "औँ" आदि प्रत्यय जोड़कर दोनों कवियों ने क्रिया-पदों की रचना की है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में सूर ने तो "है" प्रत्यय का प्रयोग किया है बल्कि जबकि रत्नाकर ने इस प्रत्यय का प्रयोग नहीं किया है। बहुवचन में "औँ" जोड़कर सूर ने तो क्रिया-पद बनाये हैं। रत्नाकर ने इन प्रत्ययों का प्रयोग नहीं किया है।

अन्य पुरुष में पुल्लिङ्ग-एकवचन में "हूँ", "हैं" का प्रयोग तो दोनों कवियों ने किया है। "हूँ" का प्रयोग सूर ने ही किया है, रत्नाकर ने नहीं। बहुवचन में "हैं" का प्रयोग दोनों कवियों के क्रिया-पदों में समान रूप से मिलता है। "हिं" का प्रयोग सूर काव्य में कम तथा रत्नाकर काव्य में अधिक हुआ है। स्त्रीलिङ्ग एकवचन में "है" का प्रयोग दोनों कवियों ने किया है। "है" का प्रयोग रत्नाकर ने क्रिया-पदों में अधिक हुआ है। बहुवचन में "हैं" का प्रयोग सूर काव्य में अधिक तथा रत्नाकर काव्य में कम मिलता है।



## संदेहार्थ

### १- संदिग्ध वर्तमानकाल -

इस काल में वर्तमान घटना के सम्बन्ध में संदेह ही रहता है। वर्तमानकालिक घटना अनिश्चित होती है। इस प्रकार के प्रयोग वर्तमानकालिक वृद्धन्त के साथ "होनों" सहायक-क्रिया के विवृत रूपों का प्रयोग संदेह व्यक्त करने के लिए किया है।

### पुल्लो- एकवचन -

-एह-

ऐसी विधि गिरि परसत खैहै ।

(सू० १०।१०९।४)

०            ०            ०

या० परस + -त + या० हो + ख + खैहै (सूर)

०            ०            ०

(रत्नाकर)

भारी कहाक करत ह्वैहै ।

(सू० १०।३१७४।१)

० ० ०

घा० कर + -त + घा० हो ॥ ह्व् + -रैहै (सू)

० ० ० (रत्नाकर)

पुल्लिंग-बहुवचन -

-रैहैं

तुव जनसैर करत सब ह्वैहैं ।

(सू० १०।१६९०।४)

० ० ०

घा० कर + -त + घा० हो ॥ ह्व् + -रैहैं (सू)

० ० ० (रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

०बैहैं०व -रैहै

लीफति ह्वैहै भैया ।

(सू० १०।६७७।३)

० ० ०

घा० लीफ + -ति + घा० हो ॥ ह्व् + -रैहै (सू)

० ० ० (रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-रैहैं

अव आवति ह्वैहैं दधि लीन्है ।

(सू० १०।१४९४।३)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० आव + -ति + घा० हो ॥ ह्व् + -रैहैं (सू)

० ० ० (रत्नाकर)

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि सूर काव्य में संदिग्ध वर्तमानकाल के रूप बहुत कम मिलते हैं। रत्नाकर के काव्य में इस प्रकार के रूपों का अभाव है। उन्होंने ऐसे प्रयोग अपने काव्य में नहीं किये हैं।

## २- संदिग्ध भूतकाल -

इस काल में किसी बीती हुई घटना के विषय में संदेह व्यक्त किया जाता है। इस प्रकार के प्रयोग सूर काव्य में बहुत ही कम मिलते हैं। रत्नाकर ने तो इस प्रकार के प्रयोग ही नहीं किये हैं। इसमें भूतकालिक सामान्य क्रिया-पद के साथ 'होनो' सहायक क्रिया-पद का भविष्यतकालिक रूप प्रयोग होता है।

### पुल्लिंग- एकवचन -

-ऐहै

माखन मगिराख्यो ह्वैहै ।

(सू० १०।३२२०।३)

०                      ०                      ०

धा० राख <sup>अख</sup> राख + -यी + धा० हो <sup>अख</sup> + -ऐहै (सूर)

०                      ०                      ० (रत्नाकर)

### पुल्लिंग- बहुवचन -

०                      ०                      ०

०                      ०                      ०

### स्त्रीलिंग- एकवचन -

-ऐहै

भूख लीह्वैहै लालन कीं ।

(सू० सारा० १९३।२)

०                      ०                      ०

धा० ल <sup>ली</sup> + -है + धा० हो <sup>अख</sup> + -ऐहै (सूर)

०                      ०                      ० (रत्नाकर)

स्त्रीलिंग - वस्तुचन -

-ऐहैं

बहु पहुंची ह्वेहैं ।

(सू० १०।४४३।५)

०                      ०                      ०

धा० पहुंच् अपहुंच् + -हैं + धा० जो लह् + -ऐहैं

(सू)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

इस प्रकार के प्रयोग सूर काव्य में न के बराबर हैं। रत्नाकर ने तो ये प्रयोग किये ही नहीं हैं ।

### वाज्ञार्थ

इस वर्ग के अंतर्गत दो काल जाते हैं-

१- प्रत्यक्ष विधि

२- परोक्ष विधि

१- प्रत्यक्ष विधि -

इस काल में वे क्रिया-पद जाते हैं जिन्से अनुमति, प्रश्न, सम्मति, वाज्ञा, उपदेश, प्रार्थना, लागूह आदि सूचित होते हैं। ऐसे प्रयोग सूर काव्य में तो बहुत मिलते हैं। रत्नाकर ने इस प्रकार के प्रयोग किये हैं। धातु में या उसके विकृत रूप में जिन प्रत्ययों का योग सूर और रत्नाकर ने किया है, वे निम्न हैं-

पुल्लिंग - एकवचन -

- शून्य

सोवत कह चेत रे रावन ।

(सू० ९।११४।३)

०                      ०                      ०

घा० चेत + -शून्य

० ०

-इ

राम कहि वीरे ।

कह्यो बैगि चलि ।

घा० कह् + -इ

घा० चल + -इ

-उ

सीतल चंदन कछ ।

० ०

घा० कटा + -उ

० ०

सुनु त्रिभुवन पति ।

० ०

घा० सुन सुन् + -उ

० ०

-ऐ

ले भैया केवट उतराहे ।

० ०

घा० ले + -ऐ

० ०

पुल्लिङ्ग-बहुवचन

-इए

जागिए गौपाल लाल ।

० ०

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १।५९।४)

(हरि० ३।३२।४)

(सूर)

(रत्ना०)

(सू० १०।४१।२)

(सूर)

(रत्ना०)

(सू० १।१७७।२)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० ९।४०।१)

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १०।२०५।१)

धा० जाग ५ जाग् + -हए

० ० ०

-हए

प्रभु लाज परिहरे ।

० ० ०

धा० घर ५ घर + -हए

० ० ०

उठौं मुख घोहरे ।

० ० ०

धा० घो + -हए

० ० ०

-हऐ

दरस परस कीजे ।

ऐसी कहु कीजे ।

धा० कर ५ क् + -हऐ

धा० कर ५ क् + -हऐ

चित- चरन-कमल दीजे ।

चित सहस्र निज दीजे ।

धा० देह् + -हऐ

धा० देह् + -हऐ

ध्यान नैन महि लीजे ।

होहि इच्छा सो लीजे ।

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १।११०।१)

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १०।४३९।४)

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १।७२।२)

(हरि० १।२१।१)

(सूर)

(रत्ना०)

(सू० १।७२।१)

(हरि० १।२३।२)

(सूर)

(रत्नाकर)

(सू० १।७२।४)

(हरि० २।१७।१)

घा० ले ७ल् + -हजे

(सूर)

घा० ले ७ल् + -हजे

(रत्नाकर)

-हजे

नृप के हाथ पत्र यह दीजो ।

(सू० १०।५८३।४)

० ० ०

घा० दे ७द् + हजे

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-हये

सींचिये कृपानिधि ।

(सू० १।९८।१२)

सींचिये उपाय केरि ।

(उद्धव० ८१।६)

घा० सींच ७ सींच् + -हये

(सूर)

घा० सींच ७ सींच् + -हये

(रत्नाकर)

सुनिये श्रीपति स्वामी ।

(सू० १।१४८।८)

पे कहिये बहू गृह-चरित्र ।

(हरि० १।१६।१)

घा० सुन ७ सुन् + -हये

(सूर)

घा० कह ७ कह् + -हये

(रत्नाकर)

-जो

मजो नंदलालहिं ।

(सू० १।७४।५)

उठो मई बहू बेर ।

(हरि० ४।९०।४)

घा० मज ७ मज् + -जो

(सूर)

घा० उठ ७ उठ् + -जो

(रत्नाकर)

सुनो बिनती सूरदास ।

(सू० १।२२६।९)

माता संग जावो ।

(हरि० ३।३४।१)

घा० सुन ७ सुन् + -जो

(सूर)

घा० जा ७ जाच् + -जो

(रत्नाकर)

-औ

गुन ज्वगुन न बिचारी

(सू० १।१११।१)

ऊयो कही सुयो सो ।

(उद्धव० ३६।१)

घा० विचार ∪ विचार + -औ

(सूर)

घा० कह ∪ कह + -औ

(रत्नाकर)

सुनी करना-मूल ।

(सू० १।११।१)

पय मधुरा की गही

(उद्धव० ४२।१)

घा० सुन ∪ सुन् + -औ

(सूर)

घा० गह ∪ गह् + -औ

(उद्धव)

कत ब्रीड़त, कोउ और बतावो

(सूर० १।१३६।२)

यहा मिलिहै पतावी हमें ।

(उद्धव० ६३।७)

घा० बताव ∪ बताव् + -औ

(सूर)

घा० पताव ∪ बताव् + -औ

(रत्नाकर)

-हु

भजहु न मेरे स्याम मूरारि ।

(सू० १।२१२।१)

कहहु महासप कोन बाप ।

(हरि० ३।११।२)

घा० भज + -हु

(सूर)

घा० कह + -हु

(रत्नाकर)

मधुर सूर गावहु ।

(सू० १०।१७१।१)

राज-राज छमि करहु ।

(उद्धव० हरि० ३।११।२)

घा० छी गाव + -हु

(सूर)

घा० कर + -हु

(रत्नाकर)

नंदहिं नांव दिखावहु ।

(सू० १०।१७१।२)

हमहु अपराध हमारे ।

(हरि० २।२२।४)



धा० ~~खिख~~ दिखाय + -हु

(सूर)

धा० हय + -हु

(रत्ना०)

स्त्रीलिंग - एवमवन -  
-----

-ह

सोच न करि तू माता ।

(सू० १।८०।२)

० ० ०

धा० कर ॐ कर् क -ह

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

तू समुक्ति चित मैं ।

(सू० १।७९।१)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० समुक्त ॐ समुक्त् + -ह

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-उ

उठि जाभूषन राजु ।

(सू० १।७९।५)

० ० ०

धा० साज ॐ साज् + -उ

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

दिज्जी कहु कव रहै ।

(सू० १।८१।१)

० ० ०

धा० कह ॐ कह् + -उ

(सूर)

० ० ०

(रत्नावर)

जागु जसोदा ।

(सू० १०।१४।२)

० ० ०

धा० जाग ॐ जाग् + -उ

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)



-उ

अपनीं गाउं लेउ नंदरानी ।

(सू० १०।३२२।१)

० ० ०

(रत्ना०)

घा० ले + -उ

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-जो

देखो माहें दधि सुत में दधि जात ।

(सू० १०।१७२।१)

० ० ०

घा० देख ५ देख + -जो

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-जो

नेकु चलो नंदरानी ।

(सू० १०।३३७।१)

चलो कीड़िन्य कह्यो तब ।

(हरि० ३।३१।३)

घा० चल ५ चल् + -जो

(सू)

घा० चल ५ चल् + -जो

(रत्नाकर)

मेरे कहें उधारी ।

(सू० १०।७९३।६)

देखो चह भयो मोर ।

(हरि० ४।८५।४)

घा० उधार ५ उधार + -जो

(सू)

घा० देख ५ देख + -जो

(रत्नाकर)

बांह उठाइ निहारी ।

(सू० १०।७९३।५)

क्रिया करि भौन सिधारी ।

(हरि० ४।८२।१)

घा० निहार ५ निहार + -जो

(सू)

घा० सिधार ५ सिधार + -जो

(रत्नाकर)

-६

तुम जानकी जनकपुर जाहु ।

(सू० १।३४।१)

प्रथम जाहु तुमहीं ।

(हरि० ३।२४।२)

घा० जा + -हु

(सूर)

घा० जा + -हु

(रत्नाकर)

लेहु पट धूषन ।

(सू० १०।७९३।२)

यातैं देवी देहु ।

(हरि० ४।७४।१)

घा० ले + -हु

(सूर)

घा० दे + -हु

(रत्नाकर)

जाह कर जोरहु ।

(सू० १०।७९०।३)

हरहु ताप के दाब ।

(गंगा० ८।१०।१)

घा० जोर + -हु

(सूर)

घा० हर + -हु

(रत्ना०)

प्रत्यक्ता विधि काल में सूर ने 'पुल्लिंग-एकवचन' में 'शून्य', 'ह', 'उ', 'ए' प्रत्यय प्रयोग किये हैं। रत्नाकर ने केवल 'ह' प्रत्यय का प्रयोग बहुत कम किया है। बहुवचन में 'हैं', 'हमें', 'औ', 'औ', 'हु' प्रत्यय तो दोनों के क्रिया-पदों में प्राप्य हैं। 'हए', 'हए', 'हंजो' आदि प्रत्यय केवल सूर के क्रिया-पदों में मिलते हैं। रत्नाकर के क्रिया-पदों में इनका अभाव है।

स्त्रीलिंग-एकवचन में 'ह', 'उ', 'ए', 'हि' प्रत्यय सूर ने तो प्रयोग किये हैं। रत्नाकर के क्रिया-पदों में इन प्रत्ययों का अभाव तो है ही, साथ ही स्त्रीलिंग-एकवचन रूप प्रत्यक्ता विधि काल में मिलते ही नहीं हैं। बहुवचन में 'हैं', 'औ', 'हु' प्रत्यय दोनों ने प्रयोग किये हैं। 'उ', 'औ' सूर के क्रिया-पदों में मिलते हैं। रत्नाकर ने इस प्रत्ययों का प्रयोग नहीं किया है।

## २- परोक्ष विधि -

इस वर्ग के रूपों में भविष्यत् काल की जोर संकेत होने के साथ आज्ञा, निवेदन, उपदेश, आशा आदि सूचित होते हैं ।

### पुल्लिङ्ग

#### -इयी

जिनती कहियो ।

(सू० १।१५४।१)

कहियो अतंक सौं ।

(वी० ४।८।४)

धा० कह् ∪ क्स् + -इयी

(सू०)

धा० कह् ∪ क्स् + -इयी

(रत्नाकर)

#### -इही

पुनि खेलिही सकारं ।

(सू० १०।२२६।२)

० ० ०

धा० खेल ∪ खेल् + -इही

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

#### -इयी

० ० ०

(सू०)

ससैक सकुवियो ना ।

(वी० ४।८।४)

० ० ०

(सू०)

धा० सकुव ∪ सकुव् + -इयी

(रत्नाकर)

### स्त्रीलिङ्ग

#### -इयी

मिलन हमारी कहियो ।

(सू० १०।७२७।२)

० ० ०

घा० कह ८ कह् + -इयो	(सूर)
० ० ०	(रत्नाकर)
तुम याहि मारियो ।	(सू० १०।३३०।२)
० ० ०	(रत्ना०)
घा० मार ८ मार् + -इयो	(सूर)
घा० ० ०	(रत्नाकर)
-इही	
बहुरि मिलिहो ।	(सू० १०।१७६९।४)
बसिहो नित मो सीस ।	(गंगा० ८।११।२)
घा० मिल ८ मिल् + -इहो	(सूर)
घा० बस ८ बस् + -इहो	(रत्ना०)
-ऐही	
हमकीं कसु देहो ।	(सूर० १०।१७६६।६)
खीहो नहि न्यारी ।	(गंगा० ८।११।२)
घा० दे ८ द् + -ऐही	(सूर)
घा० हो ८ ह्व् + -ऐही	(रत्नाकर)

पुच्छे में सूर ने "ऐयो" तथा रत्नाकर ने "इही" प्रत्यय प्रयोग नहीं किया है। सूरी लिंग में रत्नाकर ने "इयो" प्रत्यय अपने क्रिया-पदों में नहीं जोड़ा है। अन्य रूप समान हैं। अन्य कालों की अपेक्षा इस वर्ग में दोनों कवियों ने बहुत कम क्रिया-पद प्रयोग किये हैं।

#### संकेतार्थ

सामान्य- संकेतार्थ काल -

सूर और रत्नाकर ने संकेतार्थ के तीनों कालों में क्रिया-पदों का प्रयोग न करके केवल सामान्य संकेतार्थ काल में ही क्रिया-पदों का प्रयोग किया है।

ये प्रयोग धातु में "तीं", "ती", "ते" तथा "तो" प्रत्यय जोड़कर दिये हैं।  
 "हीं", "ही" स्त्रीलिंग तथा "ते", "तो" पुल्लिंग रूप बनाते हैं। "तीं",  
 "ती" एकवचन तथा "हीं", "ते" बहुवचन रूपों में प्रयुक्त होते हैं।

### पुल्लिंग- एकवचन

-ती

राम नाम चित धरती ।	(सू० १।२९७।१)
पावती कहूँ जी कौत ।	(शृ० ९३।५)
धा० धर + -ती	(सूर)
धा० ण ७ पाव + -ती	(रत्ना०)
कौत न फीट पकरती ।	(सू० १।२९७।६)
दिसावती सुभाव सोधि ।	(शृ० ९३।६)
धा० पकर + -ती	(सूर)
धा० दिखा दिसाव + -ती	(रत्ना०)
कौत न बात पूछाती ।	(सू० १।३०२।२)
आरनि की बिचल बसावती ।	(गं० ल० ५०।२)
धा० पूछा + -ती	(सूर)
धा० छछ बसाव + -ती	(रत्ना०)
जो जायो सो जाती ।	(सू० १।३०२।६)
कीन रतनाकर बनावती ।	(गं० ल० ५०।४)
धा० जा + -ती	(सूर)
धा० छछ बनाव + -ती	(रत्ना०)
तो हीं आस न करती ।	(सू० १।२०३।१)
सिव संकर कहावती ।	(गं० ल० ५०।६)

धा० कर + -ती

(सूर)

धा० छल्ल कहव + -ही

(रत्ना०)

पुल्लिङ्ग- धल्लवन

-ते

कैसें नंद-नंदन चित धरते ।

सू० १०।१३५४।३)

बल्लूक कहते तो सही ।

श्री० २०।८)

धा० धर + -ते

(सूर)

धा० कह + -ते

(रत्नाकर)

यह कुमया जी तवहीं करते ।

(सू० १०।३२०८।१)

ऊषी ब्रह्म ज्ञान को बखान करते ।

(उद्धव० ६६।७)

धा० कर + -ते

(सूर)

धा० कर + -ते

(रत्नाकर)

कसी कौन विधि भरते ।

(सू० १०।३२०८।३)

गंगधार में अपार चहते नहीं ।

(गं० ल० ४७।८)

धा० भर + -ते

(सूर)

धा० चह + -ते

(रत्नाकर)

हरि दरसन देते ।

(सू० १०।३७८६।१)

झाँडते न क्यौं हूँ संग ।

(गं० ल० २३।७)

धा० दे + -ते

(सूर)

धा० झाँड + -ते

(रत्नाकर)

देवे गर्भ नहीं अवतरते ।

(सू० १०।१६०७।३)

जी ना निरधारते ।

(गं० ल० ४१।७)

धा० अवतर + -ते

(सूर)

धा० निरधार + -ते

(रत्ना०)



स्त्रीलिंग - एकवचन -

-ती

जो यह भली मै-कहू होती ।

(सू० १०।१३१५।३)

जुन्हाहें ज्वाल होती सही ।

(शुं० १०६।३)

धा० हो + -ती

(सूर)

धा० हो + -ती

(रत्नाकर)

लाज छाड़ि संग जाती ।

(सू० १०।३३८१।४)

पहिले ही जी पधारती ।

(गंगा ल० ४६।५)

धा० जा + -ती

(सूर)

धा० पधार + -ती

(रत्नाकर)

औरनि सों दूआव जी करती ।

(सू० १०।१७२३।३)

पारती सूआसुर मे लातव लराहें क्यों ।

(शं० ल० ४६।६)

धा० कर + -ती

(सूर)

धा० पार + -ती

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

-तीं

जो कहु वूध कह्यो हम देतीं ।

(सू० १०।१५३०।३)

विष कों बखानतीं ।

(शुं० १०६।७)

धा० दे + -तीं

(सूर)

धा० बखान + -तीं

(रत्नाकर)

कहत न डरतीं छ तोहें ।

(सूर० १०।२३२१।२)

जानतीं फुजंग को सास ।

(शुं० १०६।५)

धा० डर + -तीं

(सूर)

धा० जान + -तीं

(रत्नाकर)

करि रहतीं हम कानि ।

(सू० १०।३६७८।३)

वीस बिसे जानतीं कहानी ।

(सु० १०६।१)

घा० रह + -तीं

(सूर)

घा० जान + -तीं

(रत्नाकर)

हस प्रकार सूर और रत्नाकर ने सामान्य सर्वेत्तार्थ काल के रूप में एक ही समान बनाये हैं ।

अध्याय - अष्टम

सूर और रत्नावर के संयुक्त  
क्रिया-पदों की  
तुलना

### सूर और रत्नाकर के संयुक्त क्रिया-पदों की तुलना

अर्थ में विशिष्टता लाने के लिए सूर और रत्नाकर ने दो या दो या दो से अधिक क्रिया-पदों का एक साथ प्रयोग कर संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं। संयुक्त क्रिया-पदों में एक क्रिया-पद मुख्य होता है तथा दूसरा उसका सहायक होता है। संयुक्त क्रिया-पदों को कालों की दृष्टि से विभाजित किया जा सकता है फिर भी संयुक्त क्रिया-पदों के प्रकार निश्चित ही हैं। अतः उन्हें आठ<sup>१</sup> प्रकार में ही विभक्त करना ही अध्ययन की दृष्टि से ठीक होगा। वैसे सूर और रत्नाकर ने संयुक्त क्रिया-पदों के विशेष प्रयोग भी किये हैं। इनमें वृद्धन्तों की दृष्टि में रखकर दोनों के संयुक्त क्रिया-पदों की तुलना की गई है।

#### १- क्रियार्थक संज्ञा से बने रूप -

क्रियार्थक संज्ञाओं के साथ दूसरा क्रिया-पद सहायक रूप में प्रयोग कर सूर और रत्नाकर ने संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं। ये दो प्रकार से बनाये हैं। "नो" तथा "बो" से बने क्रियार्थक संज्ञा रूपों के साथ विभिन्न कालों के क्रिया-पद प्रयोग किये हैं।

#### उच्चम पुरुष -

#### पुल्लिङ्ग-एकवचन -

-नो

बलदाऊ मीं आवन देहीं।

(सू० १०।२४०।४)

१- हिन्दी व्याकरण - गुरू - वाराणसी, सं० २०२९, पृ० २१५

ज्यों ही कछु कसन संदेस लग्यो ।

(उद्धव० ११५।१)

घा० अण् वाव + -न + घा० दे ञ्द् + -रैहों

(सूर)

घा० कद् + -न + घा० ला ञ् ला + -यो

(रत्नाकर)

काल्हि न जावन पैहों ।

(सू० १०।४१५।४)

० ० ०

घा० अण् वाव + -न + घा० पा ञ् प + -रैहों

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिंग - बहुवचन

-नो

देह नहिं मृतक जरावन ।

(हरि० ३।४६।२)

० ० ०

(सूर)

घा० दे + -त + घा० जराव + -न

(रत्नाकर)

० ० ०

(सूर)

स्त्रीलिंग - एकवचन -

प्रात जान मैं देहों ।

(सू० १०।४२०।६)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० जा + -न + घा० दे ञ्द् + -रैहों

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग- बहुवचन

-नो

० ० ०

(सूर०)

जावन न देति जाँधे विषम उसाँहें हम ।

(उद्धव० ५७।४)

०            ०            ०  
घा० की आव + -न घा० दे + ति

(सू)

(रत्नाकर)

मध्यम पुनः

पुल्लिङ्ग- एकवचन -

-नो

देखन दे बुंदावन चेदहिं ।

(सू १०।८०३।१)

०            ०            ०  
घा० देख + -न + घा० दे + -ऐ

(सू)

(रत्नाकर)

प्रिय अनिरौकहि जान दे ।

(सू १०।८०५।१)

०            ०            ०  
घा० जा + -न + घा० दे + -ऐ

(सू)

(रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग- बहुवचन -

-नो

करनदेहु इनकी मोहिं पूजा ।

(सू १०।३७६।२)

फुरन देहु बात रंच ।

(उद्धव ११०।३)

घा० कर + -न + घा० दे + -हु

(सू)

घा० फुर + -न + घा० दे + -हु

(रत्नाकर)

करन लो सु अनीति ।

(सू १०।३८७।३)

बिकनदेहु सम हीं पहिलीं ।

(हरि ३।२३।३)

घा० कर + -न + घा० ला + -ए

(सू)

घा० बिक + -न + घा० दे + -हु

(रत्नाकर)

जानदेहु हौं होती हौं चेरी ।

(सू० १०।८०७।२)

०                      ०                      ०

घा० जा + -न + घा० दे + -हु

(सू०)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

- बो

जब लिखे लगी ।

(शृंगार० १४१।६)

०                      ०                      ०

घा० लख लख् + -इवे + घा० ला लख् + -जी

(रत्नाकर)

०                      ०                      ०

(सू०)

०                      ०                      ०

(सू०)

तुम देखि स्रु अदेस रहिबो करी ।

(उद्धव० ४५।६)

०                      ०                      ०

(सू०)

घा० रह रह् + -इबो + घा० कर लक् + -जी

(रत्नाकर)

०                      ०                      ०

(सू०)

तुम लाख कहिबो करी ।

(उद्धव० ४५।८)

०                      ०                      ०

(सू०)

घा० कह लक् + रबी + घा० कर लक् + -जी

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग-एकवचन -

-नी

गोपालहिं माखन खान दे ।

(सू० १०।२७४।१)

०                      ०                      ०

घा० खा + -न + घा० दे लद् + -ऐ

(सू०)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

बदन बही लफटान दे ।

० ० ०

धा० लफटा + -न + धा० दे + -ए

० ० ०

स्त्रीलिंग- बहुवचन -

-नी

कहन लीं अब बढि-बढि बात ।

० ० ०

धा० कह + -न + धा० लग-लग + -ई

० ० ०

तबहीं तो घर फेठन पैसी ।

० ० ०

धा० फेठ + -न + धा० पा + -ई

० ० ०

दान दिये बिनु जान न पैसी ।

० ० ०

धा० जा + -न + धा० पा + -ई

० ० ०

-जी

अब चाहो जी उबारिबी ।

० ० ०

धा० चाह + -न + धा० उबार + -ई

० ० ०

(सू० १०।२७४।२)

(रत्नाकर)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।३५५।१)

(रत्ना०)

(सू०)

(रत्ना०)

(सू० १०।१९७२।२)

(सू०)

(रत्नाकर)

(सू० १०।१५४८।५)

(सू०)

(रत्नाकर)

(गंगा लहरी ३४।४)

(सू०)

(सू०)



### अन्य पुरुष

#### पुल्लिङ्ग- एकवचन -

##### -जो

कहन लग्यो वन बड़ी तामासी ।

(सू० १०।४८१।२)

लग्यी बहुरि सौ लखन ।

(गंगा० ३।२२।४)

धा० कह + -न + धा० लग् लङ् + -यी

(सूर)

धा० लग् लङ् + -यी + धा० लख + -न

(रत्नाकर)

मोसी मरन न पावे ।

(सू० १०।७५६।२)

कुवन क्वहुं नहिं पावे ।

(हरि० ३।५७।१)

धा० मर + -न + धा० पाव् पाप् + -ये

(सूर)

धा० कुक + -न + धा० पाव् पाप् + -ये

(रत्नाकर)

##### -वो

होह कान्ह को जह्यी ।

(सू० १०।३७६।८)

चित चारन गहिखी करे ।

(उद्धव० १।२)

धा० हो + -ह + धा० जा् जङ् + -ह्यी

(सूर)

धा० गह् गृह् + -ह्यी + धा० कर् कर् + -ये

(रत्नाकर)

० ० ०

(सूर)

सनेह लहिखी करे ।

(उद्धव० १।८)

० ० ०

(सूर)

धा० लह् लृह् + -ह्यी + धा० कर् कर् + -ये

(रत्नाकर)

#### पुल्लिङ्ग- बहुवचन-ष

##### -नो

जापु लो सेलन द्वारे पर ।

(सू० १०।३०१।२)

सुभावन लो जयीं कान्ह ।

(उद्धव० ५।३)

धा० ला ७ला + -ए + धा० खेल + -न

(सुर)

धा० सुभावन + -न + धा० ला ७ला + ए

(रत्नाकर)

हरि पीवन लागे ।

(सु० १०।१७४।३)

लागे पूछन मोल ।

(हरि० ३।१५।४)

धा० पीव + -न + धा० लाग ७ला + -ए

(सुर)

धा० लाग ७ला + -ए + धा० पूछ + -न

(रत्नाकर)

करन कलेउ न पाए ।

(सु० १०।५११।४)

० ० ०

(रत्नाकर)

धा० कर + -न + धा० पा + -ए

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-बो

ध्यान हुं तैं टरिबैं लो ।

(उद्धव० २४।२)

० ०

(सुर)

धा० टर ७ट + -बैं + धा० ला ७ला + -ए

(रत्नाकर)

० ० ०

(सुर)

घनस्याम करिबैं लो ।

(सु० उद्धव० २४।८)

० ० ०

(सु०)

धा० कर ७क + -बैं + धा० ला ७ला + -ए

(रत्ना०)

० ० ०

(सुर)

० ० ०

(सु०)

याह थखिबो करैं ।

(उद्धव० १७।४)

० ० ०

(सुर)

धा० यह ७यह + -बैं + धा० कर ७क + -रैं

(रत्नाकर)

०	०	०	(सू०)
सदा ऐसैं रहिवी करें ।			(उद्धव० ६७।६)
०	०	०	(सूर)
घा० रह ॥ रह् + -छपी + घा० कर ॥ कर् + -ऐ			(रत्ना०)

### स्त्रीलिङ्ग - एकवचन

-नो

मुखी रस लूटन लागी ।	(सू० १०।१२२१।१)
नीर ह्वै बहन लागी बात ।	(उद्धव० ४।८)
घा० लूट + -न + घा० लाग ॥ लाग् + -ई	(सूर)
घा० बह + -न + घा० लाग ॥ लाग् + -ई	(रत्नाकर)

लागी करन यिलाप ।

पी फाटन लागी	(सू० १०।११०९।३)
घा० लाग ॥ लाग् + -ई + घा० कर + -न	(हरि० ४।३२।१)
घा० फाट + -न + घा० लाग ॥ लाग् + -ई	(सूर)
	(रत्नाकर)

-बो

०	०	०	(सू०)
पातक जमाति चहै घात करि टारिवी ।			(गंगा लहरी ३२।२)
०	०	०	(सूर)
घा० चह ॥ चह् + -ऐ + घा० डार ॥ डार् + -हबी			(रत्नाकर)

### स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

-नो

चरन लपिं जित-हित सब गैयां ।	(सू० १०।१३८६।३)
कहन सबै लपिं ।	(उद्धव० २७।८)

धा० चर + -न + धा० लग् + -ई

(सूर)

धा० कह + -न + धा० लग् + -ई

(रत्नाकर)

चलन न देति ।

(सू० १०।४१०२।२)

मनी-का लान व देति ।

(हि० ९६।४)

धा० चल + -न + धा० दे + ति

(सूर)

धा० लग् + -न + धा० दे + ति

(रत्नाकर)

सवे भित्ति न्हान लगीं ।

(सू० १०।१७५९।६)

लगीं लान पछाड़ ।

(गंगा० ५।१३।३)

धा० न्हा + -न + धा० लाग् + -ई

(सूर)

धा० लाग् + -न + धा० ला + -न

(रत्नाकर)

इस प्रकार क्रियार्थक संज्ञा के योग से बने हुए संयुक्त क्रिया-पद सूर और रत्नाकर ने बनाये हैं। सूर ने "वो" के योग से न के बराबर संयुक्त क्रिया-पदों की रचना की है। रत्नाकर ने "वो" के विकृत रूपों को धातुओं में जोड़कर बहुत से प्रयोग किये हैं।

२- वर्तमानकालिक कृदन्त से बने रूप -

इस वर्ग के संयुक्त क्रिया-पदों में एक क्रिया-पद तो वर्तमानकालिक कृदन्त होता है तथा दूसरा क्रिया-पद उसका सहायक होता है। इस प्रकार के प्रयोग सूर और रत्नाकर दोनों के काव्य में पर्याप्त संख्या में प्राप्त होते हैं। पुल्लिङ्ग, लिंग तथा वचनों के अनुसार सूर के काव्य में अधिक रूप मिलते हैं। रत्नाकर के काव्य में कम तथा कहीं-कहीं न भी मिलते हैं।

उत्तम सुकव

पुल्लिङ्ग- सक्वचन

-त

भ्रमत फिर्यो मतिहीन ।

(सू० १४६।७)

० ० ०

घा० भ्रम + -त + घा० फिर फिर + -यो

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

राज काजहिं रहीं डोलत ।

(सू० १०।८१४।२)

० ० ०

घा० रह रह + -गी + घा० डोल + -त

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

बड़ी भयो जब दुखत रहींगी ।

(सू० १०।४००।५)

० ० ०

घा० दुख + -त + घा० रह रह + -गी

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग- वक्वचन -

००००००००००००००

० ० ०

० ० ०

स्त्रीलिङ्ग सक्वचन -

-ति

निसि वन रहति बिलोकति हरिमुख ।

(सू० १०।८०।२)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० रह + ति + घा० बिलोक + -ति

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

मैं तुमहीं बरजति रही हरि ।

(सू० १०।५८०।३)

० ० ०

घा० बरज + -ति + घा० रह रह + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन

-त

सुनत रहति सुवननि नंद-ढोटा ।

(सू० १०।६७३।४)

० ० ०

घा० सुन + -त + घा० रह + -ति

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-ति -

खेळ खेळति रह हिं अपनी पौरी ।

(सू० १०।६७३।३)

० ० ०

घा० खेल + -ति + घा० रह + -हिं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

की हम तुमकों कहति रहीं ।

(सू० १०।१७७०।४)

० ० ०

घा० कह + -ति + घा० रह रह + -ई

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मध्यम पुल्लिङ्ग -

पुल्लिङ्ग - एकवचन

० ० ०

० ० ०

### पुल्लिंग - वहुवचन

-त

देखत रही खिलौना कंदा ।

(सू० १०।१८१।७)

तुम रहे मली बिधि खेलत ।

(हरि० ४।४५।१)

धा० देख + -त + धा० रहर्ह + -गी

(सूर)

धा० रहर्ह + -ए + धा० खेल + -त

(रत्नाकर)

करत रहत उत्पत ।

(सू० १०।३१३४।६)

० ० ०

धा० कर + -त + धा० रह + -त

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

अब मो सौ अलसात जात हो ।

(सू० १।२५।८)

० ० ०

धा० अलसा + -त + धा० जा + -त + धा० हो + -गी (सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

### स्त्रीलिंग - वहुवचन

-ति

बहुत लालसा करति रही तुम ।

(सूर० १०।१७६६।३)

० ० ०

धा० कर + -ति + धा० रहर्ह + -र

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

### स्त्रीलिंग - वहुवचन -

-ति

जो कहति रहीं तुम ।

(सू० १०।१९४६।४)

० ० ०

घा० कह + -ति + घा० रह रह + -ई

(सू)

०

०

०

(रत्नाकर)

तव लीं देखति रह्यो ।

(सू १०।३१३।२)

०

०

०

(रत्ना०)

घा० देख + -ति + घा० रह रह + -इयौ

(सू)

०

०

०

(रत्नाकर)

प्यारी आवति रह्यो ।

(सू १०।७२७।१)

०

०

०

घा० आव + -ति + घा० रह रह + -इयौ (सू)

०

०

०

(रत्नाकर)

अन्य पुरुष -

पुल्लिङ्ग-सद्वक्त्र -

-त

करत फिरत माखन दधि चोरी

(सू १०।६७३।४)

चातक चहत ज्यौ रहत ।

(सू ७५।१)

घा० कर + -त + घा० फिर + -त

(सू)

घा० कह + -त + घा० रह + -त

(रत्नाकर)

खेत रह्यो घोष के बाहर ।

(सू १०।६०६।२)

०

०

०

घा० खेत + -त + घा० रह रह + -यौ

(सू)

०

०

०

(रत्नाकर)



पुलिङ्ग - बहुवचन -

-त

कौउ रहे बाकास देखत ।

(सू० १०।३८७।४)

रहत पितरनि के सोक्त ।

(गंगा० ५।२९।३)

घा० रह रह् + -र + घा० देख + -त

(सुर)

घा० रह + -ति + घा० सोच + -त

(रत्नाकर)

लीकत जात भाखन खात ।

(सू० १०।१००।१)

नित नाचत गुपाल रहैं ।

(उद्धव० ६०।१)

घा० लीक + -त + घा० जा + -त

(सुर)

घा० नाच + -त + घा० रह रह् + -ऐ

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एकवचन -

-ति

सुनति रहति यह बाकी ।

(सू० १०।३४३५।३)

वद्धति उमड़ति इमि आवति ।

(गंगा० १।२०।३)

घा० सुन + -ति + घा० रह् + -ति

(सुर)

घा० वद्ध + -ति घा० उमड़ + -ति + घा० छी आव + -ति (रत्नाकर)

अमृत लेति रहै यह ।

(सू० १०।१३०७।३)

छटा छहरति आवे छे ।

(गंगा० १।२)

घा० दे + -ति + घा० रह् + -रह् + -रहै

(सुर)

घा० छहर + -ति + घा० आव् + -रहै + घा० छी रह् + -रहै (रत्नाकर)

वह अमिलाष करति रही ।

(सू० १०।२७०९।२)

इमि रांचति --- वाहर आवति ।

(गंगा० १०।१५।१)

घा० कर + -ति + घा० रह् + -रह् + -रहै

(सुर)

घा० रांच + -ति + घा० आव + -ति

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग-बहुवचन -

-ति

चितवति रहति चकौर कंद ज्यों ।

(सू० १०।६३०।५)

गारति उतारति समृद्धि- प्रमदा रहें ।

(र० २।१।४)

घा० चितव + -ति + घा० रह + -ति

(सुर)

घा० उतार + -ति + घा० रह् + -रह् + -रहै

(रत्नाकर)

जुबति रहीं तिन टेरति ।

(सू० १०।१५०१।४)

० ० ०

(रत्नाकर)

घा० रह् + -रह् + -रहै + घा० टेर + -ति

(सुर)

० ० ०

(रत्नाकर)

वर्तमानकालिक कृदन्त के योग से बने छह संयुक्त क्रिया-पद सुर काव्य में उच्च पुरुष पुल्लिङ्ग बहुवचन तथा मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग एकवचन को छोड़कर सभी छह पुरुषों के लिंग तथा वचनों से प्राप्त हैं। रत्नाकर ने छह मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग बहुवचन तथा अन्य पुरुष के दोनों लिंगों के दोनों वचनों में

प्रयोग किये हैं। अतः इससे स्पष्ट है कि रत्नाकर के काव्य में वर्तमानकालिक कृदन्त के मेल से बने छद्म संयुक्त क्रिया पदों की संख्या सूर की अपेक्षा बहुत कम है।

### ३- भूतकालिक कृदन्त से बने छप -

इस वर्ग में वे संयुक्त क्रिया-पद आते हैं जो भूतकाल की सामान्य क्रिया के साथ किसी भी काल की सहायक क्रिया-पद आ जाता है। सूर और रत्नाकर ने इस प्रकार के प्रयोग अपने काव्य में किये हैं। सूर के प्रयोग अधिक मिलते हैं।

#### उत्तम पुरुष

प्राप्ति - प्रकृत -

तार्कें डर में माज्यी चाहत ।

(सूर० १।१७।३)

तिहिं साउं ना समाउं, उबार्यो रहों ।

(श्री० २।२)

धा० माज् माज् + -यो + धा० चाह + -त

(सूर)

धा० उबार् उबार + -यो + धा० रह् रह् + -ओ

(रत्नाकर)

में घर बैठो रहों ।

(सूर० १०।४२०।५)

जोगता हर्यो रहों ।

(श्री २।४)

धा० बैठ् बैठ् + -ओ + धा० रह् रह् + -रहों ।

(सूर)

धा० हर् हर् + -यो + धा० रह् रह् + -ओ

(रत्ना०)

#### पुल्लिंग - बहुवचन

० ० ०

० ० ०

#### स्त्रीलिंग - एकवचन

तुम्हें कह्यो चाहति हों ।

(सूर० १०।१५१७।३)

रहों वाही तरंग में दंग परी ।

(शुं० ८७।१)

घा० कह् + -यी + घा० चाह + -ति + घा० हो + -गीं (सूर)

घा० रह् + -गीं + घा० पर + -है (रत्नाकर)

में गृह -काज रहीं लपटानी ।

(सू० १।८८५।२)

० ० ०

(

घा० रह् + -गीं + घा० लपटा + -नी

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन

हारी परीं बुन्दावन दंडत ।

(सू० १०।४०४५।४)

० ० ०

घा० हार + -है + घा० पर + -है

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

जब-जब बंधन क्षोरयो चाहति ।

(सू० १०।३४७।९)

० ० ०

घा० क्षोर + -यी + घा० चाह + -ति ।

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

मध्यम पुरुष

पुल्लिङ्ग - एकवचन

० ० ०

० ० ०

पुल्लिङ्ग- बहुवचन

कहा कियो चाहत हो ।

(सू० १०।३५७७।४)

० ० ०

घा० कर लकि + -यी + घा० चाह + -त + घा० हो लह + -बो (सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

मधुकर कियो कहा अब चाहत ।

(सू० १०।३६०९।१)

० लो० कर लकि + -यो + लो० चाह + -ह

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - एवक

(खल)  
(रत्ना०)

० ० ०

० ० ०

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन

० ० ०

० ० ०

अन्य पुरुष

पुल्लिङ्ग - एवक

अजहूँ कहा कियो चाहत है ।

(सू० १०।३४७८।४)

अनुष्टुप ठरयो रहे ।

(श्री ० १९१४)

घा० कर लकि + -यी + घा० -त + घा० हो लह + -ये (सूर)

घा० ठर लह + -यी + घा० रह लह + -ये (रत्नाकर)

अब तो पर्यो रह्यो ।

(सू० १।१९१।६)

जियान यो पर्यो रहे ।

(श्री ० १९।८)

घा० पर लपर + -यी + घा० रह लरह + -हेगी (सूर)

घा० पर लपर + -यी + घा० रह लरह + -ये (रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग - बहुवचन

सबद जोरि बोल्यो चाहत है ।

(सू० १०।२६२।३)



सूर ने तो भूतकालिक वृद्धन्त से संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं किन्तु रत्नाकर ने उनमें से उत्तम पुरुष स्त्रीलिङ्ग बहुवचन, मध्यम पुरुष पुल्लिङ्ग बहुवचन तथा अन्य पुरुष पुल्लिङ्ग बहुवचन में भूतकालिक वृद्धन्त से बने संयुक्त क्रिया-पद नहीं बनाये हैं। शेष दोनों कवियों के रूप समान हैं।

#### ४- पूर्वकालिक वृद्धन्त से बने रूप

इस वर्ग के संयुक्त क्रिया-पदों में एक क्रिया-पद पूर्वकालिक वृद्धन्त होता है तथा दूसरा क्रिया-पद सहायक होता है। इस प्रकार के रूप सूर और रत्नाकर दोनों ने प्रयोग किये हैं। सूर काव्य में इनकी संख्या बहुत अधिक है।

#### उत्तम पुरुष

कहाँ लोटि घरनि पै -

कहाँ लोटि घरनि पै ।

(सू० १०।१९३।२)

सुख दरि देखीं मैं ।

(वी० २।२।४)

धा० जा ॥ ज् + -देहीं + धा० लोट ॥ लोट् + -ह (सूर)

धा० दर ॥ दर् + -ह + धा० देख् + -देहीं (रत्नाकर)

नहिं मागि सकीं ।

(सू० १०।४८१।६)

०                      ०                      ०

धा० भाग ॥ भाग् + -ह + धा० सक ॥ सक् + -कीं (सूर)

०                      ०                      ० (रत्नाकर)

#### पुल्लिङ्ग - बहुवचन

कहा चोरि हम लेहैं ।

(सू० १०।६७२।५)

लोलि कलहैं सब देहैं ।

(हरि० १।३३।२)

घा० बोर ७बोर + -इ + घा० ले ७ल् + -ऐहें (सूर)  
 घा० खोल ७खोल + -इ + घा० दे ७दे + -ऐहें (रत्नाकर)

रुझिए ताही ठौर । (सू० १०।४२३।३)

० ० ०  
 घा० रह ७रह + -इ + घा० जा ७ग + -ए (सूर)  
 ० ० ० (रत्ना०)

स्त्री लिंग- एकवचन

हैं बलि जाउं बलीले लालकी । (सू० १०।१०५।१)  
ती बोलि ल्याऊं उन्हें । (शुं० १२६।३)  
 घा० बल ७बल् + -इ + घा० जा + -उ (सूर)  
 घा० बोल ७बोल् + -इ + घा० ल्या + ऊं (रत्नाकर)

स्त्री लिंग- बहुवचन

हम पचि हारि परीं । (सू० १०।२९१।६)  
भोगि रही विरचे विरंचि के । (उद्धव० ५३।५)  
 घा० हार ७हार + -इ + घा० पर ७पर + -ई (सूर)  
 घा० भोग ७भोग् + -ई + घा० रह ७रह + -ई (रत्नाकर)

कहां जेहे दुंढि लैहें । (सू० १०।१०९८।४)  
लाइ गरे फांसी मरि जेहें । (हरि० ४।६८।३)  
 घा० दुंढ ७दुंढ् + -इ + घा० ले ७ल् + -ऐहें (सूर)  
 घा० मर ७मर् + -इ + घा० जा ७ज् + -ऐहें (रत्नाकर)

सकीं सकुनि चाखि । (सू० १०।१२२३।४)  
यह बानक बिचारि चुकीं । (उद्धव० ४३।६)  
 घा० सक ७सक् + -ई + घा० चाख ७चाख् + -इ (सूर)  
 घा० बिचार ७बिचार + -इ + घा० चुक ७चुक् + -ई (रत्नाकर)







अन्य पुनः

पुल्लिङ्ग- एकवचन

को करि लेत सहाइ ।	(सू० १०।८१।५)
कीन करि सकत बड़ाहै ।	(गंगा० १।३।३)
घा० कर ॥ कर् + -इ -घा० ले + -त	(सूर)
घा० कर ॥ कर् + -इ + घा० सक + -त	(रत्नाकर)
बहुत दुरितें बाइ पायी जर ।	(सू० १०।९१।२)
बोलि उठ्यो पुनि सत्य ।	(हरि० ४।९५।३)
घा० जा + -इ + घा० पर ॥ पर् + -यो	(सूर)
घा० बोल ॥ बोल् + -इ + घा० उठ ॥ उठ् + -यो	(रत्नाकर)

पुल्लिङ्ग- बहुवचन

इतैं नंद बुलाइ लेत हैं ।	(सू० १०।९८।६)
पाइ सकत हैं परम धाम ।	(हरि० ४।१०५।१)
घा० बुला + -इ + घा० ले + -त + घा० हो ॥ ह् + -हैं (सूर)	
घा० पा + -इ + घा० सक + -त + घा० हो ॥ ह् + -हैं (रत्नाकर)	

हरि सोइ गए री ।	(सूर १०।२४७।१)
दंपति हृदके न थांमि	(हरि० ३।१२।४)
घा० सो + -इ + घा० जा ॥ ग + -ए	(सूर)
घा० सक ॥ सक् + -इ + घा० थांमि ॥ थांम् + -इ	(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- एकवचन

लेति अंचल डारि ।

सू० १०।११८।४

यहू बात बनाइ लेति । (हिं० ६७।२)

घा० ले + -ति + घा० डार० डार + -ई (सूर)

घा० बना + -इ + घा० ले + -ति (रत्नाकर)

किसरि गई नंद-नारी । (सू० १०।१६७।६)

फौलि गई चहुं ओर । (हरि० ४।८७।३)

घा० किसर ० किसर + -इ + घा० जा ० ग + -ई (सूर)

घा० फौल ० फौल् + -इ + घा० जा ० ग + -ई (रत्नाकर)

लानि रही गृह काम । (सू० १०।३६१।३)

मटकार रही गरबीली । (हिं० ७०।४)

घा० लाग ० लाग + -इ + घा० रह ० रह + -ई (सूर)

घा० मटका + -इ + घा० रह ० रह + -ई (रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन -

तन-धन-धन देतिं बारि । (सू० १०।१०१।८)

गोपिका पराहि रहि जाति हैं । (उद्भव० २८।८)

घा० दे + -तिं + घा० बार ० बार + -इ (सूर)

घा० रह ० रह + -इ + घा० जा + ति + घा० हो ० हो + -ई (रत्नाकर)

चौकि परी सब गोकुल नारी । (सू० १०।८१३।१)

उतरि परी दौऊ सुत । (हिं० ८१।१)

घा० चौक ० चौक् + -इ + घा० पर ० पर + -ई (सूर)

घा० उतर ० उतर + -इ + घा० पर ० पर + -ई (रत्नाकर)

मोहि रहीं ब्रज की सुखती सब । (सू० १०।१३०।८)

कौऊ परी दृग पानी रहीं । (उद्भव० ३४।५)

घा० मोह ० मोह + -इ + घा० रह ० रह + -ई (सूर)

घा० पर ० पर + -इ + घा० रह ० रह + -ई (रत्नाकर)

संयुक्त क्रिया-पदों में पूर्वकालिक कृदन्तों का प्रयोग उच्चम पुरुष में सूर के समान ही किया है। मध्यम पुरुष, पुल्लिङ्ग एकवचन में सूर के प्रयोग तो मिलते हैं लेकिन रत्नाकर के काव्य में इन प्रयोगों का अभाव है। पुल्लिङ्ग बहुवचन तथा स्त्रीलिङ्ग एकवचन में दोनों कवियों के प्रयोग मिलते हैं। स्त्रीलिङ्ग बहुवचनों में रत्नाकर के संयुक्त क्रिया-पदों में पूर्वकालिक कृदन्त का योग नहीं मिलता है। अन्य पुरुष में दोनों कवियों ने ही पूर्वकालिक कृदन्त जोड़कर संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं।

#### ५- अपूर्ण क्रिया-धोतक कृदन्त से बने रूप

अपूर्ण क्रिया धोतक कृदन्त के योग से सूर और रत्नाकर ने बहुत से रूप बनाये हैं, फिर भी अन्य रूपों की अपेक्षा इन रूपों की संख्या कम ही है। इस प्रकार रूप "बननों" धातु तथा उस विकृत रूपों का विभिन्न क्रिया-पदों के साथ प्रयोग करके बनाये हैं। "बननों" धातु में कुछ प्रत्यय जोड़कर उसका प्रयोग अपूर्ण क्रिया धोतक कृदन्त से बने रूपों में किया है।

-इहै

कहू करत न बनहै ।

(सू० १०।१४७९।६)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

धा० कर + -त + धा० बन बन + -इहै

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

-ऐ

कहत न बने सख की वार्ति ।

(सू० १०।३०६।६)

कहत बने न जो प्रवीन ।

(उद्धव० ५।२)

धा० कह + -त + धा० बन बन + -ऐ

(सूर)

धा० कह + -त + धा० बन बन + -ऐ

(रत्नाकर)

खेत बने घोष निकस ।

(सू० । २४४।१)

सो सोभा सुभ कहत बने ।

(कल० ६।३)

घा० खेल + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(सूर)

घा० कह + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(रत्नाकर)

जात न बने कहत नहिं आवे ।

(सू० १०।३१६।४)

सो उचारत बने नहीं ।

(शुं० ५७।६)

घा० जा + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(सूर)

उचार + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(रत्नाकर)

देखत बने कहत नहिं आवे ।

(सू० १०।१४८।४)

रहत बने न नार ने सुक नवाइके ।

(शुं० ५४।६)

घा० देख + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(सूर)

घा० रह + -त + घा० बन ७बन् + -ऐ

(रत्नाकर)

-त

कहत बनत न ।

(सू० १०।३४३।२)

बहु बनत उचारें ना ।

(गंगा० लहरी ४८।२)

घा० कह + -त + घा० बन + -त

(सूर)

घा० बन + -त + घा० उचार ७उचार + -ऐ

(रत्नाकर)

देखत बनत गुपाल

(सू० १०।६४३।६)

० ० ०

घा० देख + -त + घा० बन + -त

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

घरतें निक्सत बनत नाही ।

(सू० १०।१४५।३)

० ० ०

घा० निक्स + -त + घा० बन + -त

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-यी

जासु क्लेश करत बन्यो नहिं ।

(सू० १०।४६१।३)

अंक तें छटक छुटि भाजत बन्यो नहीं ।

(दु० ४९।८)

घा० कट + -त + घा० बन बन + -यी

(सूर)

घा० भाज + -ति त + घा० बन बन + -यी

(रत्नाकर)

इस प्रकार सूर ने वर्तमान, भूत, भविष्यत् तीनों कालों में अपूर्ण क्रिया-बोधक कृदन्त का योग करके संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं। रत्नाकर ने भविष्यत्कालिक प्रत्यय "हरे" का वृद्ध योग "बननो" में नहीं किया है। अतः उनके भविष्यत् कालिक प्रयोग नहीं मिलते हैं। वर्तमान तथा भूतकालिक प्रयोग रत्नाकर ने सूर की तरह ही किये हैं।

६- पूर्ण क्रिया-बोधक कृदन्त से बने रूप

इस वर्ग के संयुक्त क्रिया-पद पूर्ण क्रियाबोधक कृदन्त के साथ कुछ सहायक क्रिया-पद आने बनने हैं। इन क्रिया-पदों से निरंतरता तथा निश्चय सूचित होता है। सूर और रत्नाकर ने ऐसे प्रयोग अपेक्षाकृत कम संख्या में किये हैं।

-त

भागे आवत ब्रज हीं तनकों ।

(सू० १०।९३२।४)

खुन खुन सोदे सब डारत ।

(गंगा० २।१८।१)

घा० भाग + भाग् + -ए + घा० आव आव + -त

(सूर)

घा० सोद + सोद् + -ए + घा० डार डार + -त

(रत्नाकर)

कहे देत नहिं दोष हमारी ।

(सू० १०।३०५२।४)

देत हम सबहिं जगाए ।

(हरि० ४।१।४)

घा० कह + कह् + -ए + घा० दे + -त

(सूर)

घा० दे + -त + घा० जता + -ए

(रत्नाकर)

रहत बहु दिसि घेरै ।

(सू० १।७९।१)

सहित उम्मा थिरके रहत ।

(गं० ल० ४०।४)

घा० रह + -त + घा० घेर + घेर + -ए

(सूर)

घा० थिरक + थिरक् + -ए + घा० रह + -त

(रत्नाकर)

दिन कीते जात असार ।

(सू० १।६८।७)

नखग्रह रहत चकार ।

(गंगा० १।१९।४)

घा० कीत + कीत् + -ए + घा० जा + -त

(सूर)

घा० रह + -त + घा० चका + -ए

(रत्नाकर)

-ति

लिये रहति है गांस की ।

(सू० १०।१२४६।४)

कहा किये छे डारति ही ।

(शृंगार ७३।४)

घा० ले + लि + -ये + घा० रह + -ति + घा० हो + ह + ऐ (सूर)

घा० कर + कि + -ए + घा० डार + -ति घा० हो + ह + ओ (रत्नाकर)

इस प्रकार हम देखते हैं कि पूर्ण क्रिया-धोतक कृदन्तों के योग से सूर और रत्नाकर ने एक समान ही संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं ।

७- संज्ञा या विशेषण से बने रूप

इस वर्ग के संयुक्त क्रिया-पद क्रिया के साथ संज्ञा या विशेषण का प्रयोग होने पर बनते हैं। संज्ञा या विशेषण ही मुख्य क्रिया का स्थान ले लेता है। जो क्रिया-पद इनके साथ प्रयोग होता है वह सहायक रूप में आता है। इस प्रकार के प्रयोग भी सूर और रत्नाकर के काव्य में मिलते हैं। ऐसे प्रयोगों की संख्या बहुत ही कम है ।

-छ

चकिर भई ग्वालिनि तन हेरौ ।

(सू० १०।२७१।१)

इहिं जिधि जोफल भई ।

(हरि० ३।३५।१)



चक्ति + घा० हो णम + -हैं

(सू)

ओफल + घा० हो णम + -हैं

(रत्नाकर)

-हैं

आनंदित भई बाल ।

(सू० १०।३४६७।३)

० ० ०

(रत्नाकर)

आनंदित + घा० हो णम + -हैं

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

गोपी मान भई ।

(सू० १०।१८१।२)

० ० ०  
आन + घा० हो णम + -हैं  
-हैं

(रत्नाकर)

(रत्नाकर)

मन आरौहण कीजे ।

(सू० १०।३८६६।८)

दासपन स्वीकृत कीजे ।

(हरि० ३।२२।४)

आरौहण + घा० कर क् + -हैं

(सू)

स्वीकृत + घा० कर क् + -हैं

(रत्नाकर)

-ए

प्रभु सुनि हरिषित भए ।

(सू० १०।४४४।८)

नाह सिर मीन भए हन ।

(हरि० ३।५२।३)

हरिषित + घा० हो णम + -ए

(सू)

मीन + घा० हो णम + -ए

(रत्नाकर)

-हैं

सदा प्रफुल्लित रहैं ।

(सू० १।३३।७)

० ० ०

(रत्नाकर)

प्रफुल्लित + घा० रह रह् + -हैं

(सू)

० ० ०

(रत्नाकर)

-त

करत जस के नास ।

(सू० ४।५।४६)

सवार नहिं देत दिसाई ।

(कल० ११०।४)

घा० कर + -त + नास

(सूर)

घा० दे + -त + दिसाई

(रत्नाकर)

-ति

० ० ०

(सू०)

ज्या नहिं देति दिसाई ।

(गंगा० १।२९।३)

० ० ०

(सूर)

घा० दे + -ति + दिसाई

(रत्नाकर)

-यीं

तार्ते बिबस मयीं करनाम्य ।

(सू० १।४९।२)

० ० ०

(रत्नाकर)

बिबस + घा० हो + म + -यीं

(सूर)

० ० ०

(रत्नाकर)

-यी

मान मयीं माया-रस लंपट ।

(सू० १।९८।९)

कियो बिप्र स्वीकार ।

(हरि० ३।२५।३)

मान + घा० हो + म + -यी

(सूर)

घा० कर + कि + -यी + स्वीकार

(रत्नाकर)

-हु

० ० ०

(सू०)

हमा करहु हम दास पराए ।

(रत्नाकर)

०                      ०                      ०

(सूर)

समा + धा० कर + -इ

(रत्नाकर)

इस प्रकार सूर और रत्नाकर ने संज्ञा या विशेषण के साथ धातु तथा उसके विवृत रूपों में विभिन्न प्रत्यय जोड़कर संयुक्त क्रिया-पद बनाये हैं। कुछ प्रत्यय तो दोनों कवियों के समान रूप से प्रयोग किये हैं तथा कुछ प्रत्यय सूर ने प्रयोग किये हैं तो रत्नाकर ने नहीं। कुछ रत्नाकर ने प्रयोग किये हैं तो सूर ने उनका प्रयोग नहीं किया है।

#### ८- पुनरुक्त संयुक्त क्रिया-पद

इस वर्ग के संयुक्त क्रिया-पद एक क्रिया के समान दूसरी क्रिया आने पर बनते हैं। इस प्रकार दोनों ही क्रिया-पदों का रूप एक ही समान होता है। उनमें एक ही प्रत्यय अलग-अलग जुड़ा रहता है। इस प्रकार के रूप सूर और रत्नाकर दोनों ही कवियों ने बनाये हैं।

-इ

फोरि फारि ।

(सू० १।१३१।७)

नांचि थिरकि रिफाई है ।

(उद्भव० ४७।२)

धा० फोरि ~ फोरि + -इ, धा० फारि ~ फारि + -इ (सूर)

धा० नांचि ~ नांचि + -इ, धा० थिरकि ~ थिरकि + -इ (रत्नाकर)

तोरि तारि ।

(सू० १।१३१।७)

सुंगनि सिलरनि तोरि-फोरि ।

(गंगा० ६।११।३)

धा० तोरि ~ तोरि + -इ, धा० तारि ~ तारि + -इ (सूर)

धा० तोरि ~ तोरि + -इ, धा० फोरि ~ फोरि + -इ (रत्नाकर)

ढंढि- ढंढोरि बाप ही बापी ।

(सू० १०।३३१।२)

उमड़ि-छुमड़ि चढ़ि बाए ।

(शृ० १।८।४)

धा० ढंढ् + -ह, धा० ढंढोर ँढंढोर + -ह (सू०)  
 धा० उमड़् + -ह, धा० छुमड़् + -ह (रत्नाकर)

-हवे

बहुन देखिये-सुनिवे । (सू० १०।३५१९।६)

० ० ०  
 धा० देख् + -हवे, धा० सुन + -हवे (सू०)  
 ० ० ० (रत्नाकर)

-हवी

० ० ० (सू०)  
 गाहवी गवाहवी जी --- । (उद्धव० ९।४)

० ० ० (सू०)  
 धा० गा + -हवी, धा० गवा + -हवी (रत्नाकर)  
 ० ० ० (सू०)

-है

देखी-सुनी न बात । (सू० १०।१८९।३)  
 रही-सही सोझ कहि दीनी । (उद्धव० ५।८)  
 धा० देख् + -है, धा० सुन + -है (सू०)  
 धा० रह + -है, धा० सह + -है (रत्ना०)

-ह

और सकल में देखे-ढूँढे । (सू० १।३२३।५)  
 बरत विन रोके टोके । (हरि० २।४।१)  
 धा० देख् + -ह, धा० ढूँढे + -ह (सू०)  
 धा० रोक + -ह, धा० टोक + -ह (रत्नाकर)

- त

उपजत विनसत बारंवार । (सू० १२।४।३)

सृंग कूदत किलकारत । (गंगा० ८।३२।३)

घा० उपज + -त, घा० विनस + -त (सूर)

घा० कूद + -त, घा० किलकार + -त (रत्नाकर)

सात खेलत रह नीकै । (सू० १०।८५२।५)

गर्जत तर्जत क्ले । (गंगा० १।२२।३)

घा० खा + -त, घा० खेल + -त (सूर)

घा० गर्ज + -त, घा० तर्ज + -त (रत्नाकर)

-ति

ले आहँ गृह चूमति चाटति । (सू० १०।७८।११)

फटल फारति पहरावति । (गंगा० ७।१९।१)

घा० चूम + -ति, घा० चाट + -ति (सूर)

घा० फार + -ति, घा० फहराव + -ति (रत्नाकर)

भोग छल्लू समग्री धरति उठावति । (सू० १०।८९४।३)

हर धराति लहराति सल्लू जौजना । (गंगा० ७।२४।२)

घा० धर + -ति, घा० उठाव + -ति (सूर)

घा० हर धरा + -ति, घा० लहरा + -ति (रत्नाकर)

-न

० ० ० (सू०)

अनुमान -सिंधु अवगाहन-थाहब । (गंगा० १।२८।३)

० ० ० (सूर)

घा० अवगाह + -न, घा० थाह + -न (रत्नाकर)

पुनरुक्त संयुक्त क्रिया-पद सूर और रत्नाकर ने बहुत से प्रत्ययों का योग करके बनाये हैं। "हृ" प्रत्यय का योग दोनों कवियों ने किया है। "हृवे" सूर ने "हृषी" रत्नाकर ने "हृ", "ए", "त", "ति" प्रत्यय दोनों कवियों ने जोड़ा है। "न" प्रत्यय रत्नाकर के क्रिया-पदों में नाम-मात्र को ही मिलता है।

### अन्य प्रयोग -

इन आठ प्रकार के संयुक्त-क्रिया-पदों के अतिरिक्त सूर और रत्नाकर ने ऐसे प्रयोग किए हैं जो अपने में कुछ विशेषता रखते हैं। इन प्रयोगों में सूर और रत्नाकर ने क्रिया-पदों के साथ ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो उसी ध्वनि से निर्मित होते हैं जिस ध्वनि से क्रिया-पद की रचना हुई है। इस तरह एक ही वर्ण की आवृत्ति हुई है।

कल्लु करौ क्लैल ।

(सू० १०।६०९।६)

चपला चमचमाति चंचल ।

(गंगा० ७।२१।४)

दम्भस्त दसन ।

(सू० १०।१४४६।७)

दसहुं दिसि दमति ।

(गंगा० ८।२९।२)

हवि ह्रावत ।

(सू० ९।१६७।२)

ह्वरावति ह्वि ।

(गंगा० ७।२६।१)

बर बीर बिराजत

(सू० ९।१६७।३)

बेगि बेठाह बिमाननि ।

(गंगा० १०।२२।३)

वेद वंदीजन--- विरद बडत ।

(सू० १०।२०५।१२)

वर बिसाल विरुमय बोहत ।

(गंगा० ७।२०।३)

सुनि सुवात सजनी ।

(सू० १०।२०१।१)

दिव्य दोउ दारनि दीन्यो ।

(गंगा० १।१२।३)

सूरु इस प्रकार सूर और रत्नाकर ने अनुप्रास अलंकार की छटा क्रिया-पदों में लाकर अपनी भाषा को आलंकारिक बना दिया है। इस तरह के प्रयोग बहुत किये हैं ।

अध्याय- नवम

सुर और रत्नाकर

के

सहायक क्रिया-पदों की तुलना



### सूर और रत्नाकर के सहायक क्रिया-पदों की तुलना -

जब दो या दो से अधिक क्रिया-पद साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं तब उनमें एक मुख्य क्रिया-पद तथा दूसरा सहायक क्रिया-पद होता है। सुविधा की दृष्टि से सहायक क्रिया-पदों को दो भागों में विभक्त किया जाता है-

१- "होनो" से बने सहायक क्रिया-पद ।

२- अन्य सहायक क्रिया-पद ।

#### १- "होनो" सहायक क्रिया-पद -

इस वर्ग में "होनो" से बने सहायक क्रिया-पद काल तथा अर्थ की दृष्टि से रखे गये हैं ।

#### वर्तमान काल

वर्तमान काल में "होनो" पद से बने सहायक क्रिया-पदों के चार रूप मिलते हैं। "हैं", "हे", "हों", "हो" आदि रूपों में हैं, "हों" बहुवचन 'तथा' हैं, "हों" एकवचन रूप हैं । इस प्रकार के रूप सूर और रत्नाकर ने पर्याप्त संख्या में किये हैं ।

#### उत्तम पुरुष

#### पुल्लिङ्ग - एकवचन

- हों

जानत हों कतनामय ।

(सू० १।१६।२)

०

०

०

धा० जान + -त + धा० हो ण् + -गीं	(सुर)
०                      ०                      ०	(रत्नाकर)
धैं तुम सौं मांगत हों ।	(सू० १०।१४८३।२)
०                      ०                      ०	
धा० मांग + -त + धा० हो ण् + -गीं	(सुर)
०                      ०                      ०	(रत्नाकर)
धिनती करत मरत हों लाज ।	(सू० १।९६।१)
०                      ०                      ०	
धा० मर + -त + धा० हो ण् + -गीं	(सुर)
०                      ०                      ०	(रत्नाकर)
पुलिंग - वक्ष्यचन	
-हैं	
हम मांगत हैं सख सौं ।	(सू० १०।३०३९।१)
०                      ०                      ०	
धा० मांग + -त + धा० हो ण् + -हैं	(सुर)
०                      ०                      ०	(रत्नाकर)
स्त्रीलिङ्ग - एकवचन	
हों	
याके गुन धैं जानति हों ।	(सू० १०।१२५५।१)
जानति हों जैसे तुम ।	(शृ० १४१।१)
०                      ०                      ०	
धा० जान + -ति + धा० हो ण् + -गीं	(सुर)
०                      ०                      ०	(रत्नाकर)
यह कहति हों बेरी भार्य ।	(सू० १०।१४२५।२)
०                      ०                      ०	

धा० कह + -ति + धा० हो ५ ह् + -जों

० ० ०

(सुर)

(रत्नाकर)

करति हों यह सोच ।

० ० ०

(सू० १०।१४५३।९)

(रत्नाकर)

धा० कर + -ति + धा० हो ५ ह् + -जों

० ० ०

(सुर)

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग - बहुवचन

हैं

हम जानति हैं तुम महिषा कीं ।

(सू० १०।१०२८।२)

सुधी न्याय जानति हैं ।

(उद्ध० ४५।५)

धा० जान + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(सुर)

धा० जान + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(रत्नाकर)

हम बति सकुचति हैं।

(सू० १०।२५४४।५)

देखति सौ मानति हैं ।

(उद्ध० ४५।५)

धा० सकुच + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(सुर)

धा० मान + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(रत्नाकर)

सौ बूझति हैं तुमकीं ।

(सू० १०।१५२८।२)

देति हैं गोरस ।

(शृ० ५२।३)

धा० बूझ + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(सुर)

धा० दे. + -ति + धा० हो ५ ह् + -हैं

(रत्नाकर)

मध्यम पुल्लिङ्ग

पुल्लिङ्ग - एकवचन

है

तु उनके ढिङ्ग जात कतहिं है।

(सू० १०।१४२९।५)

०                    ०                    ०  
घा० जा + -त + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(सूर)

०                    ०                    ०

(रत्नाकर)

जी तू सूर सुखहिं चाहत है ।  
-----

(सू० १।३००।६)

०                    ०                    ०

(रत्नाकर)

घा० छछ चाह + -त + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(सूर)

०                    ०                    ०

(रत्नाकर)

जीवत है फल लागे ।  
-----

(सूर १।६१।५)

०                    ०                    ०

घा० जीव + -त + घा० हो ॥ ह् + -ऐ

(सूर)

०                    ०                    ०

(रत्नाकर)

पुल्लिंग - बह्वचन  
-----

ही

कीड़त ही बहु रंग ।  
-----

(सारा० ५१९।२)

निराटी ह्वे भरत ही ।  
-----

(श्री ३०।२)

घा० कीड़ + -त + घा० हो ॥ ह् + -गो

(सूर)

घा० घर + -त + घा० हो ॥ ह् + -गो

(रत्नाकर)

जानत ही सब जी के ।  
-----

(सारा० ५२०।२)

वा घट भरत ही ।  
-----

(श्री० ३०।८)

घा० जान + -त + घा० हो ॥ ह् + -गो

(सूर)

घा० भर + -त + घा० हो ॥ ह् + -गो

(रत्नाकर)

काहें लात ही माटी ।  
-----

(सू० १०।२५९।४)

झा कोलुक करत ही ।

(श्री० ३०।६)

धा० खा + -त + धा० हो ५ ह् + -जी  
धा० कर + -त + धा० हो ५ ह् + -जी

(सू०)

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- एकवचन -

है

क्यों राधा नहिं बोलति है ।

(सू० १०।११०८।१)

० ० ०

धा० बोल + -ति + धा० हो ५ ह् + -ये

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

तू काहे को भूलति है ।

(सू० १०।१२३९।६)

० ० ०

धा० भूल + -ति + धा० हो ५ ह् + -ये

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

झां री जाति है ।

(सू० १०।२७२०।३)

० ० ०

धा० जा + -ति + धा० हो ५ ह् + -ये

(सू०)

० ० ०

(रत्नाकर)

स्त्रीलिङ्ग- बहुवचन

हो

जानति हो जब डेरी सी ।

(सू० १०।१३३८।३)

नाहिं रीफति हो ।

(शृ० १२५।३)

धा० जान + -ति + धा० हो ५ ह् + -जी

(शुक्ल सू०)

धा० रीफ + -ति + धा० हो ५ ह् + -जी

(रत्नाकर)

बहु समुक्ति हो घात ।

(सू० १०।१५२६।६)

खीफति हो उल्टी ।

(शृ० १२५।४)

धा० ससुक + -ति + धा० हो + -गी

(सूर)

धा० लीफ + -ति + धा० हो + -गी

(रत्नाकर)

बहो जसोदा कत त्रासति हो ।

(सू० १०।३५६।२)

मानति नहीं ही वीर ।

(शुं० ८०।६)

धा० त्रास + -ति + धा० हो + -गी

(सूर)

धा० मान + -ति + धा० हो + -गी

(रत्नाकर)

अन्य सुगुण

पुल्लिंग -एवमचन

है

लेत है मन मोल ।

(सा० ल० ३९।३)

छिये की उफात है ।

(उद्धव० १२।२)

धा० ले + -त + धा० हो + -ऐ

(सूर)

धा० उफा + -त + धा० हो + -ऐ

(रत्नाकर)

देखि-देखि जीवत है ।

(सारा० ७०।२)

ज्ञान न चुकत है ।

(हरि० ३।४८।१)

धा० जी जीव + -त + धा० हो + -ऐ

(सूर)

धा० चुक + -त + धा० हो + -ऐ

(रत्नाकर)

वाके बासुम कोउ दसत है ।

(सारा० १६९।२)

नहिं धीर रुकत है ।

(हरि० ३।४८।२)

धा० कस + -त + धा० हो + -ऐ

(सूर)

धा० रुक + -त + धा० हो + -ऐ

(रत्नाकर)

पुत्त्रिण - बह्वचन - है

याके गर्भ कसत हैं हरिजन

(सारा० १०३।१)

भारत कन्हाई हैं ;

(उद्धव० ३५।६)

घा० कस + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(सूर)

घा० भार + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(रत्नाकर)

मधुसूत सुनत हैं ।

(सारा० ९३४।१)

दीन वंधु जानि रथ-बंध ठहरत हैं ।

(वी० १।२।२)

घा० सुन + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(सूर)

घा० ठहर + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(रत्नाकर)

रहत हैं जहं जीव दतने ।

(सा० लहरी ६९।९)

लालसा सीं नहिं जात हैं ।

(उद्धव० ९९।२)

घा० रह + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(सूर)

घा० जा + -त + घा० हो ५ह् + -ऐ

(रत्नाकर)

स्त्रीलिंग -एकवचन

है

जुड़ा विकल बात पूछति है।

(सारा० ५५९।१)

वाल बिलसति है।

(शुं० २०।२)

घा० पूछ + -ति + घा० हो ५ह् + -ऐ

(सूर)

घा० बस + -ति + घा० हो ५ह् + -ऐ

(रत्नाकर)

प्रिया सुनष सीं भाव करति है ।

(सूर० १०।१११२।५)

कमीसी लसति है ।

(शुं० २०।८)

घा० कर + -ति + घा० हो ५ह् + -ऐ

(सूर)

घा० लस + -ति + घा० हो ५ह् + -ऐ

(रत्नाकर)

### स्त्रीलिंग - बहुवचन

हैं

मदुकिनि तें लै लै परुसति हैं ।

(सू० १०।१५९७।३)

मौह तानि तमकति हैं ।

(र० १२।७।२)

घा० परुस + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(सूर)

घा० तमक + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(रत्नाकर)

मोजन करति हैं बड़ी समानी ।

(सू० १०।८९२।६)

फुमाह फमकति हैं ।

(र० १२।७।४)

घा० कर + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(सूर)

घा० फमक + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(रत्नाकर)

समुफति हैं अनुमान ।

(सू० १०।३२१४।८)

चपला सी चमकति हैं ।

(र० १२।७।८)

घा० समुफ + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(सूर)

घा० चमक + -ति + घा० हो ५ह् + -हैं

(रत्नाकर)

ये जितने भी "होनो" सहायक क्रिया-पद के रूप दिये गये हैं। इनके सूर तथा रत्नाकर ने जसंख्य प्रयोग किये हैं। उ०म पुरुष के पुल्लिंग दोनों वचनों में मध्यम पुरुष में पुल्लिंग एववचन तथा स्त्रीलिंग एववचन में रत्नाकर के प्रयोग नहीं मिलते हैं। अन्य सभी प्रयोग सूर और रत्नाकर ने समान ही किये हैं। अपूर्ण वर्तमान काल तथा पूर्ण वर्तमानकाल काल में भी नहीं रूप प्रयुक्त हुए हैं जो सामान्य वर्तमानकाल में हुए हैं।

### भूत काल

भूतकाल में सूर और रत्नाकर ने "होनो" सहायक क्रिया-पद का प्रयोग अपूर्ण भूतकाल तथा पूर्ण भूतकाल में ही किया है। "ही", "ही", "हुती"



छुती, 'छुते', 'छुती', 'छे', 'हो' वादि उप इस काल में वनते हैं ।

ही

हम मांगति हीं यह ।

(सू० १०।३७०३।२)

० ० ०  
घा० मांग + -ति + घा० हो + -हें

(सूर)

० ० ० (रत्नाकर)

ही

तू जो कहति ही ।

(सू० १०।३१५।१)

देति ही काल्हि ।

(प्र० १७।७।१)

घा० कह + -ति + घा० हो + -हें

(सूर)

घा० दे + -ति + घा० हो + -हें (रत्नाकर)

छुतीं, हीं

कहे रत्नाकर विचारति छुतीं हीं ।

(उद्धव० ८३।३)

० ० ० (सू०)

घा० विचार + -ति घा० छु + -हें घा० हो + -हें (रत्नाकर)

० ० ० (सूर)

छुती

छिछी छुती जसोदा मंदिर ।

(सू० १०।५०।४)

छिछी छुती बाल जलबेली ।

(छं० ५४।२)

घा० बैठ + -हें + घा० छु + -हें

(सूर)

घा० बैठ + -हें + घा० छु + -हें (रत्नाकर)

छुते

देखत छुते तात तुम

(सू० १०।३०३३।७)

हंकारत छुते मा अनुमान

(प्र० ७।५।१)

धा० देख + -त + धा० छु + -ए (सूर)  
 धा० हंकार + -त + धा० छु + -ए (रत्नाकर)

छुती

राजारहत छुती तहं एक । (सू० ५।२।२८)  
होत-छुती जहां रुदन । (हरि० ४।४२।४)  
 धा० रह + -त + धा० छु + -गी (सूर)  
 धा० हो + -त + धा० छु + -गी (रत्नाकर)

है

मांगत है दधि । (सू० १०।१४७४।४)  
 ० ० ० (रत्नाकर)  
 धा० मांग + -त + धा० हो ५ छु + -ए (सूर)  
 ० ० ० (रत्नाकर)

हो

तृप-ब्रज मारत हो । (सू० १०।६००।४)  
 ० ० ०  
 धा० मार + -त + धा० हो ५ छु + -गी (सूर)  
 ० ० ० (रत्नाकर)

इस प्रकार "होनो" क्रिया-पद के भूत काल में जो विकृत रूप मिलते हैं, उनमें "ही", "है", "हो" का प्रयोग केवल सूर काव्य में मिलता है। रत्नाकर ने इनका प्रयोग नहीं किया है। "छुतीं ही" का प्रयोग सूर ने नहीं किया है। रत्नाकर ने किया है। "ही", "छुती", "छो", "छुती" का प्रयोग सूर तथा रत्नाकर ने एक जैसा किया है।

अर्थ

"होनो" सहायक क्रिया-पदों की तुलना अर्थ की दृष्टि से करने

पर निश्चयार्थ, संक्ष्वस संभावनार्थ तथा सदैहार्थ में ये सहायक क्रिया-पद मिलते हैं। आज्ञार्थ तथा संकेतार्थ में "होनो" सहायक क्रिया-पदों के प्रयोग दोनों कवियों के काव्य में नहीं मिलते हैं।

### निश्चयार्थ

निश्चयार्थ में "होनो" सहायक क्रिया-पद के वही रूप मिलते हैं जो वर्तमानकाल तथा भूतकाल में बनते हैं। अतः इनको यहाँ प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं है।

### संभावनार्थ

होइ

०	०	०	(सू०)
बास	टरि	गई	होइ ।
०	०	०	(सू०)
घा०	टर	टर	+ -इ + घा०
	जा	ग	+ -ई + घा०
	हो	+ -इ	(रत्नाकर)

होई

जाये	बीती	होई ।	(सू० १०।३५४२।५)
०	०	०	(रत्नाकर)
घा०	वीत	भीत	+ -ई + घा०
	हो	+ -ई	(सू०)
०	०	०	(रत्नाकर)

संभावनार्थ में "होना" सहायक क्रिया-पद का प्रयोग रत्नाकर ने "होइ" तथा सूर ने "होई" किया है। ऐसे प्रयोग दोनों के काव्य में अपवाद स्वरूप ही मिले हैं।

### संदेहार्थ

संदेहार्थ में केवल सूर के प्रयोग ही मिलते हैं, वे भी बहुत कम ।  
संदेहार्थ में बिना 'होना' सहायक क्रिया-पद के योग के संदेहार्थ नहीं बनता।  
संदेह व्यक्त करने के लिए 'होना' क्रिया आवश्यक है । इस वर्ग में 'ह्वेहें'  
तथा 'ह्वेहै' रूप बनते हैं ।

ह्वे हैं

जबहीं आवत ह्वेहें ।

(सू० १०।२०२८।३)

०                      ०                      ०

घा० ण आव + -त + घा० हो + ह्व + -रेहें (सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

ह्वेहै

मूत लगी ह्वेहै ।

(सू० १०।२३६।५)

०                      ०                      ०

घा० ला + ला + -है + घा० हो + ह्व + -रेहै (सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

उक्त संदिग्ध प्रयोग सूर ने बहुत कम दिये हैं तथा रत्नाकर ने  
इन रूपों का प्रयोग नहीं किया है ।

### २- अन्य सहायक क्रिया-पद

इस वर्ग में वे सभी सहायक क्रिया-पद रखे गये हैं जो संयुक्त  
क्रिया-पदों तथा जय में प्रयुक्त हुए हैं ।

संयुक्त क्रिया-पदों में प्रयुक्त -

१- क्रियार्थक संज्ञा के साथ प्रयुक्त -

देना

नृप पास नहीं जान देही ।

(सू० १०।३०६९।१)

प्रपंच सरि लेन देहु ।

(उद्धव० ११४।४)

जान + घा० दे + -देही

(सूर)

सरि लेन + घा० दे + -हु

(रत्नाकर)

पानो

फा छुन न पावति ।

(सू० १०।९५८।५)

रहन हमि ठाम न पावे ।

(हरि० ४।१०७।३)

छुन + घा० छा पाव + -ति

(सूर)

रहन + घा० पाव + -पाव + -हे

(रत्नाकर)

लागनो

बंधन सब लागे ।

(सू० १०।४०४।३)

लागे कहु फरकन ।

(हरि० ४।३२।३)

बंधन + घा० लाग + -लाग + -ए

(सूर)

घा० लाग + -लाग + -ए + फरकन

(रत्नाकर)

२- वर्तमानकालिक कृदन्त के साथ प्रयुक्त

रहना

देखत रहे लजाई ।

(सू० १।४०।२)

जाहुति दैत रहे नृप ।

(गंगा० ३।१।३)

देखत + घा० रह + -रह + -ए

(सूर)

दैत + घा० रह + -रह + -ए

(रत्नाकर)

अमृत छि लेति रहै यह ।

(सू० १०।१३०७।३)

उमड़ति हमि आवति ।

(गंगा० ९।२०।३)

रहनो

मिति + घा० रह ५ रह् + -हे

(सूर)

जानो

उमड़ति + घा० आवि आव + -ति

(रत्नाकर)

३- भूतकालिक वृद्धन्त के साथ प्रयुक्त

लगयी फिरत सूरमी ज्यीं सुत ।

(सू० १।९।४)

परत हलवयी जो चित तें ।

(हरि० १।१०।२)

फिरनो

लगयी + घा० फिर + -त

(सूर)

परनो

घा० पर + -त + हलवयी

(रत्नाकर)

४- पूर्वकालिक वृद्धन्त के साथ प्रयुक्त

जानो

को ले गयी उठाई ।

(सू० १०।२६२।६)

गयी कहा रहि सैं ।

(हरि० ४।३४।२)

ले + घा० जा ५ ग + -यी

(सूर)

घा० जा ५ ग + -यी + रहि

(रत्नाकर)

बैठिजात पुनि उठत ।

(सू० १०।१२३।४)

बैठि नहिं सके कन्हारै ।

(हि० ७३।१)

जानो

बैठि + घा० जा + -त

(सूर)

सकनो

वेठि + घा० सक ५ सक् + -ए

(रत्नाकर)

उहीं ठीर ले बाहे ।

(सू० १०।१५६।९)

सम्हरि न सकी संयानि ।

(हिं० ६८।२)

जानो

ले + घा० जा + -ई

(सूर)

सफनो

सम्हरि + घा० सक ५ सक् + -ई

(रत्नाकर)

गहं हम सब मारि ।

(सू० १०।७८९।३)

प्रतिबंधहिं निवारि चुकीं ।

(उद्धव० ४३।२)

जानो

घा० जा ग + -ई + मारि

(सूर)

चुनो

निवारि + घा० चुक ५ चुक् + -ई

(रत्नाकर)

धृष ५- अपूर्ण क्रिया-धोतक कृदन्त के साथ प्रयुक्त

इस वर्ग में केवल 'वननो' सहायक क्रिया-पद ही जाता है।

वननो -

वनत नहिं नाघत ।

(सू० १०।१२६।४)

यहु कसत वने ना ।

(वल० ६१।३)

घा० वन + -त + नाघत

(सूर)

कसत + घा० वन ५ वन् + -ऐ

(रत्नाकर)

करत न वनत खई ।

(सू० १०।३२६६।५)

तनत वने नही ।

(रत्नाकर)

करत + था० बन + -त

(सू)

तनत + था० बन + बन + रे

(रत्नाकर)

६- पूर्ण क्रिया-बोधक कृदन्त के साथ प्रयुक्त

देनी

कहे देत नहिं दोष स्मारो ।

(सू० १०।३७५३।४)

देत कब सैस चुकाए

(हरि० ३।४१।४)

कहे + था० दे + -त

(सू)

था० दे + -त + चुकाए

(रत्नाकर)

रहनी

रहत प्रेम लपटाने ।

(सू० १०।३९४०।६)

नवग्रह रहत चकार ।

(गंगा० ४।१९।४)

था० रह + -त + लपटाने

(सू)

था० रह + -त + चकार

(रत्नाकर)

राखे रहत हृदय पर ।

(सू० १०।२४१३।३)

अधीर लपटाए लेत ।

(उद्धव० १०९।२)

रहनी

राखे + था० रह + -त

(सू)

लेनी

लपटाए + था० ले + -त

(रत्नाकर)

अर्थों में प्रयुक्त सहायक क्रिया-पद

१- निश्चयार्थ

देनी

मैं परिदेहों नीर ।

(सू० १०।१४०६।३)

दुख दरिदेहों में ।

(वी० २।२।४)



परि + घा० दे लद् + -ऐहीं  
हरि + घा० दे लद् + -ऐहीं

(सूर)

(रत्नाकर)

जानो

विसरि गहं नंद नारी ।

(सू० १०।१६७।६)

सौति मुनिनि की पारि गहं ।

(हरि० ४।४१।१)

व विसरि + घा० जालग + -हैं

(सूर)

वारि + घा० जालग + -हैं

(रत्नाकर)

तुम सोह रही अब ।

(सू० १०।४२०।६)

मृदु बानि परी ऊपर तें ।

(उद्व० ४२।५)

रहनो

सोह + घा० रह लरह + -वो

(सूर)

परनो

जानि + घा० पर लपर + -वो

(रत्नाकर)

२- संभावनार्थ

जानो

मनु निकसि गए उहिं घां तें ।

(सू० १०।२६८६।६)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

निकसि + घा० बालग + -ए

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

परनो

बिथुरि बलकैं परीं मानहुं ।

(सू० १०।१८१५।८)

मनु सुधा सरि बाढ़ परी ।

(गंगा० ९।३८।४)

बिथुरि + घा० पर लपर + -हैं

(सूर)

बाढ़ + घा० पर लपर + -हैं

(रत्नाकर)

लागनी

मानहु ----- वरषन लाग ।

(सू० १०।१७७७।१०)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

वरषन + घा० लाग + -शून्य

(सूर)

०                      ०                      ०

(रत्नाकर)

३- सदेहार्य

सदेहार्य में केवल 'शोनो' सहायक क्रिया-पद ही प्रयुक्त होता है।

४- जाज्ञार्य

देनो

छाँड़ि देहु मति मोरी ।

(सू० १०।२९६।६)

सो सब अब बिसराइ देहु ।

(हरि० २।३२।२)

छाँड़ि + घा० दे + -हु

(सूर)

बिसराइ + घा० + -हु

(रत्नाकर)

लेनो

मांगि लेहु मेरे वारे

(सू० १०।२९६।६)

लेहु निरखि बिसा सुदय ।

(हरि० ४।४७।४)

मांगि + घा० ले + -हु

(सूर)

घा० ले + -हु + निरखि

(रत्नाकर)

५- सक्ताय

हीं जी कैसेहुं जान पावती ।

(सू० १०।३१६।१४)

पारि देती आज वा कलापी के ।

(शुं० ११०।७)

पानो

जान + घा० छा पाव + -ती

(सूर)

देनो

पारि + घा० दे + -ही

(रत्नाकर)

सूर स्याम कीं कस करि लैती ।

(सू० १०।१८७७।६)

जारि देती जीहा वा पपीहा ।

(शुं० ११०।८)

लेनो

करि + घा० ले + -ती

(सूर)

देनो

जारि + घा० दे + -ती

(रत्नाकर)

०            ०            ०

(सू०)

वाज मिलि जात्यी जी ।

(शुं० १०६।८)

०            ०            ०

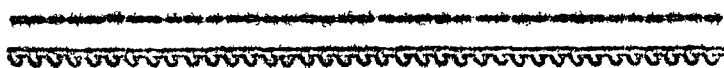
(सूर)

जानो

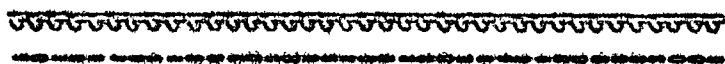
मिलि + घा० जा + -त्यो

(रत्नाकर)

इस प्रकार सूर और रत्नाकर ने सहायक क्रिया-पद लाम्हा समान ही प्रयोग किये हैं। कहीं-कहीं थोड़ा-सा अंतर मिल जाता है। सूर ने रत्नाकर की अपेक्षा अधिक सहायक क्रिया-पदों का प्रयोग किया है ।



- उपसंहार -



### उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सभी अध्यायों का सारांश साथ ही साथ दे दिया गया है। पुनः अधिक विवेचन करना माष्ठा वैज्ञानिक दृष्टि से असंगत है। फिर भी सूर और रत्नाकर के वृद्धन्त क्रिया-पदों के प्रयोग अपने में कुछ विशिष्टता लिखे हुए हैं। क्रियार्थक संज्ञा "नो" तथा "बो" के विवृत्त रूपों से बनाए हैं। इसी तरह कर्तृवाचक संज्ञा, वर्तमानकालिक, भूतकालिक, पूर्वकालिक, तात्कालिक, अपूर्ण क्रियाधोतक, पूर्ण क्रिया धोतक आदि वृद्धन्तों के प्रयोग दोनों कवियों ने बड़ी समझदारी से किये हैं।

वर्तमानकालिक, भूतकालिक तथा भविष्यत्कालिक क्रियापद सूर और रत्नाकर ने थोड़े-बहुत अंतर के साथ लगभग समान रूप से ही बनाए हैं। सूर और रत्नाकर ने कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के प्रयोग लगभग समान प्रत्यय जोड़कर समान ही बनाये हैं। ये प्रयोग भी सूर और रत्नाकर के संस्था में कुछ अंतर अवश्य रखते हैं। अर्थ की दृष्टि से भी सूर और रत्नाकर के प्रयोग समान ही मिलते हैं। इनमें भी संस्था का अंतर है। संयुक्त क्रिया-पद तथा सहायक क्रिया-पद भी संस्था के अंतर से होते हुए भी लगभग समान हैं।

जहाँ-तहाँ सूर और रत्नाकर ने क्रिया-पदों में अंतर पाया जाता है, वह दूरा, परिस्थितियाँ तथा शिक्षा का अंतर है। सूर भक्ति काल के प्रधान कवि हैं। अष्टछाप के कवियों में भी सूर प्रथम स्थान वाले कवि हैं। साथ-साथ आज तक भी सूर हिन्दी साहित्य के सर्वोच्च कवि हैं। सूर हैं वहीं थे, अशिक्षित थे। महाप्रभु बल्लभाचार्य ने जो कुछ भी सुनाया, उसी को सूर ने लिख दिया।

सूर ने एक क्या लिखी है, न कि शास्त्रीय नियम बनाये हैं। इतना सच होते हुए भी सूर की भाषा सर्वोत्कृष्ट है। सूर भक्त कवि हैं। सूर ने भक्ति कवि होने के कारण कृष्ण को अपना हृष्ट माना है। अपने भावान् के लिए "तू" शब्द का प्रयोग ही अच्छा लगता है। १/हर रत्नाकर बाधुनिक युग के कवि हैं। अपने युग में ही ब्रजभाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। रत्नाकर जी राजघरानों से संबंधित रहे हैं। अतः उनकी भाषा में "तू" का प्रयोग बहुत ही कम किया है। इसका मुख्य कारण राजघराने, उनका बी०ए० तक शिक्षित होना है। रत्नाकर से पहले प्रितन भी कवि ब्रजभाषा के हुए हैं, उनके काव्य तथा भाषा को रत्नाकर जी ने सम्फा है, उसका अध्ययन किया है। इससे रत्नाकर अपने साहित्य शुद्ध तथा पारिमार्जित बना है। रत्नाकर की अच्छा अपने पूर्ववर्ती कवियों से अलग काव्य करने की रही है। इसीलिए रत्नाकर ब्रजभाषा का अध्ययन पहले से ही कर चुके थे। उसके उपरांत रत्नाकर ने काव्य लिखा है। अतः रत्नाकर का प्रत्येक छंद पूर्व निर्धारित नियम में ही रचा गया है। उनकी भाषा में अस्थिरता तथा अव्यवस्था को कोई भी स्थान प्राप्त नहीं हो सका है। इन्हीं सब कारणों से रत्नाकर को शुद्ध ब्रजभाषा लिखने में सफलता मिली है।

ब्रजभाषा का अध्ययन रत्नाकर ने कुछ दिन ब्रज में रहकर ही किया है। काव्य लिखने से पहले इन्होंने ब्रजभाषा को सम्फा है, विषय को सम्फा है, तब वे पूर्ववर्ती कवियों से कुछ उच्च स्तर की ब्रजभाषा में अच्छी-अच्छी रचनाएं दे चुके हैं। शुद्धता में रत्नाकर की तुलना शायद ही कोई कवि कर सके। रत्नाकर की गोपियों में एक अन्य कवियों की गोपियों में अंतर है। यदि गोपियों में अंतर है तो उनकी भाषा में अंतर होगा तो क्रिया-पदों में अन्तर अवश्य पाया जायगा। यह रत्नाकर की अपनी विशेषता रही है।

दोनों कवियों ने वादार्थक क्रिया-पदों का प्रयोग पर्याप्त संख्या में किया है। वादार्थक क्रिया-पदों को प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में बहुवचन में रखा गया है क्योंकि क्रिया-पदों का अध्ययन मुख्य है। अतः क्रिया-पद की स्थिति के अनुसार ही उसे रखा है।

कहीं-कहीं बहुवचन कर्ता के साथ एकवचन का क्रिया-पद सूर के काव्य में मिलता है। जैसे-

नंद नदन उनकीं हम जानति (सू० १०।१११३।१)

० ० ०  
सुनौ महारि उनकीं तुम बाधति । (सू० १०।३९०।५)

कहीं-कहीं सूर काव्य में स्त्री लिंग कर्ता के साथ "त" प्रत्यय का योग कर वर्तमानकालिक क्रियापद बनाये हैं जैसे-

अति कौमल तन चिति स्याम कौ बार बार पछितात । (सू० १०।८१।३)

० ० ०  
उक्त तीनों प्रयोगों में से दो "जानति" तथा "पछितात" ह्रंद ने आग्रह के कारण लिंग के प्रभाव से झुक्त हैं। "जानति" के बाद अन्य पुरुष बहुवचन का क्रियापद "जानति" आया है तथा दूसरे प्रयोग के साथ "घात" संज्ञा शब्द आया है। ये प्रयोग ह्रंद के आग्रह के कारण इस प्रकार के हैं।

किसी विद्वान् की भाषा-शक्ति का ज्ञान उसके क्रिया-पदों से ही हो सकता है। प्रतिभा-सम्पन्न कवि अपने प्रत्येक पद या ह्रंद में क्रिया-पद का परिवर्तित रूप प्रयुक्त करता है। इस दृष्टि से सूर और रत्नाकर काव्य में एक

और जहाँ क्रिया-पदों की विविधता दृष्टिगोचर होती है, वहाँ उसमें दूसरी और क्रिया-पदों की उपलब्धता आवृत्ति भी विद्यमान है। प्रयोग की दृष्टि से सूर और रत्नाकर के क्रिया-पद अधिकतर संस्कृत तथा जनभाषा से प्रभावित हैं।

#### संस्कृत से प्रभावित -

प्राजत	(सू० १०।१७५।३)
निहारत	(गंगा० ७।१५।३)
चौरति	(सू० १०।२१९।७)
वहति	(उद्धव० २५।८)

०

#### जनभाषा से प्रभावित -

जनभाषा बहुत समय तक साहित्य की भाषा रही है। प्रत्येक साहित्यिक भाषा जनपदीय बोली से विकसित होती हुई साहित्यिक भाषा बन पाती है। जनपदीय बोली देहाती, गाँव के लोगों की बोली होती है। अतः यही जनभाषा कहलाती है। जनभाषा साहित्य के क्षेत्र तक पहुँचते-पहुँचते अपना स्वभाव तथा प्रभाव पूरी तरह से नहीं खोड़ पाती। कुछ न कुछ प्रभाव तो साहित्य पर जनभाषा कर रहा ही जाता है। इसी प्रकार सूर और रत्नाकर की भाषा पर जनभाषा का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। जैसे-

सोवत	(सू० १०।११७।२)
ल्यावत	(गंगा० १०।२४।३)
निचोवति	(सू० १०।११७।४)
गावती	(उद्धव० ६।४)
क्रौवत	(सू० १०।२१४।३)
जावती	(उद्धव० ६।८)



इसके अतिरिक्त भी रत्नाकर ने अपनी भाषा को जनप्रिय बनाने के लिए द्विया-पदों को अधिक से अधिक जनभाषा से प्रभावित करने का प्रयास किया है। संयुक्त द्विया-पदों में दोनों प्रयुक्त द्विया-पदों को इस प्रकार जोड़ दिया है कि सहायक द्विया-पद प्रत्यय मात्र लगता है। जैसे-

बाल जोगी रुक जाहगे ।

(शृ० ८८१।२)

बाप रतिक लुमाहगे ।

(शृ० ८९।४)

उक्त उदाहरणों में "जाह गए" तथा "लुमाह गए" को "जाहगे" तथा "लुमाहगे" बनाकर रत्नाकर जी ने अपनी विशेषता का परिचय दिया है। इस प्रकार के प्रयोग सूरकाव्य में नहीं मिलते हैं।

इस सबके अतिरिक्त सूर के द्विया-पदों पर अपभ्रंश का प्रभाव भी कहीं-कहीं दिखाई पड़ता है। जैसे-

सीस दस रावन बल्लटे ।

(सू० १।१८०।३)

०      ०      ०

सब दानव दहपट्टे ।

(सू० १।१८०।४)

०      ०      ०

जिहिं लज्जा का तज्जि पे ।

(सू० १०।१६४०।१८)

इस प्रकार के प्रयोग रत्नाकर काव्य में नहीं मिलते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों ही ब्रजभाषा के महान् कवि हैं। दोनों के काव्य को आधार बनाकर यदि ब्रजभाषा का व्याकरण लिखा जाय तो निश्चित ही एक उत्कृष्ट श्रेणी के व्याकरण की रक्षा हो सकती है।

### सहायक ग्रन्थों की सूची

ग्रंथ -

- १- उद्धव शतक, रमाशंकर शुक्ल रिसाल, प्रयाग, सन् १९६०, प्रथम संस्करण
- २- कविवर रत्नाकर, पं० कृष्णाशंकर शुक्ल, बनारस, संवत् २००७, द्वितीय संस्करण
- ३- ब्रजभाषा, डा० पीरैन्द्र वर्मा, इलाहाबाद, सन् १९५४, प्रथम संस्करण
- ४- ब्रजभाषा सूरकोश, डा० प्रेमनारायण टण्डन, सन् १९६२, प्रथम संस्करण
- ५- मानक हिन्दी व्याकरण, रामचन्द्र वर्मा, वाराणसी, संवत् २०१८, प्रथम संस्करण
- ६- रत्नाकर और उनका काव्य, उषा जायसवाल, वाराणसी, सन् १९५६, प्रथम संस्करण
- ७- रत्नाकर : उनकी प्रतिभा और कला, डा० विश्वमरणाथ मट्ट, नई दिल्ली, सन् १९५७, प्रथम संस्करण
- ८- रत्नाकर और उद्धव-शतक, डा० ललित शुक्ल, दिल्ली, सन् १९७१, प्रथम संस्करण
- ९- रत्नाकर का काव्य, ललित राय, दिल्ली सन् १९४३, प्रथम संस्करण
- १०- रत्नाकर की साहित्य-साधना, वानप्रसाद 'वर' पाठक, बागदा सन् १९६५, प्रथम संस्करण
- ११- हिन्दी व्याकरण, पं० कामता प्रसाद गुरू, काशी, सं० २०२९, दसवां पुनर्मुद्रण
- १२- हिन्दी शब्दानुशासन, पं० किशोरीदास बाजपेयी, संवत् २०१४, प्रथम संस्करण
- १३- सूर की भाषा, डा० प्रेमनारायण टण्डन, लखनऊ, सन् १९५७, प्रथम संस्करण

शोध-ग्रन्थ-

- ✓ १४- रत्नाकर की काव्य भाषा का शैली तात्त्विक अध्ययन, डा० प्रेमवल्लभ शर्मा, मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, सन् १९७४ में स्वीकृत ।